सहअस्तित्ववादी विज्ञान* (1999)

***विडियो से प्रतिलेखन**

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन

सहज

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

– ए. नागराज (प्रणेता एवं लेखक)

मध्यस्थ दर्शन सहज 'प्रवेश' पुस्तक

1. जीवन विद्या एक परिचय (प्रकाशित पुस्तक)
2. सहअस्तित्ववाद एक परिचय (संकलन) {PDF}
3. प्रारंभिक पाठमाला {PDF}
4. सत्संग (2005 प्रतिलेखन) {PDF}
5. मध्यस्थ दर्शन एक परिचय (1999 प्रतिलेखन) {PDF}
6. **सहअस्तित्ववादी विज्ञान (1999 प्रतिलेखन) {PDF}**
7. मूल तत्व अवलोकन (संकलन) {PDF}

PDF Download Link : dub.sh/parichay

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन, दिव्यपथ संस्थान

अमरकंटक, जिला - अनूपपुर (म.प्र.), भारत, 484886

www.divya-path.org

प्रणेता एवं लेखक :

ए. नागराज

सर्वाधिकार दिव्यपथ संस्थान के पास सुरक्षित

संस्करण: e-book PDF: 14 जनवरी 2026

प्रामाणिक वेबसाइट : www.madhyasth.org

प्रिंटेड पुस्तक प्राप्ति : purchase.madhyasth.org ; books@divya-path.org

सदुपयोग नीति:

यह प्रकाशन 'सर्वशुभ' के अर्थ में है और इसका कोई व्यापारिक उद्देश्य नहीं है। इसका उपयोग एवं नकल, निजी अध्ययन के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा किसी भी अर्थ में प्रयोग (नकल, मुद्रण, आदि) करने के लिए 'दिव्यपथ संस्थान', अमरकंटक, जिला अनुपपुर (म.प्र.) भारत - 484886 से पूर्व में लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है। यह अपेक्षित है की इन अवधारणाओं को दूसरी जगह प्रयोग करते समय इस ग्रंथ का पूर्ण उद्धरण (संदर्भ) दिया जाएगा। कृपया दर्शन की पवित्रता बनाये रखें।

इस संकलन के बारे

यह प्रतिलेखन पूज्य बाबा नागराजजी के 1999 में आँवरी आश्रम (छ.ग) के ऑडियो रिकॉर्ड से किया गया है। इसमें जिज्ञासुओं के साथ मध्यस्थ दर्शन का सामान्य परिचय एवं विज्ञान सम्बंधित चर्चा रही।

हम स्व. श्री राजन शर्माजी (नंदिनी) के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने 1999 में ही इस महत्वपूर्ण चर्चा को विडियो रिकॉर्ड करवाया।

यह पुस्तक श्रद्धेय नागराजजी के वीडियो रिकॉर्ड का प्रतिलेखन है। पाठकों को ध्यानाकर्षण है कि पढ़ते समय अर्थ पर संदेह होने पर प्रकाशित ग्रंथों को माना जाए।

पाठकों के सुविधा हेतु प्रत्येक विषय-वस्तु के साथ सम्बंधित विडियो का लिंक दिया गया है।
कुछ स्थलों पर ऑडियो एवं विडियो में मेल नहीं है (Mismatch)। प्रत्येक अध्याय के साथ उससे सम्बंधित YouTube फाइल की लिंक भी दिया गया है, ताकि पाठकों को पढने-देखने में सुविधा हो।

Youtube channel name: Madhyasth Darshan Originals - A. Nagraj
Playlist name: Sah Astitvavadi Vigyaan_1999

जिम्मेदारियां:

ऑडियो से प्रतिलेखन: शालू अग्रवाल, निताशा त्यागी, शिल्पा गर्ग, ओमप्रकाश गुमास्ता, अमोल यादव, नीरू पूरी, हिमांशु पस्तागिया । **संकलन:** श्रीराम नरसिम्हन

सुधार संपर्क
books@divya-path.org

अनुक्रमणिका

1. इकाई में भार 8
2. भार एवं बल – 1 10
3. भार एवं बल – 2 12
4. परमाणु में बल 16
5. वास्तुशास्त्र, ऊर्जा, चुम्बकीय बल 19
6. आकर्षण, प्रत्याकर्षण और गति 33
7. प्रकाश एवं ताप 38
8. रश्मि और ताप 46
9. किरण, विकिरण, तरंग, प्रतिबिम्ब 48
10. पदार्थ का ऊर्जा में रूपांतरण प्रतिबिम्ब 53
11. ज्योतिष शास्त्र एवं किरणें 56
12. ध्वनि और रंग 66
13. ज्वार भाटा और विद्युत 70
14. ज्वारभाटा और पूर्णिमा का प्रभाव 75
15. पूर्णिमा – अमावस्या का प्रभाव 80
16. मध्यस्थ दर्शन एवं चिकित्सा विज्ञान 84
17. Darwin का विकासवाद 87
18. देसी गाय और संकर गाय 89
19. गाय का दूध और यांत्रिक शक्ति 91
20. गोमूत्र औषधि 93
21. Cloning एवं संतान उत्पत्ति 94
22. टिकाऊ खेती 96

1. इकाई में भार

विडिओ संदर्भ देखें: *video 8, time 25:01-35:05*

प्रश्न : वस्तु के रूप में मात्रा, भार, आकर्षण बल, विकर्षण बल और प्रत्याकर्षण बल क्या है?

उत्तर : ये बहुत अच्छी chapter है। उत्तर की आवश्यकता होना चाहिए, आवश्यकता के आधार पर उत्तर होगी। आवश्यकता नहीं तो उत्तर कायकी? उस आधार पर हम कुछ बातों को आवश्यकता के कक्ष में हमको नहीं महसूस होने से कुछ बातों को हमने नहीं देखा है। क्या देखने की ज़रूरत नहीं पड़ा? परमाणुओं की संख्याओं को गिनने की। ये जरूर है, परमाणुओं का प्रजातियाँ सही है, परमाणुओं का क्रिया सही है, स्थितियाँ बहुत सुस्पष्ट है, इससे चारों अवस्थाएँ कैसा घटित होती है, घटित हुआ है, इसमें हम सुस्पष्ट हैं, तो सहअस्तित्व की वैभव है ये। ये भाग में हमको बहुत अच्छा लगा और दूसरा ये बहुत अच्छी भाग है। भार को पहले समझ लीजिए।

परमाणु में भार का जो भाग है, वो मध्यांश ही है। वो मध्यांश के चलते अणु बंधन में आता है, अणु बंधन में आ करके अणुऐं जितना पास में हो पाते हैं, कितना दूर-दूर में रह करके एक ढेमा बनते हैं, एक बहुत भारी आकार बन जाते हैं, ये सब अलग-अलग बनता है। आप झाड़-पौधे में भी देखेगें, बहुत ठोस लकड़ी भी होता है, बहुत हल्की लकड़ी भी होती है, उसका रचना में porosity ज्यादा रहता है। एक अणु दूसरे अणु के बीच में दूरियाँ ज्यादा रहता है, ये ही porosity है। क्या बात है, क्या बात है! इसको आप लोग spectrum कहते हैं, अणुओं के परस्परता में जो तानाबाना को। तानाबाना एक दूसरे से थोड़ा सा दूर रहने से बीच में क्या चीज़ रहेगी? यही सत्ता, दूसरा कोई नहीं और दूसरे में कम जगह रहता है, वो दूरी कम रहता है, इसके बावजूद भी अलग होने के स्थिति में ही रहते हैं ये सब। इसी विधि से विखंडन सफल हुआ।

विखंडन विधि जो मनुष्य को हाथ लगी, जो बच्चों के लिए परिकल्पना आती है विखंडित करने का, वो कल्पना सार्थक हो गई। उससे जो उपकार हुआ, उपकर हुआ, जो अपकार हुआ, अपकार हुआ, दोनों घटित हो चुका है, उसके बारे में आप और हम कुछ नहीं कर पायेंगे। दोनों demarcated हैं। आगे दुर्घटना के स्थान पर सद्घटना के साथ हम चलने की आवश्यकता है, चाहे विज्ञानी हो, विज्ञानियों का विज्ञानी हो। उनकों भी ऐसे ही आवश्यकता है। इस बात में हम बहुत स्पष्ट हैं।अभी भार का जो आधार है परमाणुओं का मध्यांश। परमाणुओं से रचित रचना का भार, परस्परता की बात, एक बड़े रचना, छोटे रचना। जैसे ये धरती सबसे बड़ा रचना और हर पत्थर कंकड़ छोटे रचना, इस धरती के साथ भार का प्रदर्शन करता है। इकाई का परस्परता में भार, एक बड़ी चीज़, एक छोटे चीज़। उसका ज्वलंत उदाहरण धरती, धरती में जितने भी वस्तु है, वो सब धरती से छोटे हैं। धरती के आधार पर ये हर छोटे वस्तु अपना भार प्रदर्शन करते हैं। जबकि धरती शून्याकर्षण में है। ये धरती space में तैर रहा है कि उसमें खम्बा लगा रखे हो? स्पेस मे तैर रहा है।

प्रश्न : इसमें सूत्र है कि व्यापक और इकाई के परस्परता में भार नहीं है? ये क्या है?

उत्तर : इकाई अपने गति सहित शून्याकर्षण में स्थित हो जाता है, पहुँच जाए, रह जाए, हो जाए, 3 phrase है इसका। ये 3 phrase में शून्याकर्षण में रहता है वस्तु, उसका गति उस समय में जैसा रहता है, उसी गति उसका निरंतरता को प्राप्त करता है। उस गति के लिए ईंधन की जरूरत नहीं है। इकाई + गति + शून्याकर्षण सिद्धान्त से होता है। अभी वो कैसा घटित हो रहा है? जैसा जितने भी अभी satellites भेजे हैं, यहाँ से भेजते समय में आप ईंधन देते हो, उसमें एक गति भी बनाए रखते हो, उस गति से शून्याकर्षण में जा करके पदस्थ हो जाता है। वो गति की निरंतरता बन जाती है, कोई ईंधन की व्यय उसमें होता नहीं, गति के लिए। अब रह गया, आपका आदान-प्रदान के लिए जो चाहिए था ईंधन वो सूर्य से मिलता रहता है। इस ढ़ंग से व्यवस्था है। सूर्य से मिलने वाला ईंधन है, उष्मा है, वो शून्याकर्षण में रहने वाले हर वस्तु को मिलता ही रहता है, उसी प्रकार ये धरती को भी मिल रहा है। धरती स्वयं में बहुत बड़ा satellite है, एक बहुत बड़ा आकाशयान है और बहुत बड़ी भारी aeroplane है। ये इसमें 700 करोड़ आदमी को बता रहे हैं, अभी 600 करोड़ आदमी को बता रहें हैं और आगे चल करके और भी थोड़ा सा ज़्यादा हो गया तो आश्चर्य नहीं है, ऐसे यान में आप हम सब अवस्थित हैं। जब हम अपने पर विश्वास नहीं रखते हैं, इसीलिए हम जहाँ रहते हैं, उस पर विश्वास नहीं रखते हैं।

इकाई ऊर्जा सम्पन्न, बल सम्पन्न, चुम्बकीय बल सम्पन्न। चुम्बकीय बल सम्पन्नता का क्या मतलब? रचना के रूप में चुम्बकीय बल सम्पन्नता का प्रतिष्ठा अपने आप में वैभवित है। आप छोटे से वस्तु लो वो भी एक रचना, बड़े से बड़े वस्तु ले लो तो भी एक रचना है। उसके लिए मिसाल दिया ये धरती बड़े से बड़े रचना है, इसको आप भी सहमत हैं, हम भी सहमत हैं, आप हम सब सहमत हैं। बड़े से बड़े रचना में जितने भी छोटे रचना रहते हैं, बड़े रचना के अपेक्षा में ये अपने भार को व्यक्त करते हैं। आपके समक्ष हम कितना भार हैं, इसको प्रस्तुत करते हैं। क्या बात है! उसको हम तोलते हैं।

प्रश्न : धरती पर जो भार नापने का तराजू है, उसका reference धरती है?

उत्तर : धरती है, उसका आधार धरती है। ठीक हो गए, और जब भार प्रदर्शन का मापदण्ड की बात आती है, मापदण्ड बनाने वाला आदमी, आदमी के बिना मापदण्ड कोई नहीं बनाता। आप मापदण्ड नहीं भी बनाइयें, भार प्रदर्शन रहता ही है।

प्रश्न : ये जो भार प्रदर्शन है, ये हर इकाई अपने जैसे इकाईयों के तरफ आकर्षित हो रही है, इकाई का परस्परता में भार को कैसे व्यक्त करते हैं?

उत्तर : भार प्रदर्शन, एक बड़े इकाई के साथ रहने वाले जितने भी छोटी इकाइयाँ हैं, भौतिक रासायनिक इकाइयाँ, वो अपना भार प्रदर्शन किए रहते हैं। ये बड़े चीज़ के साथ होने वाली सम्मान का प्रदर्शन है। उसका सूत्र है, ठोस, ठोस के साथ, विरल, विरल के साथ, तरल, तरल के साथ सहअस्तित्व में होना अपना वैभव स्वीकारा है। इसको सम्मान हम शब्द देते हैं, आपको क्या तकलीफ है? हमारा जो सारा शब्द विनियोजन ऐसा है, मनुष्य जो है ना अपने में विश्वास के प्रति विश्वास हासिल करें। ये अस्तित्व में हर जगह विश्वास व्यवस्था में ही है। इस पर विश्वास करें। सुख पूर्वक जिए। ये हमारा उद्देश्य है, ये उद्देश्य के अर्थ में हम सबको नाम दे रखा है। अब तो सराहना करो, करो।

2. भार एवं बल - 1

विडिओ संदर्भ देखें: *video 7, time 28:20-36:56*

मुख्य मुद्दा ये रहा – जो तरल, विरल और ठोस पदार्थ सहअस्तित्व में अपने वैभव को निरंतर प्रकाशित करना चाहते हैं, इस बात पर अपन आ गए। भार का प्रदर्शन कैसा होता है, ये भी आप को बताया। ये धरती में जितने भी छोटे–छोटे रचनाएँ हैं – पत्थर, कंकड़, लकड़ी, पानी,पिंगर – सब कुछ – वो अपने भार को इसी विधि से प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि तरल तरल के साथ रहना चाहते हैं। इस कारण से वो अपने भार को उसी सहअस्तित्व की बिल्कुल सूत्र से सूत्रित हो कर भार को व्यक्त करते हैं। भार को कैसे व्यक्त करते हैं? सहअस्तित्व सूत्र से सूत्रित हो कर अपने भार को व्यक्त करते हैं। जिसको आप हम तोल कहते हैं। ऐसा आप करते ही हो। उसी भाँति ऊपर से कोई चीज़ गिरता है, वो ठोस ठोस के साथ ही, माने सहअस्तित्व में होने के लिए, दौड़ के आता है, प्यार से। उसी भाँति तरल तरल वस्तु के साथ होने के लिए सहअस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ऊपर से नीचे आता है। आप इसको जानते हो ढ़ाल के ओर पानी जाता है। काए को जाता है पानी? पानी के पास जाने के लिए पानी जाता है – इतना बात तो मूर्खों को भी समझ में आता है।

तो इसी भाँति और एक अचरज की बात है, कितने भी 200 फुट, 400 फुट, 500 फुट नीचे कोई भी विरल वस्तु को उत्पादित करें, वो आपका किसी का बात नहीं मानेगा, वो ऊपर ही जाएगा। आपके पास ऐसा कोई भी औकात नहीं है, तमीज़ नहीं है –उसमें भार नहीं है, ऐसा बताने का। विज्ञान संसार के पास ऐसा कोई तमीज़ नहीं है बताने का, विरल वस्तु में भार नहीं हैं। भार रहता ही है, क्योंकि वो अणु समूह ही है, उसमें भार होता ही है। वो भार क्या चीज़ है? विरल वस्तु के साथ विरल वस्तु सहअस्तित्व को प्रकाशित करता है। वो प्रसन्नता का व्यक्त करता हे।क्या प्रसन्नता? व्यवस्था में भागीदारी की प्रसन्नता है। एक परमाणु में भी यही ध्वनि निकलती है, वो व्यवस्था में ही सभी वस्तु आश्वस्त होना चाहते हैं,अपने प्रकाशमानता को निरंतर बुलंद बनाए रखना चाहते हैं, ये बात ऐसी है।

उससे अपने को ये प्रेरणा मिलती है, मनुष्य को भी व्यवस्था में जीने की जरूरत है। अभी तक मनुष्य व्यवस्था में जिया नहीं, ये बात सही है। उसका प्रमाण यही है, मनुष्य जितना भी किया है, आबादी से बरबादी ज्यादा किया। एक ही बात में आबादी दिखाई पड़ती है, जनसंख्या वृद्धि। बाकि सब करतूत बरबादी की ज्यादा है, आबादी की कम है। आबादी में और क्या दिखा? दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन, जो यंत्र तंत्र हमको हासिल हो गया। ये एक आबादी है, बाक़ी सब बर्बादी है। ऐसा देखने को मिला।ठीक है यदि ठीक से ये मन में आता है, हमको ये पीड़ा होना चाहिए कि हम व्यवस्था को पहचानें, व्यवस्था में जीवें, व्यवस्था में प्रमाणित होवें, हम सुख पूर्वक जीने के लिए दूसरों को सुखी बनाने की आवश्यकता है, इस बात को निश्चयन करें। यही एक सुखद रस्ता का आसार बनता है। ऐसा मैंने देखा है, मैं समझा है, हम जीने का उपक्रम में हम समाज व्यवस्था में ही जीता हूँ। मैं अपने में प्रमाणित हूँ। बाक़ी प्रमाणित होना चाहते हैं, नहीं चाहते हैं, इसका तो आप ही निश्चय करोगे।

ये बात कुल मिला करके जिसको हम भार कहते हैं, गुरूत्वाकर्षण कहते हैं, ये सब का व्याख्या क्या है? यदि सकारात्मक पक्ष में हम सोचते हैं तो? व्यवस्था में प्रकाशित होने की ही प्रणाली में ये सब प्रदर्शन है। जैसा ऊपर से

नीचे वस्तु आना ऊपर से कोई चीज फेकनें के लिए हम कोई बल को लगाते हैं, वो बल किसी ना किसी दूर में जाकर शून्य हो जाता है। शून्य होने के बाद उतने ही बल को पुनः जहाँ से फेके थे,वहाँ आ करके उतना ही बल को पुनः प्रदर्शित कर देता है। ये स्वाभाविक क्रिया है। वियोग के लिए जो बल मिली, सहयोग के लिए उतना ही बल मिली। हरि हर। जय हो, मंगल हो, कल्याण हो।

धरती से वियोग के लिए जितना बल प्रयोग किया, उतना ही बल पुनः उपार्जित कर वो वस्तु प्रदर्शित करके संयोग के लिए बल प्रदर्शन कर दिया। इस ढंग की ये विन्यास है, इन विन्यासों को यदि हम अपने मनगढ़ंत बरबादी के लिए व्याख्यायित करते हैं, हम क्या हैं – कितना विज्ञानी, ज्ञानी, क्या है आप ही सोच लीजिए। मूल्याकंन करिए, संसार को मार्गदर्शन करिए। संसार को सही पथ को प्रदर्शित कराईए। यही बनता है। सभी अच्छे व्यक्ति के साथ तो इतना ही बनता है। तो इसी क्रम में ये कार्यक्रम है। ये तो हुआ भार का बात। भार के बाद क्या होता है मूलतः भार का दो सूत्र लगती है इसमें। प्रत्येक इकाई में चुम्बकीय बल सम्पन्नता है ही। ये परस्परता में चुम्बकीय धारा बनती है। आकर्षण, ऋणाकर्षण, और धनाकर्षण में ये प्रदर्शन होता है। धनाकर्षण में प्रदर्शन करता है जो भाग, उसमें भार प्रदर्शन आ जाता है। ऋणाकर्षण में जो अपना स्थिति को प्रदर्शित करता है, उसमें भार प्रदर्शित होता नहीं है। उसका भार प्रदर्शन के लिए उसका कोई होना चाहिए ऋणाकर्षण वाला, ये धनाकर्षण के स्थिति में होना चाहिए, तब जा करके वो अपना भार को प्रदर्शित कर देता है। दूसरे विधि से ऐसा सोचा जा सकता है।

तो इसमें ये देखा गया, जो अभी एक बहुत अच्छी बात कहें थे, विरल पदार्थ के रूप में धरती के अंदर दो हज़ार feet नीचे से प्राकृतिक gas ऊपर जाता हुआ हम देखते ही हैं, सुनते ही हैं, ये सारा बात हो ही रहा है स्वाभाविक रूप में। ऊपर जाते हुए भी प्राकृतिक गैस में भार नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। भार रहता ही है। गुरुत्वाकर्षण की बात ना हो करके सहअस्तित्व विधि से ही व्याख्यायित होता है ये। हाँ अनुबंधन के रूप में ही ये बात है तो अनुबंधन की विधि दूसरा प्रकार से हम बताएंगे। एक बात तो हो गया सहअस्तित्व विधि से ठोस ठोस के साथ, विरल विरल के साथ, तरल तरल के साथ, अपने वैभव को प्रदर्शित करने के लिए दौड़ते हैं। आप कोई बल लगाइये चाहे ना लगाइये। बात पूरा हो गया सहअस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए जो दौड़ता है, उसी गति को हम अवरोध करने पर वो भार में हमको मिल जाता है, भार के गणना में मिलता है। दौड़ने वाला वस्तु को हम कहीं भी रोक लेते हैं, वो भार प्रदर्शन वहाँ होता है।

3. भार एवं बल - 2

विडिओ संदर्भ देखें: *video 8, time 51:50-1:11:47*

प्रश्न : अभी ये आकर्षण बल, विकर्षण बल, प्रत्याकर्षण बल को परिभाषित कर दीजिए?

उत्तर : आकर्षण बल के बारे में बताया, दो चुम्बकीय वस्तु को आमने-सामने रखने पर एक दूसरे के पास आता है, उसका नाम है आकर्षण बल। ऋणाकर्षण, धनाकर्षण भेदों से कुल मिला करके एक दूसरे के पास आ जाते हैं, इसको आकर्षण बल हम कह रहे हैं। उसी को हम एक अणु के पास ले जाते हैं, कई परमाणुऐं एक अणु के साथ जुड़ते हैं, वो आकर्षण बल से ही जुड़ते हैं। विकर्षण बल ये चीज़ होती है, जैसा जितना ताकत से वो एक जगह में जुड़ते रहे, उससे ज्यादा ताकत से दूर ले जाने वाले कार्य को हम विकर्षण बल कहते हैं। जितना ताक़त से जोड़ने की बल लगी हुई है, उससे अधिक लगा करके उसको अलग फैलाने वाली जो कार्य है उसको हम विकर्षण बल कहते हैं।

प्रश्न : क्या विकर्षण बल आरोपित है? जितना निश्चित दूरी में रह सकते हैं, उससे ज्यादा नज़दीक करने पर आकर्षण बल बढ़ा, विकर्षण हुआ ऐसा कहेगें?

उत्तर : वो आकर्षण बल बढ़ा, उसका विकर्षण से अच्छी दूरी में प्रतिष्ठित होते है। विकर्षण बल की प्रयोग होता है माने पास में आने से विकर्षण बल की प्रयोग होता है।

प्रत्याकर्षण का मतलब बताइए

उत्तर : प्रत्याकर्षण का मतलब ये होता है, एक बार विकर्षित हो चुकी थी, उसकों पुनः आकर्षण में परिवर्तित हो करके किसी के साथ सहअस्तित्व को प्रमाणित करना। ये प्रत्याकर्षण की मतलब है। जैसा कोई चीज़ को हम विकर्षित कर दिया, वो विकर्षित होने के पश्चात कोई चीज़ दूर चला गया, दूर चले जाने के बाद किसी दूसरा विधि उसके ऊपर आरोपित होने के फलस्वरूप पुनः आकर्षण की क्रिया में आरूढ़ हो गया, उसी वस्तु का, तब उसको प्रत्याकर्षण कहते हैं। प्रत्याकर्षण जो है, परिस्थितियाँ बदलते रहते हैं - वातावरण से, स्वयं की क्रिया से, स्वयं के आचरण से - परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। आचरण भी अपने परिस्थिति को बदलता है, वातावरण भी परिस्थितियों को बदलने में सहायक होता है। इन दोनों का योगफल में कोई एक ऐसा स्थिति बनती है, जो विकर्षित होने के लिए, भाजक हो गया था जो वस्तु, वो पुनः आकर्षण के साथ अपने सही स्थली में पहुँचने के लिए बाध्य हो जाता है, इसको प्रत्याकर्षण कहते हैं। जैसा एक परमाणु से कोई एक अंश भाग गया, छूट के भाग गया, थोड़ा देर के बाद पता चला, वो अंश घूम फिर करके उसी परमाणु में आ गया, ये प्रत्याकर्षण बल है। जैसे में आप के पास आया आकर्षण हुआ फिर में भाग गया पुना में आपके पास आ गया। ये प्रत्याकर्षण हुआ, आरोपित बल और स्वयं स्फूर्त बल, दो बात पर विचार किया जाए।

प्रश्न : विज्ञान में विकर्षण को ही प्रत्याकर्षण कहते हैं और आकर्षण अलग चीज़ है, ऐसा दो ही चीज़ है, तीन नहीं हैं।

उत्तर : आप दो ही मानतें हो तो उसमें भी कोई जड़ नहीं चले जाता, जड़ उतना ही है। अभी जो शब्द का प्रयोग करते हैं, उसका अर्थ संगत विधि से हमने प्रस्तुत किया, वो वस्तु के रूप में कैसा, क्रिया के रूप में कैसा, आचरण के रूप में कैसा काम करता है, उसकी ओर हमारा दृष्टिपात है। उस विधि से हमने बता दिया। अच्छा आपका मानने में हम कोई हस्तक्षेप करने वाले नहीं हैं, आप कुछ भी मान लीजिए। आप पूछेगें जिस शब्द के आधार पर वस्तु को, उसको हम इंगित कराएगें।

भारबंधन से अणुबंधन : भार होने के आधार पर ही अणुबंधन में आता है, हर एक परमाणु। परमाणु में भार रहता है, वो भार एक प्रकार से परमाणुओं को बांधने का काम किया रहता है। वो एक अनुबंधित करके रखता है। इसको बनाए रखना है, इतने भार को, इसका नाम है भार बंधन। तभी मध्य में जखीरा बनता है, भार के लिए। उसको बनाए रखना है, आश्रित परमाणु, जो चारों तरफ घूमते हैं, उनका भी उस में भागीदारी है। बीच में काम करते रहते हैं, उनका भी भागीदारी हैं। इन पूरे परमाणु का भागीदारी है, वो भार को बनाए रखना। परमाणु गठन होने का नाम ही है भारबंधन। ऐसा, बस खतम हो गयी बात।

प्रश्न : भारबंधन को फिर से परिभाषित करना चाहिए क्योंकि इससे पहले जो आशय जा रहा था, जब हम किसी वस्तु को रोक रहे हैं, उसको अपनी जो स्थिति बनने वाली थी उससे, जैसे ठोस पदार्थ को धरती में पहुँचने से रोक रहे हैं, उस समय जो आपको बल लगाना पड़ा, उसको भार कहा गया। जो आप अभी भार कह रहे हैं, उसको ठीक से परिभाषित होना चाहिए।

उत्तर : दोनों में result एक ही मिलता है, इसको थोड़ा ध्यान से समझाने की बात है। अभी अपन परमाणु की बात कर रहे हैं, पिंड की बात नहीं कर रहे हैं। पिंड की क्रियाकलापों को हम जितना आसानी से समझ पाते हैं, उतना आसानी से परमाणुओं के क्रियाकलापों को समझने के लिए थोड़ा सा और ज़्यादा महीन बुद्धि लगाना पड़ेगा, ऐसा मुझको लगता है। परमाणु में तो अपन मान लिए हैं, आप हम सब ये समझे हैं, मध्य में अंश होता है, उसके चारों तरफ चक्कर लगाने वाले अंश होते हैं। अब ये भी हम माने हैं, चक्कर लगाने वाले हैं, उनमें कोई भार होता नहीं। अब भार का बात कहाँ है पूछा? मध्य में जो जकीरा बना रहता है, यही भार का द्रव्य है। बंधन कैसा हो गया पूछा? इन भार को बनाए रखने के लिए सारा चक्कर लगाए रहते हैं।

ये चक्री घूमता है काय के लिए पूछा? ये भार को बनाए रखो। परमाणु के अर्थ में यही भार बंधन हैं, भार के साथ ये सभी परिवेष में घूमने वाले अंश हैं, वो सब अनुबंधित रहते हैं। इसको बनाए रखना। जब कभी ये बनाए रखने में कमज़ोरी करते हैं, बीच वाला पुनः बनाए रखने के लिए training देता है। इतनी तो बात है, छोटी सी बात! इतनी तो कथा है, इस कथा के अनुसार परमाणु में भार बंधन होता है, अपन स्वीकार सकते हैं। एक तो ये बात हुई।

उसके बाद अणु बंधन की बात आती है। ऐसे भार बंधन से सम्पन्न परमाणुऐं एक जगह में होते हैं, उसको अणु बंधन कहते हैं, अणुबंधन का मतलब क्या है? यह भार सब एकत्रित हो गये, 1, 2, 3, 4, दस हजार, करोड़, अरब परमाणुओं का भार एक जगह में हो गया, उसका नाम है अणुबंधन। अणुबंधन में भार बंधन जो थी, उसको पहचानने के लिए हम भौतिक तुला को बनाना, इतना आसान नहीं। वो गणित से ही उसके भार को लाना पड़ेगा, मेरे अनुसार। कोई ना कोई cube square में कितने परमाणु हो सकते हैं? पहले वो measurement, कितना अंश के परमाणु

में कितना भार, एक square foot को तोलने पर जितना आता है, उतने संख्या में बाँट देना, इस गणित से हम एक तालिका बना सकते हैं। उसके लिए भौतिक तुला बना करके तोल दो कहोगे, परमाणु तोलने में नहीं आएगा। अणु और अणु रचित कोई ना कोई पिंड तोलने में मिलेगा। व्यवहार में जो हमको मिलता है, वो परमाणु के बाद की कई अवस्था को नाकने के बाद ही हमको व्यवहृत होने के लिए वस्तु मिलता है, ये बात को हम विश्वास करना चाहिए और होता इतना ही है। से अणु बंधन से भार बंधन का अनुमान होता है। वास्तविकता में होता क्या है? वो भार बंधन से ही अणु बंधन प्रमाणित रहता है। ये बात सच्चाई है। रहता ऐसा है, हम गणना ऐसा करते हैं, ऐसा सोचना चाहिए। ये साधारण है शायद। इसमें कोई ख़ास प्रतिकूलता भी हमको नहीं दिखता है। होने को हम आपके पैर से सिर तक नाप लिया,या सिर से पैर तक नाप लिया, तो क्या बुरा हुआ? दोनों में से हमको एक ही मिल रहा है result।

प्रश्न : एक-एक परमाणु में भार बंधन, उसके कारण अणुबंधन है परस्पर्ता में, उसके कारण पिंड बनता है। अगर हमको भार बंधन को नापना है, हम पूरे भार को नाप लेंगे। उस पिंड में कितने परमाणु है, उसका संख्या का अनुमान लगाएगें। उसके आधार पर भारबंधन को नाप लेंगें।एक तो ये क्रम, दूसरा जो भार का concept अभी देखते हैं, वो यह है, कि 2 परमाणु या अणु या अणु रचनाएँ आपस में मिलकर एक गठन बना रहे हैं। उस गठन की एक निश्चित दूरी है। उस दूरी को आप बनने से रोकते हैं, उस समय जो बल आपको लगाना पड़ता है, उसको भार के रूप में परिभाषित किया जाता है।

उत्तर : ठीक है, ये तो तराजू की बात में आ गया। ये बहुत जो है ना, ऊपर आकर के बहुत स्थूल रूप में इसको हम ऐसा पहचानते हैं। सूक्ष्म रूप में, गणितीय रूप में पहचानते हैं। Actual अस्तित्व में होता है, उसको भार बंधन को परमाणु में पहचानते हैं।

प्रश्न : व्यवहार क्रम में जो भार है, वो second वाला है, तात्विक क्रम में जो भार है, वो भार बंधन है।

उत्तर : यही बनता है, यदि सद्बुद्धि से सोचा जाए। Root पूरा इसी में हो पाता है। अणु रचना में भी ताना-बाना बनता होगा। एक दूसरे परमाणुऐं जुड़ने की प्रक्रिया को आप कोई नाम देते हैं। ठीक है वो, दीजिए ना। अणु रचना होता ही है, ये बात सही है। अणु से रचित रचनाएँ होते हैं, ये बात सही है। इसके बारे में क्या तकलीफ़ है?

भार को हम पहचानने की विधि यही हैं, जैसे एक परमाणु का भार को पहचानने के लिये, परमाणु को कोई भौतिक तुला से तोला नहीं जा सकता। वो गणितीय विधि से ही होगी। उसमें ये ही युक्ति है, कोई भी एक छोटे से cube, उसमें से कितने परमाणु हो सकता है, उसको गणितीय गणना। उतने भाग में उतने cube की तोल को बाँट लेना, ये ही तो परमाणुओं का तोल है।और कौन सा तोल निकलोगे? ये ही तोल निकलोगे। गणितीय विधि से वहाँ निकाला। यहाँ तराज़ू से तोल करके हम तोल निकाल लिया। परमाणु का जो तोल है, वो ही उसका भार है।

भार बंधन के बारे में आपको समझाया ना, पूरा परमाणु में जितने भी अंश हैं, उसको संरक्षित करके रखे हैं। भार बंधन का मतलब वो पूरा परमाणु का उद्देश्य उसको बनाए रखना। इसका नाम है भार बंधन। वो भार के रूप में हमको गणित से मिलता है। उसके बाद धरती से पुनः आता है, जैसे हर वस्तु ठोस-ठोस के साथ, विरल-विरल के साथ, तरल-तरल के साथ, सहअस्तित्व में होना रहता है, उसको बीच में रोकिये, उसका भार निकलता है, ये आ गई। वो ही

विधि से जितने भी gases का भार है, आपको वैसा मिल रहा है। पानी का तो भार मिलता ही है, वो पत्थर, कंकड़ का भार मिलता ही है।

प्रश्न : गैस वाली जो बात है, उसका भार के संदर्भ में पुनः विचार करना पड़ेगा, क्योंकि अब तक जो गैस के भार का concept है, वो इसके साथ ठीक नहीं बैठेगा। Hydrogen के balloon को हम measure करने जाएंगे तो negative weight देगा। हम यदि उसको इस तरह से परिभाषित करते है कि जिस स्थिति में उसका होना बनता हैं, उसके होने में रोकने में जितना हमको बल लगाना पड़ता है वो भार है, तो positive में आएगा, negative भार तो हो नहीं सकता।

उत्तर : किसी भी सहअस्तित्व को अवरोध करने के लिए जो बल लगता है, वो अपने को count करने में आ जाएगी। जैसा अभी जो है, cylinder में LPG आती है। उसमें 15 kilo लिखे रहता है, 10 kilo लिखा रहता है, 20 kilo लिखा रहता है, कुछ भी kilo लिखा रहता है। वो खाली cylinder में भरने के बाद तोलने पर जो मिलता है, उसको वो लिखे रहते हैं।

प्रश्न : उसको अगर हम अणु बंधन के आधार पर परिभाषित करें, तो विरल के साथ होने में जो प्रवृत्ति है, उसको रोकने में हम जितना बल लगाएंगे, उसको भार कहते है, तो फिर गैस के भार को भी ठीक से परिभाषित कर पायेंगे।

उत्तर : वो ठीक है ना, क्या आपत्ति हुआ? बढ़िया हो गया, और परिष्कृत हो गया।

4. परमाणु में बल

विडिओ संदर्भ देखें: *video 8, time 35:06-51:50*

अभी धनाकर्षण, ऋणाकर्षण की बात से शुरू किए थे। आप इस बात को एक स्पष्ट रूप में देख सकें, इसका एक नज़ीर बताए थे। चुम्बकीय पत्थर को अथवा लोहा को लेकर हम कुछ दूर में रखने से, यदि वो छोटा-बड़ा रहने से, उस स्थिति में, एक में धनाकर्षण एक में ऋणाकर्षण प्रभावित होता है। ऋणाकर्षण जो रहता है, वो वस्तु स्थिर हो जाता है, वहीं रहता है। धनाकर्षण जिस में हुआ रहता है, वो धीरे-धीरे सरक करके उसमें जा के चिपक जाता है। आप कहीं भी दो चुम्बकीय पत्थरों को प्रयोग करके देख लीजिए। आपको भी दिखेगा, मुझको भी दिखेगा, जो थोड़ा सा अंधरा हुआ रहता है, उसको भी दिखेगा।आंध्र को बताओगे तो उसको भी समझ में आएगा। चुम्बकीय बल दो आपस के बीच में अपना धार बनाता है, उसमें कोई आवेश नहीं रहता।

प्रश्न :धार वस्तु के रूप में क्या हैं?

उत्तर : धार क्या चीज़ है? उसका प्रभाव क्षेत्र है, चुम्बकीय बल का प्रभाव क्षेत्र को हम धार कह रहे हैं। ये गति नहीं हैं, स्थिति है, प्रभाव क्षेत्र है। ये प्रभाव ही अभी जितने भी dynamo होते हैं, उसके आपस में सीधाई में जितने भी चुम्बकीय chips लगे रहते हैं, वो एक दूसरे के बीच में धार बना के रखते हैं। उसको घूमा करके हम काटते हैं। काट करके किसी अनुपात में काटने के बाद वो विद्युत प्रवाह के रूप में हमको मिलता है। ये ही विधि है, वो धार स्वयं में स्थिति है, वो गति नहीं है। ना आवेश है, उसमें दो विषम चीज़ माने छोटा-बड़ा, आमने-सामने चुम्बकीय वस्तु को रखने से छोटा वस्तु, बड़े वस्तु की ओर दौड़ जाता है। उसका नाम है धनाकर्षण। वो आकर्षण बल ही धनाकर्षण के रूप में परिवर्तित हो कर किसी के पास योग को प्राप्त कर लिया। दूसरे वस्तु ऋणाकर्षण में था, वो अपने जगह में स्थिर था, वो स्थिर वस्तु के पास दौड़ा हुआ वस्तु जा करके संयोग को प्राप्त कर लेता है। ये चीज़ को आप हम देखते ही हैं। इसको अच्छी तरह से समझने की ज़रूरत है। इसमें धनाकर्षण, ऋणाकर्षण कोई आवेश नहीं है। धनाकर्षण, ऋणाकर्षण की धार है वो, चुम्बकीय धार के आधार पर है इसमें।

प्रश्न :क्या कह सकते हैं, जो छोटा है, बड़े वाले की तरफ आकर्षित हो जाता है। ये आकर्षित हो जाने के आधार पर हम जिसके तरफ आकर्षित होता है, उसको ऋण में कहते हैं, जो आकर्षित हो जाता है, उसको धन में कहते हैं।

उत्तर : ठीक हैं ना, वो ही मैं भी कह रहा हूँ, आपके कहने में मेरे कहने में कोई अंतर नहीं है। जो स्थिर रहता है, ऋण में रहता है, जो दौड़ के आता है, वो धन में रहता है। ऐसा मैं कहा हूँ, ये ही चीज़ आप कह रहे हो। एक दूसरे के साथ सहअस्तित्व में ही पूरा का पूरा उत्सवित होता है, सहअस्तित्व में सभी उत्सवित होतें हैं। बात यहाँ है ये। वो जो प्रदर्शन है, वो भी सहअस्तित्व का ही प्रदर्शन है, सजातीय सहअस्तित्व का। उसमें भी लघु गुरू का बात है ही। किंतु चुम्बकीय दो पत्थर का जो relation है, वो चीज़ सजातीयता के आधार पर ये आचरण को हम देखते हैं। जबकि धरती के साथ कैसा है? सभी जात धरती में है ही है, कोई ना कोई जात ऊपर है, वो जात नीचे आता है। इसको कैसा व्याख्या करोगे? क्या धरती से वस्तु तक की चुम्बकीय धार बनी है? इसको आपसे पूछा जाए, उसको प्रमाणित करने

का औकात अभी तक तो आदमी जात के पास नहीं है। चुम्बकीय धार बनी रहती है यहाँ से ऊपर फेंका हुआ वस्तु के साथ, इसको प्रमाणित करने का औकात इस धरती के 700 करोड़ आदमी के पास नहीं है। जबकि हम नाम देते हैं गुरूत्वाकर्षण।

उसको हम देखने के बाद क्या भाषा दिया? ये तरल तरल के साथ, विरल विरल के साथ, ठोस ठोस के साथ, सहअस्तित्व को प्रदर्षित करने के लिए, जितना बल से जो चीज़ नीचे से ऊपर जाता है, वो अपने-अपने प्रजाति के साथ सहअस्तित्व को प्रमाणित करते हैं। ऐसा हम व्याख्या किया। ये व्याख्या ठीक है, आप जो व्याख्या किए हो वो ठीक है, दोनों को तोलिए। क्या बात है! यह सहअस्तित्व का प्रधान प्रमाण है, ये नित्य प्रमाण है, एक दिन के एक क्षण का प्रमाण नहीं है। हर दिन, हर रोज़-म्मर्रा में मिलने वाली प्रमाण है। इसको हम प्राण दिए जा रहें हैं - गुरुत्वाकर्षण, सापेक्षवाद। ले जाओ, आदमी को कहाँ ले जाकर गुमराह बनाना है, बना लो भाई! कटा लो, काट लो। अव्यवस्था को प्रतिपादन करने के लिए ये इस प्रकार की व्याख्या हुई। अव्यवस्था को व्याख्यायित करके हम आश्वस्त हो नहीं सकते। आदमी जात तो नहीं हुआ, बाक़ी कोई हो जाए तो हम उसको शोध किया नहीं है। जब कभी शोध करूँगा, बताऊँगा। आदमी को व्यवस्था को व्याख्यायित करके ही हम आश्वस्त हो पाएँगें, अव्यवस्था की उम्मीद में, अव्यवस्था की व्याख्या को ज्ञान मानकर हम आश्वस्त होना इस धरती पर बनेगा नहीं।

प्रश्न : ये प्रभाव जिस स्थिति में है, ये किस ढंग से प्रभावी हो रहा है, थोड़ा सा उसको स्पष्ट कर दीजिए। चुम्बकीय बल जो ऋणाकर्षण, धनाकर्षण के रूप में है, उसका प्रभाव बल जो स्थिति के रूप में बना हुआ है, स्थिति के रूप में अपना आकार, आयतन से अधिक प्रभाव कैसे बना कर रखता है?

उत्तर : चुम्बकीय बल का मतलब होता हे, एक दूसरे के साथ निश्चित अच्छी दूरी पर जुड़ने की हिकमत है ये, ये हिकमत अस्तित्व सहज है। अस्तित्व में ही ये युक्ति लगी हुई है। ये युक्ति हर वस्तु के साथ है। हर परमाणु में है ये, हर परमाणु के मध्यांश में ये चुम्बकीय बल का प्रदर्शन बना ही रहता है। उसका प्रमाण है - हर परमाणु अणु में अणुगठन में होता है। हर अणु एक रचना गठन में रहता ही है। ये आपको दिखता है, मुझको दिखता है, अँधरा को समझ में आता है। इसके लिए आपको lab की ज़रूरत नहीं है। हर परमाणु में चुम्बकीय बल रहता ही है। वो कहाँ रहता है? मध्यांश प्रदर्षित करता है। उसके अश्रित अंश, परिवेशों में घूमने वाले अंश चुम्बकीय बल को प्रदर्षित करते नहीं हैं। वो क्या करते हैं? वो प्रभाव क्षेत्र को बनाए रखते हैं। क्या बात है! चारों तरफ घूमने वाले अंश क्या बनाए रखते हैं, उनका क्या प्रयोजन है?

वो अपना प्रभाव क्षेत्र को बनाए रखता है, अपना identity को बनाए रखता है। कितना बड़ी साहसिकता की काम है, कितना अद्भुत वर्चस्व है, एक परमाणु का, आप सोच लो! चुम्बकीय बल तो सब में होता ही है, एक बात बताया। अब क्या है, आप हमको ये पता है, कुछ वस्तु हैं विद्युतग्राहि हैं, कुछ वस्तु हैं विद्युत ग्राही नहीं हैं। जैसा अभी आप कहते हैं silicone की बात, वो विद्युत ग्राही नहीं है। वो किसी का संयोग होने के बाद ही वो विद्युतग्राहि होता है। वो अपने आप में विद्युतग्राही नहीं है ऐसा आप declare करे हो।

प्रश्न : semi-conductor है वो, अर्ध विद्युत ग्राही है वो।

उत्तर : ठीक है, मान लेते हैं क्योंकि किसी के योग में वो कार्य करने लग गए, इसीलिए अर्ध विद्युत ग्राही अपन नाम रख लिया। आप जो कहते हो उसमें हम सहमत हैं, हमारा कोई प्रति-तर्क नहीं है। हम उसमें सहमत हैं। किंतु प्रदर्शित रूप में, जैसा लकड़ी को लगाया, ये विद्युत ग्राही नहीं है, ऐसा आप कहते हैं। ये लकड़ी सब परमाणुओं का ही संगठित स्वरूप। इस संगठन में विद्युत बल लगाये बिना संगठन कहाँ से आ गया? आप ही सोच लो! विद्युत बल लगी ही है, आप जिस measurement की, आप हम जिस तादात की, जिस गति की, जिस दबाव की, कम से कम स्थिति को हम पहचाने हैं, वो ये ग्रहण नहीं करता, इतना कहा जा सकता है। उससे छोटा, उससे छोटा, उससे छोटा कोई ना कोई छोटे अंश में वो विद्युतग्राही है ही है। हर वस्तु विद्युतग्राही इस ढंग से है। उसका तादात, उसका मापदण्ड़ हमारे कब्जे में नहीं है, इसीलिए हम उसको विद्युतग्राही नहीं है हम कह रहे हैं। कितना बढ़िया रे! इस ढंग से, अणु, अणु रचित रचनाओं के रूप में होने के प्रमाण के आधार पर, जिसको हम विज्ञानी बनाए नहीं है, ना ज्ञानी बनाए हैं, ना अज्ञानी बनाए हैं!
(हम जितने प्रकार के बल की व्याख्या वैज्ञानिक आधार पर किए हैं, ये उनके प्रकाशनों के आधार पर ही हम बोल रहें हैं।)

कोई ऐसा परमाणु नहीं है जिसमें विद्युत बल ना हो, विद्युत चुम्बकीय बल ना हो, ध्वनि ना हो, भार ना हो, उसके पश्चात गति ना हो, स्थिति ना हो, ऐसा कोई एक परमाणु को आप हम पहचान नहीं सकते। ये सभी तमाम वैभव एक परमाणु में ही निहित हैं। (तापमान?) ताप रहता ही है। विद्युत, चुम्बकीय बल, भार, ताप, ध्वनि - ये पाँचों चीज़ एक परमाणु में निहित रहता ही है। तादात की बात आती है, हम व्यवहार में लाने के लिए, जितना तादात की जरूरत है, वो तादात में नहीं रहता है, वो बात अलग है।

जैसा परमाणु ज्ञान होता है, परमाणु को व्यवहार में व्यवहृत नहीं कर पाएँगें। परमाणु का आदान-प्रदान करोगे? नहीं करेंगें। किन्तु परमाणु के बारे में हम बहुत सारा चर्चा भी करते है, ज्ञान भी रखते हैं, उसके वैभव के ऊपर यकीन भी करते हैं, उस ढंग से हम फलित भी होते हैं। ये भी नहीं है ये कुछ करने में कम है, ऐसा नहीं कह रहा हूँ। ये सब फलित भी होते हैं। इस ढंग से अभी जितने भी बलों की हम पहचान किए हैं, वैज्ञानीक विधि से, अज्ञान विधि से, ज्ञान विधि से, कुछ भी हम बल को पहचान पाए हैं, वो सारे बल एक परमाणु में ही विद्यमान है। हम जिस वस्तु को विद्युत ग्राही मानते हों, चाहे नहीं मानते हों, सब में यह चीज़ निहित हैं। तादात की अंतर है, तादात परमाणु के अंशों के आधार पर अंशों का संख्या भेद से उसके वजन वग़ैरह में अंतर आ जाती है। ये तो स्वाभाविक बात है। अंशों का संख्या भेद हो गया तो वजन में भेद हो गया तो कार्य फल को स्वयं में रखने का अधिकार भिन्न हो गई। कार्य फल का अपने में बनाए रखने के अधिकार भिन्न हो गई। इस आधार पर भिन्न-भिन्न दिखता है। इस ढंग से गुरूत्वाकर्षण का जो हमारा परिकल्पना है, जो एक बड़े चीज़, छोटे चीज़ को रख करके करते हैं, उसको भार के रूप में हम अच्छी तरह से पहचान सकते हैं। किन्तु गुरूत्वाकर्षण को आकाश में फेंकी हुई कोई वस्तु के साथ गुरूत्वाकर्षण के आधार पर हम बात करते हैं। उसके आधार पर अपन काम भी किए हैं आकर्षण बल से मुक्त कराने के लिए एक ऐसे गति प्रतिष्ठा पैदा किया जिसको हम velocity कहते हैं, उससे ये भार क एक प्रकार से नाक करके, लांघ करके वो अपना गति में प्रतिष्ठित होता है, उसको जितने भी आकाशगामी यंत्रों में इसको परीक्षण किया गया है।

5. वास्तुशास्त्र, ऊर्जा, चुम्बकीय बल

विडिओ संदर्भ देखें: *video 12, time 06:52-1:01:36*

प्रश्न : वास्तुशास्त्र क्या है?

उत्तर : प्राचीन समय में जो सोचे है, वास्तुशास्त्र मैं समझता हूँ, गुरुकुल परंपरा जब से शुरू हुई, तब से वास्तुशास्त्र को विद्यालयों में एक अच्छे ढंग से पढ़ाने की व्यवस्था रही। उसके पहले शिल्प नाम की बात थी, शिल्पशास्त्र। शिल्पशास्त्र के बाद वास्तुशास्त्र आया। तो जो शिल्प का मतलब ये माने थे, व्याख्या दिए थे, परिभाषा दिए थे, कहीं ना कहीं, कोई जगह में गढ़ना, उभारना। जैसा- मिट्टी से कोई चीज़ को उभारा भी जाता है, गढ़ा भी जाता है। माने एक समतल से ज्यादा ऊपर आने वाली चीज़ को, उभारना कहते हैं, तो समतल से नीचे जाने वाली चीज़ को, गढ़ना कहते हैं। ठीक है, ये दोनों का, इस concept को शिल्पशास्त्र के युग में बहुत अच्छे ढ़ंग से, लोगों को हृदयंगम कराया। ठीक है। अब उस समय में भी घर बनाते रहे, और भी बड़े-बड़े इमारतों को बनाते रहे, स्मारक को बनाते रहे, ये सब होता ही रहा।

और उसके बाद आया वास्तुशास्त्र। वास्तुशास्त्र में क्या समावेश किया भाई? वास्तुशास्त्र मे ये समावेश किया- हवा, पानी, उजेला, इसका तो ध्यान रखा ही है, और स्वास्थ्य को ज्यादा ध्यान रखा। वास्तुशास्त्र में मनुष्य का स्वास्थ्य और निवास के साथ जोड़ है। एक बहुत अच्छी जोड़ है। वही चीज़ मंदिरों में क्या जोड़ है? मंदिरों में ये है, जो जहाँ प्रधान कक्ष होती है, उस कक्ष अत्यंत सुरक्षित होना, ठंडी, गरमी की ऋतुओं में बहुत ही सुखद परिस्थिति बना रहना। उसको वहाँ ऐसा, सोचा गया। अब रह गया, इसके साथ दिशा जुड़ी। दिशाओं में ये माना जाता है, मंदिर का दिशा, मंदिर का जो कपाट होता है, वो जो निकलने की जगह है, वो द्वार है ये किस ओर होना चाहिए? किस ओर नहीं होना चाहिए? ये सभी बात सोचा जाता है।

दिशा के बारे में अभी तक की जो अवधारणा है, पूर्व के ओर, उत्तर के ओर, द्वार होने की बात ज्यादा सोचा है। जो मंदिरों में जो बात आई, वो भी उपासना के आधार पर आई। उपासना दो भाग में, दो पाट में फट गई, एक दक्षिणाचार विधि हुई, एक वामाचार विधि हुई। अब क्या करें? तो इसका यही है, काँग्रेस और भाजपा की अर्थ रहा ये दक्षिणाचार, वामाचार। ये कहें पूर्व के ओर द्वार होना चाहिए, वो कहते हैं, नहीं भाई वो पश्चिम की ओर होना चाहिए। ये कहे, उत्तर की ओर होना चाहिए, वो कहते हैं दक्षिण की ओर होना चाहिए। अब क्या किया जाए? इस प्रकार के तर्क बहुत हो गई है। इसके बावजूद अपन इस जगह में समीक्षित कर सकते हैं, तो जिस अर्थ के लिए स्मारक बनता है, वो स्मारक का अर्थ सुरक्षित रहे, ज्यादा दिन, ज्यादा टिकाऊ हो सके और लोगों को सुविधा पूर्वक आवागमन बना रहे।

ये इस ढंग की स्मारक के बारे में सोचने की बात एक ध्रुविकरण होगा। उसके बाद ये भी आया, जो बहुत सारी शिल्प कलाएँ उसमें स्थापित हुई, स्थापित होने के बाद वो कम से कम क्षरण हो, ये भी उसके साथ निहित हुई। क्षरण विधि को रोकने का भी वास्तु में ध्यान दिया गया। कम से कम क्षरण हो, ज्यादा से ज्यादा दिन तक टिकाऊ रह सके, ये भी

बात सोचा गया। उसके आधार पर material को सोचा गया! भाई ऐसा होना होगा तो material क्या होगी? इसमे कैसा material लगाया जाए, ये सभी एक दूसरे के साथ अब mix-up होने लग गये। पहले जो ज्यादा से ज्यादा शिला का स्मारक स्थापत्य होती थी, शिला से संबंधित स्थापत्य, स्थापत्य का मतलब है वास्तु से ही है। तो वो जो शिला से संबधित जितने भी, माने ये बनता था आकार प्रकार, ऐसे शिला विधि से कम से कम क्षरण होना आप भी मानते रहे, हम भी मानते रहे, पहले भी मानते रहे, अभी भी मानते हैं। उसके बाद संयोग आया, वास्तु में ये परिवर्तित हुआ। मिट्टी से भी माने वास्तु को स्थापित करने वाली बात आई। और भी द्रव्यों से जैसा अभी cement है, चूना है, ईटा है, पत्थर है ये सब चीज़ है, सब आने लगी। आने लगी तो कुल मिलाकर के वास्तु का यदि एक वास्तविकता को व्यक्त करने की बात है ये, तो स्वास्थ्य पहले, वास्तविकता का मूल मुद्दे में स्वास्थ्य को पहचाना गया, स्वस्थ्य रह सके इस घर में रहकर।

स्वस्थ्य रहने के लिए उस घर की हवा का जो आवागमन कैसे हो सकती है, उजाले का आवागमन कैसे हो सकती है, सुविधाओं की स्थिति कैसे हो सकती है, 3 बात को ध्यान में लाया। ये तो हुआ घर के भीतर होने वाली सुविधाओं के बारे में। उसके बाद घर से जुड़ी हुई पानी किस दिशा में होना चाहिए? पाकग्रह, पाकशाला कहाँ होना चाहिए? शौचालय होगा तो किस दिशा में होना चाहिए? ये भी बातों को ध्यान दिया। ये ध्यान देने के बाद उसमे भी द्वन्द्व हो गया। तो पहले सोचा गया था नैऋत्य दिशा में शौचालय होना चाहिए, और उसका बिलकुल आपत्ति पैदा हुआ साब, नहीं यहाँ नहीं होना चाहिए। कहाँ होना चाहिए भई? कहा की वो आग्नेय दिशा में होना चाहिए, बिल्कुल against। वायव्य का against वही है ना?

नैऋत्य का against ईशान दिशा हो गया। एक व्यक्ति ने बोला नहीं भाई जो कुआँ, पानी की व्यवस्था उत्तर और पश्चिम के बीच की कोने में होना चाहिए। तो जैसा ही ऐसा बोला, दूसरा आदमी ने बोला, नहीं, आग्नेय दिशा में होना चाहिए। जल से आग पैदा हुआ है, जल जो है ना अग्नि दिशा में होना चाहिए बोले। तो इस प्रकार की वाद विवाद बहुत हुई। हाँ इसको हम अभी आज क्या करें वाला बात है। मुख्य बात यही है। इसको यदि हम ध्यान में लाते हैं तो यही निकलता है आज के स्थिति में, घर बनना चाहिए, घर में जो लगी हुई material कम से कम क्षरण होना चाहिए, बारम्बार repairing की नौबत नहीं आना चाहिए और आदमी को सुविधा पूरा होना चाहिए। क्या सुविधा पूरा होना चाहिए भाई? हवा, पानी, रोशनी ये सब चीज़ें और जो आने वाले आते हैं, बैठने वाले बैठते हैं, ये सभी चीज़ों के लिए ध्यान दे कर के ही अपने को ये वास्तु विद्या को विकसित करने की आवश्यकता है। अभी तक की जो traditional वास्तु है, वो काफी irksome हो चुका है। हर जगह में वो चलवे नहीं सकता, कई जगह कई बात को अपने को side track करना ही पड़ता है, ऐसा हो गया है। वो कैसे आ गई?

On Thick population problem के आधार पर। हाँ भाई एक घर के साथ एक घर सट गया। ये सब वास्तुशास्त्र को उस समय में सोचा गया था जिसमें एक घर बना हुआ है उसके चारों तरफ अच्छा मैदान है, इस विधि से शुरुआत किए हैं, वो अब जो है ना एक दीवाल से दूसरा दीवाल सटा है। ठीक है। तो इस प्रकार की स्थितियों में अभी हम वास्तु को यही सोचने की आवश्यकता है, जहाँ जो dense population है, वहाँ के लिये, वहाँ का सुविधा को ही ध्यान में लाना होगा और उसके साथ ये आवश्यक है जो हवा, पानी, उजाले की व्यवस्था को एक common rod के रूप में उसको प्रयोग करने की आवश्यकता है। पहले पानी के लिए कुआँ की बात थी, अब

तो कुएं की जगह में नल हो गया। ठीक है ना भाई, या नहीं तो बोरवेल हो गया। और बोरवेल जो है ना, जिस दिशा में हम कहेंगे, उस दिशा में पानी नहीं होगा तो क्या करेंगे? जहाँ पानी मिलेगा वहीं बनाना पड़ेगा। ये सब बाधाएं आ चुकी हैं। कहने का मतलब ये सब पहले की जो traditional वास्तु के जगह में जो बाधाएं आई हुई चीज़ हैं, अब वो बाधा को क्या करोगे? वो बाधा उसको tradition को यदि करेंगें हम कुछ करवे नहीं करें, ऐसे अड़चन जहाँ है वहाँ। नहीं, उसके लिए जो है हमारा सहमति यही है, जो दिशा स्पष्ट होना आवश्यक है, हर वास्तु में। अभी शहरों में ये भी एक भयंकर कष्ट है, दिशा स्पष्ट रूप में शुरुआत ही नहीं हुआ है। माने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के आधार पर सभी इमारत बनेंगे, ऐसा बन ही नहीं सकता। ऐसा हो गई। वो भी एक वास्तुशास्त्र के खिलाफ जाने वाली एक काम है, ठीक हो गया। अब क्या किया जाय? अब यही किया जाए, हवा, उजाला, दो को प्रधान रखा जाए। उसके बाद जो material का जो कुछ भी आप सोचते हो, उसको कम से कम क्षरण हो इस पर ध्यान दिया जाए। ये सबको adapt होने वाली वास्तु का एक बात हुई।

अब रह गया उसका foundation वगैरह। foundation के बारे में जो हमारा सोचना ऐसा है, पहले की जो foundation की बात ये थी, तो नाभी मात्र जगह को जितनी जगह में हमको एक घर बनाना है, देवालय बनाना है, स्मारक बनाना है, नाभी मात्र जगह को खन करके बाहर करो। मिट्टी को बाहर करो। उसमें जली हुई मिट्टी को भरो, ये कहा है। क्या अभी संभव है? यदि कर सके तो बहुत अच्छा काम। इसमें दो राय नहीं।

प्रश्न : बाबा जली हुई मिट्टी से मतलब?

उत्तर : जली हुई मट्टी का मतलब लाल मिट्टी, मुरूम इसी को माना जाये। तो अभी की स्थिति में यदि वो कर सकेंगे, स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उत्तम। नीचे से जो प्रभाव पड़ता है surface पर, उसमें बहुत उपकार होगा, ये मानिए।

प्रश्न : बाबा जैसे चूल्हा बनता है या ईटा बनता है, उसको जली हुई मिट्टी मान सकते हैं?

उत्तर : हाँ ऐसा है ही है, ईटा का चूरा हो गया या धूलि हो गया सब कुछ, ये चीजों को ऐसा मानते हैं। नाभि मात्र निकाल कर देखने को बोले हैं ना, उसमें weight है। वो आचरण में आ भी सकता है। यदि आदमी को उसका फायदे से यदि लाभ उठाना है उस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। ठीक है? तो उसके बाद आता है, सुविधा को तो आप रखोगे ही, सुविधा के लिए ही तो घर बनता है। ठीक है। पहले की जो सुविधा की जो परिकल्पनाएं थी, जो सम्मिलित परिवार, ठीक है ना, तो उस समय में सोने, पढ़ने, शयन गृह, वो गृह, गृह को design करने की तरीका ही दूसरा थी, आज की स्थिति में दूसरा ही है। ठीक है। अंततोगत्वा कहाँ पहुँचते हैं, तो जो धरती की surface से नीचे के जगह में जो कुछ भी suggestion दिया है, उसको follow करने की कोशिश होना चाहिए। उसके बाद, आपको ये लिखा है कि नहीं, जगह को कोड़ करके उसमें filling के बारे मे आप पढे हो की नहीं?

प्रश्न : नहीं महाराज जी अभी तक जितने भी मैंने पढ़ा है, उसमें कहीं नहीं आया ये।

उत्तर : माने इसका मतलब है, अब वो उसको निकाल ही दिया, वो माने पूरा प्रबंध से ही निकल गए। ऐसा होगा इसका मतलब? पहले जो वास्तु शास्त्र के जो मूल ग्रंथों में इसको मैंने पढ़ा है। ठीक है, देवालयों में तो बहुत ज्यादा

उसको बल दिया है। देवालयों को बनाने के संदर्भ में, उसके बिना देवालय बनाना नहीं चाहिए ऐसा लिखा है। तो खैर, अभी आपको जैसा भी लिखा हो, तो ये जगह को तो स्वच्छ बनाने के लिए तो आप भी किसी ना किसी प्रकार से सोचते ही हैं। स्थान शोधन के बारे में पहले बात है ही है।

और स्थान शोधन के बारे में जहाँ उपकार वाला बात होती है, उसको पहचानने के लिए, नहीं तो दिया जलाओ या नहीं तो हवा का रुख देखो, ये सभी चीज़ आपको बताए ही होंगे, उसमें कोई ना कोई चीज आप प्रयोग करोगे ही, करना भी चाहिए हमारे अनुसार। अच्छा वो शुभद लक्षण मिलने के पश्चात वो ऐसा ही सोचना चाहिए। उसके साथ ज्योतिषी को जोड़ दिया। इस राशि वालों के लिए इस प्रकार के आकार के घर में सोना चाहिए। माने उसको आय कहते रहे, हम लोगों के समय मे, आज भी कहते है? गजाय, सिंहाय, है, आय के बारे में कहा होगा। तो वो जो सामने कि घर किस आय में रहता है, उसके विरोधी ना हो ऐसा घर बनाओ, ऐसा पहले कहते रहे। अभी क्या कहते हैं? अभी ऐसा कुछ ज़िक्र करते हैं?

प्रश्न : नहीं इसको खतम कर दिया बाबा।

उत्तर : खतम कर दिया, ये इस प्रकार की बात होती है। परिवर्तन कैसा आया है देख लो महराज।

प्रश्न : इसका अर्थ क्या है, गजाय, सिंहाय?

उत्तर : वो क्या है ऐसा बता रहे हैं, जैसा – सिंहाय, तो उसका meaning जो है ना, physically हम meaning जो पाते रहे, आगे भाग चौड़ा है, पीछे भाग पतला, इसको सिंहाय कहते हैं। तो उसके बदले मे गजाय, उसके विपरीत, आगे भाग छोटा है, पीछे भाग बड़ा है, इसको ऐसा designing में ऐसा आता है। तो design में आने के पश्चात फिर मुख को, घर का मुहँ बनाते हैं, वो देखने पर ऐसा feeling होता है कि एक हाथी जैसा घर है ये। उसका मुख का मुद्रा को जो बनाते हैं, मुद्रा बनाने की विधि अभी भी होगा कहीं ना कहीं। वास्तु का मुख मुद्रा बनाने का जो विधियाँ हैं, उसमें वो भाव उभरती है। ये ठीक है ना? इस ढ़ंग से पहले विभिन्न प्रकार की आकृति के लिए suggestion दिया। पहले से आया हुआ बात है, जानवरों के आधार पर आकार के बारे में सोचा गया। ठीक है ये?

उसके बाद शनैः-शनैः वो बात धूमिल होती गई, धूमिल होते होते अपने सुविधा के अनुसार बनता गया। अब बनते बनते पहले के material के स्थान पर दूसरा material हो गयी। और पहले जितना एक फैली हुई संसार से सटी हुई संसार में आ गए, उस स्थिति में अपने को वास्तु को सोचने की आवश्यकता है। इसमें और एक प्रयोग करते रहे, घर की जो सुरक्षा, घर के वस्तुओं का सुरक्षा के बारे में, चुम्बकीय द्रव्यों को छत के तल में लेप करने की बात कही थी। अभी आपके पास मे आता है कि नहीं आता है? [नहीं आता है] वो भी खतम। तो उसमें एक प्रयोग किए थे महाराज जी, एक पम्पापती नाम का एक जगह है, वहाँ एक structure थी, एक शंकर जी का मंदिर। उस मंदिर के सामने एक नंदी बनाने की अभ्यास थी, नंदी माने बैल का प्रतिमा, रखने की अभ्यास अभी भी है, पहले भी था। उस मंदिर में क्या कर दिया, वो नंदी कहाँ रखा है, वहाँ, एक चौकोर आयतन बनाया, उसको गहरे-गहरे 10, 5 step

ले गये ऊपर, और नीचे क्या किया है, वो वैसे ही ऊपर जैसा गहरे ले गया, नीचे ऐसे उभार के लाया, बीच में वो नदीं को बनने का स्थान है। वो जो बैल का प्रतिमा है, वो नीचे धरती को छूआ नहीं है। पूरा वो बैल का प्रतिमा थी।

अब सब लोगों ने भिड़े साहब ये काहे को ऊपर टंगा है, अधर में कैसा टंगा है। और सब को तोड़े-ताड़े कुछ भी नहीं मिला। अंततोगत्वा हमने एक इसमें पढ़ा प्राचीन कालीन वास्तु में, चुम्बकीय द्रव्य नाम दिया है। चुम्बकीय द्रव्य को यदि गोपुर में, वो उतना लगाया जाए, इसमें जो प्रतिमा बनाते हैं, उसमे वो चुम्बकीयता से प्रभावित होने वाले द्रव्य से उसको अभिभूत कराया जाए। अभिभूत करने के बाद, कैसा अभिभूत कराएगें वो tech तो उसमें वर्णित नहीं था, वो दूसरे कोई संहिता में रही, तो उसमें अभिभूत कराने की बात कहा। वो क्या करता है, उसको जो चुम्बक जो है ना स्वभाविक है कोई चीज़ को खींचंता ही है, उसी विधि में उसको fix कर दिये थे। नीचे भी चुम्बकीय द्रव्य है, ऊपर भी है, ये इसको कहीं ऊपर भागने भी नहीं देता है, नीचे बैठने भी नहीं देता, उस जगह में fix है। नीचे से हम कपड़ा डाल के पैर के नीचे से निकाल दिया है, हम स्वयं। और उसके कुछ दिन बाद Germany के experts आये, और इसकी तो हो हल्ला होता ही रहा। उसके बाद वो उन लोग नीचे में कुछ तोड़ने लगे ऊपर से कुछ तोड़ने लगे वो बैठ गया एक दिन, अभी बैठा हुआ है। ये इस ढंग के काम करते रहे। इसको क्या किया जाए आप बताओ? तो इसमें इस प्रकार की कई चीजें चमत्कारिक बात लिखी भी है, वो होता भी है।

प्रश्न : बाबाजी पर वो आप जो बता रहे थे ना कि छत मे चुंबकीय वस्तु का जो प्रयोग करते हैं, द्रव्य का प्रयोग करने का विधि रहे। वो किस लिए करते हैं?

उत्तर : मैं समझता हूँ, ये जो कहीं रहते हैं ना वो mummies, pyramid, pyramid में वही चमत्कार है। तो यदि हम कोई ऐसा situation पैदा किया जाए और चुम्बकीय धारा प्रवाहित वातावरण बनाया जाए, उसमें कोई भी द्रव्य को रखेंगे, बहुत जल्दी वो सड़ेगा नहीं। चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र में एक वातावरण बनाए रखा जाए कोई भी structure में, उसके अंदर जो द्रव्य रखेंगे, उसमें परिणाम बहुत दीर्घ परिणाम होगा, दीर्घ काल में परिणति होगी। जैसा सब्जी रखा, सब्जी तो 24 घंटा में सूख जाना चाहिए। वहाँ 48 घंटा, 4 दिन वैसे के वैसे पड़ा रहेगा।

प्रश्न : महाराज जी, जब की वास्तुशास्त्र में ऐसा है कि चुंबकीय वस्तु का प्रयोग ना करें।

उत्तर : अब यहां पहुँचे, अब क्या करेंगे? अब क्या किया जाए? देख लीजिए कहाँ पहुँचा।

प्रश्न : reasoning क्या देते हैं?

उत्तर : इसमें गाज गिरेगा ये हो जाएगा, वो हो जाएगा ऐसा ही है।

प्रश्न : मतलब जो field develop होता है महाराजजी वो उससे disturb हो जाता है, जैसे iron वगैरह जो अपन लगाते हैं, उसका body पर bad effect होता है।

उत्तर : हाँ वही, देखा ना, वो भी उसके साथ वो भी है गाज गिरने पर disturb हो सकता है। ये भी हो सकता है।

प्रश्न : जैसा pyramid जो बने है, 1500 साल से 3000 साल लगभग पुराने हैं, अभी तक बिजली गिरने वाली कोई दुर्घटना, उनके ऊपर नहीं हुई?

उत्तर : वो प्रश्न ही नहीं है महाराज जी, बिजली के लिए पहले से भी बात ये सोचे गए थे, आप ने देखा होगा, बड़े-बड़े इमारतों में क्या किए हैं, एक ऊपर एक त्रिशूल जैसी एक चीज़ पहना देते हैं। वहाँ से ले कर धरती तक की वो rod बराबर आया रहता है। धरती तक वो rod को ला करके वो जितना उसका वो रहता है ना foundation, foundation से नीचे तक ले जा कर के छोड़े हैं। चौक मे जितने भी मंदिर का गोपुर बना हुआ है, गोपुर के ऊपर वो आकार दिखता है। उसको क्या किया है, उसको ला करके वो मंदिर का foundation जितना गहरा गया है, 10 foot, 20 foot, 50 foot उसके नीचे तक ले गए हैं।

ये प्रक्रिया किया है और कोई कोई ताम्बें को भी ले गया है। लोहा को अधिकांश ले गया है। ये मदुरा में एक मीनाक्षी मंदिर है, उसमें जो रखी हुई वो त्रिशुल, वो ताम्बे का रखा है। (मथुरा मे या मदुराई, मदुराई) वहाँ ले जा करके वहाँ प्रयोग किया है वैसा। ये सब विगत की बात हुई। अभी अपन क्या करेंगे, वाला बात वो कहते हैं, तो सुविधाजनक घर बनाया जाए अंतिम बात यही होता है dense population में। तो आप जहाँ चाहते हैं, वहाँ पानी भी नहीं हो सकती, ये हो सकता है, पाक गृह कहाँ हो, वो बात तो आप set कर सकते हैं, ठीक है ना, और शौचालय कहाँ हो ये बात set कर सकते हैं। ये भी आप नहीं कर सकते हैं कि जिस दिशा से घर के दरवाजा को बनाया जाए। दरवाजा जहाँ बनने की जगह है, वहीं बनाओगे, दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। छोटे-छोटे घरों में भला, बड़े घर होगा तो आप वो तो ऐसा मुहँ होगा तो यहाँ एक verandah निकाल दोगे, यहाँ से निकलो कहोगे, इतना भर कर सकते हैं हम। यही ना होगा, है ना?

प्रश्न : बाबाजी इसको कई बार अपन इसको प्रयोजनार्थ भी उपयोग में लाते हैं जैसे कई बार आर्थिक समस्या कुछ हो, तो हम दरवाजा पूरब से उत्तर कर दें, उत्तर से पश्चिम कर दें, तो इसमें फर्क आ जाता है। ऐसा मतलब अनुभव में भी आया है, तो मतलब कहीं ना कहीं ऊर्जाओं में फेर है, मतलब एक कोई सकारात्मक होगी, नकारात्मक होगी, जो भी ऊर्जा होगी।

उत्तर : ऐसा तो रहवै करेगा, इसमें दो राय नहीं है। तो वही हम बता रहे हैं ना, परिस्थिति बनती है ना भाई, छोटा घर है। हम एक जगह में गए थे। हमसे मिलने वाले हैं एक रस्तोगी जी, उनका total घर का चौड़ाई है वो 10 feet है, वो 80 feet लम्बी एक रेल्वे डब्बा है। एक दीवाल से एक दीवाल सटी हुई है। और केवल आगे खुला है, आकाश दिखता है, ठीक है, आकाश भी कहाँ दिखता है, सामने की घर दिखता है, पीछे खिड़की है। पीछे से देखने से शायद आकाश दिखता होगा,[नहीं] नहीं दिखता है ना, उसमें भी घर ही दिखता है। ये ऐसी स्थिति बनी हुई है महाराज, अब उसमे कैसा घूमाओगे आप बताओं, ऊर्जा को कैसा घूमाओगे?

प्रश्न : बाबा जी, जो प्रचलित वास्तुशास्त्र है, उसमें जो भी ऊर्जा का सिद्धांत है, ऊर्जा आती है या ऊर्जा, ऊर्जा वस्तु के रूप में क्या है?

उत्तर : ऊर्जा वस्तु के रूप में यही है, ग्राही और जो संप्रेषणी तत्व को पहचानने की बात है। कहाँ से संप्रेषणा होता है, कहाँ ग्रहण होता है। हवा पहले, कहाँ से आता है, कहाँ से जाता है। एक हवा का संचार तो पहचाना जा सकता है ना? ठीक है, बाकी ऊर्जा को कैसा पहचाना जाए? बाकी ऊर्जा को पहचानने का एक ही विधि आप हमारे पास है कि उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव के सिधान में। दिग सूची नाम की एक चीज़ आती है, उसके अनुसार ऊर्जा का प्रवाह कहाँ है उसको आप पहचान सकते हैं। जिसको अपन सोचते हैं ना उत्तर की ओर सिर मत करो।

प्रश्न : बाबाजी आप जो कह रहे हैं, कोई दूसरी प्रकार की ऊर्जा के बारे में कह रहे हैं, ये जो जैसे आपने जो बताया चुंबकीय बल रेखाओं के आधार पर चुंबकीय ऊर्जा का ज्ञान होता है उत्तर दक्षिण जो ध्रुव हैं उनके आधार पर होता है। एक जो है अपन सूर्य के आधार पर करते हैं।

उत्तर : वही उजाले की बात हो गई ना भाई वो। उजाले की बात जो बताते हैं, उसको तो ध्यान रखना ही है। घर के अंदर सूर्य रश्मि सीधा आना चाहिए। नहीं आना चाहिए?

प्रश्न : बाबाजी जैसे सूर्य जैसे पूर्व दिशा में सीधी आती हैं किरणें तो उसका अलग प्रभाव होता है, पश्चिम से आती हैं तो अलग प्रभाव होता है, जबकि सूर्य एक है। तो ऊर्जा में कहाँ अंतर आ गया?

उत्तर : वो ऐसा अपन कहते हैं, उसका प्रमाण क्या प्रस्तुत किया जाए? प्रमाण यही है, सामने की जो द्रव्य राशि है, परिस्थिति है, सामने दुकान रहेगा, मकान रहेगा, गंदगी रहेगा। उसके ऊपर से गुजरता हुआ उजाला, हवा के साथ ही जाएगी या radiation जाता है, मान लो, आज की आप की भाषा के अनुसार। ठीक है, वो radiation को ना गंदा लगता है, ना धूआँ लगता है, कुछ नहीं लगता। इन सब से चीर फाड़ करके जाने वाली चीज़ को हम radiation कहते हैं। अभी जो x –ray लेते हो, radiation ही ना उसको ले पाता है। विकिरणीय की रोशनी में ही वो हड्डी का picture आता है ना। और उसमे कौन सा कहाँ से, इधर से करने पर व्यतिरेक होता है उधर से करने पर व्यतिरेक होता है, ऐसा कुछ तो देखा नहीं गया। ठीक है। फिर भी हमारा सोचना ऐसा है, हवा के साथ रोशनी blend रहता है ऐसा मान लिया जाए, ठीक। और इसके हवा के साथ सूर्य रश्मि का जो कुछ भी ताकत भीतर पहुँचाता है ऊष्मा के रूप में, अंततोगत्वा उष्मा के रूप में ही पहुँचेगा, scientifically, logically दोनों विधि से यही निकलता है। उसके बारे में सोचने की बात, इधर से उष्मा भीतर घुसना, शुभद है, उधर से घुसना शुभद है, और उसको सोचने की बात है। उसके लिए सामने की परिस्थितियों को consider करने की आवश्यकता है, यही मुख्य मुद्दा बनाता है। इसमे हम पार पा सकते हैं।

प्रश्न : बाबाजी, जो भौतिक ऊर्जाएं मानी जा रही हैं आजकल, जैसे प्रकाश है, ताप है, ध्वनि है, या चुम्बकत्व है, गंध है, इन चीज़ो के अलावा और कोई दूसरे प्रकार का ऊर्जा नहीं बनती? दरवाजा को घूमाने से या कुछ और करने से?

उत्तर : हमको जो समझ में आया है, मूलतः ऊर्जा का जो है, ऊर्जा संचार उत्तर दक्षिण से ही संबंधित है। हमारा समझ के अनुसार ऊर्जा संचार उत्तर दक्षिण से ही है, magnetic pole से ही है। ये secondary है, ये जो सूर्य के बारे में कहते हो, उसके बाद हवा के बारे में कहेंगे, ये सब चीज़ें ठीक हैं। ये सब consider करने वाला बात तो हमको

समझ में आता है। किन्तु मूलतः ऊर्जा संचार उत्तर, दक्षिण विधि से ही है। वो magnetic rod ही है। वो magnetic force ही निरंतर सब जगह में available होता रहता है। ठीक है, गलत है?

प्रश्न : बाबा मतलब ऐसा कोई ऊर्जा नहीं बन रही है, जो मनुष्य के विचारों को परिवर्तित कर दे, ऊर्जा के रूप में। जैसे रोशनी से गर्मी से परेशान होगा, रात को रोशनी रहेगी तो बहुत ज़्यादा परेशान होना। ये अलग बात हो गई, और कुछ होता है क्या?

उत्तर : देखो वो हो गया, अब traditionally जितना सोच सकते हैं ये ही blend करके आप जो निकालना है निकाल लीजिए। तो मनुष्य में ऊर्जा संचार समझदारी के आधार पर है। ठीक है, ये आपका वास्तुशास्त्र से bifurcate हुआ ये। आपको point समझ में आया ना? माने ये reference point ये है। मनुष्य का समझदारी ही मनुष्य से उगलने वाली ऊर्जा है। एक भी मनुष्य को आप नहीं पाओगे कि समझदारी विहीन हो। ठीक हे। ये ऊर्जा संचार हर व्यक्ति से उगलती है। उसमें coordination के बारे में आते हैं, समझदारी की मुद्दे पर ही एक दूसरे के साथ coordination है। नासमझी से non coordination, नासमझी बराबर non coordination, उसका projection है कलह, उसका projection है दुख, उसका projection है आलस्य प्रमाद, बेवकुफी फलस्वरूप दरिद्रता। ऐसा आता है ये record।

उसको यदि record करने जाएंगे तो ऐसा आएगी। अभी सर्वाधिक लोग यही सोचते हैं कि ये घर ठीक नहीं है, क्योंकि वहाँ कलह होता रहता है, घर ठीक नहीं है, शांति नहीं रहता है, घर ठीक नहीं है, पनपते नहीं हैं, घर ठीक नहीं है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, घर ठीक नहीं है, हाथ में जो कुछ भी आता है वो टिकता ही नहीं है, ये ऐसा लोकोक्ति को सुनने में आती है। सही है ये ? गलत है? सही है ना? अच्छा ये क्या है, ऊर्जा का असंतुलन है। क्या ऊर्जा का असंतुलन भाई? मनुष्य की समझदारी नाम की ऊर्जा है, उसमें असंतुलन। आपका समझदारी से मेरे समझदारी के छत्तीस का आकड़ा है, झगड़ा नहीं करेगें तो क्या करेंगे? पूरा हो गया?

प्रश्न : बाबाजी इसमें ऐसा है के अपन वास्तुशास्त्र से जो मकान बने है उसमे generally देखने में आता है, लड़ाई झगड़ा, वास्तुशास्त्र के अनुसार परिवर्तन करने के बाद इसमें परिवर्तन आ जाता है मतलब, थोड़ा शांति आ जाती है सुख की जो चीजें होना चाहिए। तो मतलब है की ये समझदारी वाले ऊर्जा को प्रभावित करने की क्षमता रखता है क्या?

उत्तर : देखो बेटा, इसमे ऐसा अपन एक तुकबंदी वाला बात करना हो तो बहुत कुछ है।

प्रश्न : नहीं बाबाजी देखने मे भी है मतलब मेरा ये practical experience है कि जहाँ काफी लड़ाई झगड़े होते थे हमनें परिवर्तन किया वहाँ पर और काफी शांति या गई, आपस में काफी उनमें सामंजस्य आ गया, सोचने की दिशा बदल गई।

उत्तर : सोचने की दिशा कैसे आता है, आपका कथन के अनुसार? जैसा एक सोचने की बात है, एक आदमी को टी.बी. हो गयी है घर मे, उससे सभी परेशान हैं ही हैं। वो दिशा परिवर्तित करने से क्या वो टी.बी. ठीक हो गया,

तुम्हारे अनुसार? अभी अपन मंगल मैत्री से बात कर रहे हैं। मेरे अनुसार तो होता नहीं। वो दवाई से ही ठीक होगी। ठीक है। अब रह गया घर में रोग राटा को देखने के लिए यही प्रधान काम है, हवा, उजाला, ऊष्मा का संचार ये तीन। ये तीन के ऊपर तो काम है, मनुष्य की स्वास्थ्य ठीक रहना, नहीं रहना। स्वास्थ्य यदि बिगड़ता है तो उसको दवाई किए बिना, दरवाजा को बदल दिया तो स्वास्थ्य ठीक हो गया, ऐसा होता है?

प्रश्न : ऐसा देखने में तो आया है बाबाजी, मतलब एकदम तो नहीं, फिर भी देखने में एक हद तक तो आया है।

उत्तर : ये ठीक है, ये अभी जो कह रहे हो, उस बात को अपन सांत्वना लगाने की बात हो सकता है। सांत्वना में हमारा कोई भी शंका नहीं है। इस प्रकार की बात हम भी देखे हैं, किन्तु वास्तविक तत्व को कैसा पकड़ा जाए। हमने जो समझा है, हर जगह में आदमी स्वस्थ रहने का जो तरीका है, वो समझदारी है। मूल ऊर्जा वो ही है, मानव से जो उगलने वाला ऊर्जा यही है। वो नासमझी से झगड़ा होता है, रोग होता है, परेशानी होती है, तमाम प्रकार का झंझट होता है। ये आपकी consider में आता है कि नहीं आता है, ये हम नहीं जानते। आपके स्वयं के स्वीकृति में आ पाता है, नहीं आ पाता है, हम इसको पहचान नहीं पाते हैं। क्योंकि आप हम अभी इसके foundation में जा करके concept को, आप हमारा सामने concept को पहचाने नहीं है ना, है ना। मूलतः आपका concept, मेरा concept इन दोनों में कहीं ना कहीं तालमेल की आवश्यकता है। आवश्यकता है की नहीं है? एक दूसरे के communication के लिए, ये मेरा सोचना है।

प्रश्न : बाबाजी एक प्रश्न और है। पहले जो घर बनाए जाते थे वो इस तरीके से होते थे कि उनके जो दरवाजे हैं करीब-करीब आपस में मिलते रहें। एक घर में जैसे कई कमरे हों, एक कमरे में क्या हो रहा है, दूसरे कमरे को थोड़ी बहुत जानकारी रहे। लेकिन आजकल जो नए ऐसा मकान बनाते हैं कि एक का मुंह ऐसी दिशा में हो दूसरे का ऐसी दिशा मे हो कि एक कमरे वाले को दूसरे कमरे के बारे में कोई खबर ही ना रहे। मतलब एकदम कमरे में भी रहें और बिल्कुल घर से अलग भी रहें। घर को दो प्रकार से बनाया जाता था, कि आदमी यदि कमरे में है, 3,4 कमरे बने हैं, 3,4 कमरे में आपस में क्या हो रहा है ये एक कमरे वाले को पता होता है, ये घर का मतलब है और अभी जो घर का मतलब है दूसरे कमरे मे क्या हो रहा है पता नहीं चले। privacy पूरी maintain होते रहे और घर में हैं ये बोलने को भी हो जाए, और घर वालों से कटे भी रहें। पहले privacy नाम की चीज़ नहीं होती थी, घर में हैं मतलब एक कमरे में बंद हैं तो भी पूरे घर से जुड़ा हुए हैं। इस ढंग से मकान पहले बनते थे, तो कौनसा ठीक है और उसके पीछे क्या कारण है?

उत्तर : इसका उत्तर ये होता है, एक दूसरे को communicate होने वाली structure ज्यादा favorable है, safety है और उसमें मनुष्य को ज्यादा आश्वस्त रहने की विधि है। आगे और एक इससे जुड़ी हुई और हो जाए, आप कुछ कहना चाहते हैं?

प्रश्न : वास्तु शास्त्र की मानव जीवन में उपयोगिता या भागीदारी कहाँ तक है?

उत्तर : वास्तुशास्त्र के साथ केवल यही है बाबा, मानव जीवन की उपयोगिता का बारे में आप पूछते हो, शरीर संरक्षण के लिए है वास्तु। शरीर को संरक्षित करना है, जीवन जागृति को प्रमाणित करना है, ये कुल मिलाकर के उद्देश्य है।

जीवन जागृति के बारे में हम कम सोचते हैं, घर का खूबसूरती के लिए ज्यादा सोचते हैं, यहाँ हम आ गए हैं। सच्ची बात। ये जो अभी बताया रहे हैं ना अभी cabin program हो गई। हर जो कमरा माने cabin है। अभी हमारे मित्र हैं, कानपुर में, उनके लड़का एक cabin में गोली खा कर के suicide कर लिया और उसी के बगल में ये लोग सोते रहे, पढ़ते रहे, भनक तक नहीं लगा, मर ही गया वो आदमी।

भई घर में एक दूसरे की जो कराहने पर, खांसने पर, कोई दुख सूचक, कोई परेशानी सूचक, किसी का आवश्यकता मदद की आवश्यकता की सूचना, ये दूसरे को communicate ही नहीं होगा तो क्या होगा भाई?

प्रश्न : बाबा जी अभी जो नया मकान बनाने का जो culture है, ये आदमी के किस प्रवृत्ति के कारण ऐसा शुरू हुआ?

उत्तर : भोगोन्माद प्रवृत्ति, वही Bermuda triangle आप तो सुने ही हो bathroom, bedroom और kitchen Bermuda triangle के लिए समर्पित है आदमी।

प्रश्न : जैसे अपने पास 4 दिशाएं हैं, पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, तो ऐसा मानते हैं, अलग-अलग दिशाओं से अलग-अलग विचारों की ऊर्जा आती है, जबकि चारों तरफ जो है ऊर्जा एक ही होगी। तो ऐसा क्यों है?

उत्तर : वो ही मुख्य बात है ना, ये funda ही गलत हो गई। मनुष्य अपने में से विचारों को उत्सर्जित करता है। माने संप्रेषित करता है। विचार हवा से आता नहीं है। पहले इसको थोडे सी, अभी बढ़िया comfortable नहीं हुआ है हमारा communication आपके साथ।

प्रश्न : बाबा इसके पीछे एक और ऐसा माना जाता है कि मनुष्य के विचार फूट रहे हैं उसके पीछे पूरा वातावरण जिम्मेदार है। और आप तो कह रहे हैं...?

उत्तर : स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार है वातावरण, विचार के लिए केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है। ये इसको ठीक से सुनो, स्वास्थ्य के लिए, शरीर स्वास्थ्य के लिए पूरा वातावरण जिम्मेदार है और विचार के लिए केवल आदमी ही जिम्मेदार है और कोई जिम्मेदार नहीं है।

प्रश्न : बाबजी जागृति से पहले भ्रम की अवस्था में आस-पास का जो वातावरण है, आस-पास के जो रहने वाले लोग हैं, वो भी आदमी के विचारों को प्रभावित तो करते ही हैं?

उत्तर : ठीक है, आदमी से आदमी प्रभावित होता है ना।

प्रश्न : नहीं, वस्तुओं से भी होता है बाबा?

उत्तर : कैसे? विचार कैसा वस्तु से होता है, जैसा गंदगी पड़ी है, हाँ क्या होगा?

प्रश्न : तो घृणा होती है?

उत्तर : तो घृणा करते रहो, घृणा को आप ही ना व्यक्त करोगे। घृणा तो कचड़े में नहीं है ना।

प्रश्न : उससे प्रभावित तो हुए ना बाबा?

उत्तर : पुनः वही बात। वातावरण से कचरा, गंदगी से शरीर प्रभावित होता है। घृणा आप काहे को करते हो? जिससे कि आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव ना पड़े। बात ठीक है? ये बात आती है। सच्चाई तो ऐसे ही है। ठीक है ये?

प्रश्न : बाबाजी लेकिन ऐसा देखने मे आया जैसा अपन उदाहरण के लिए लें कि पूर्व दिशा में जो मकान में लोग रहते हैं तो उनमें एक गुण अच्छा पाया जाता है वो अधिकार प्राप्ति के लिए बढ़ते हैं और दूसरा उनमें ईमानदारी होती है। दूसरा ऐसे दक्षिण दिशा की ओर लें, तो उनमें छत्रीय गुण ज्यादा होता है ऐसा दिखने में भी आया है, इसको मतलब नकार नहीं सकते, तीसरी जैसे पश्चिम दिशा में तो उनमे थोड़ा सा business minded होते हैं वो, और उठा पटक ज्यादा करते हैं। उत्तर की तरफ थोड़ा सा शांति प्रिय होते हैं वो। ऐसा दिखने में भी आता है, केवल सुनी सुनाई बाते नहीं हैं बाबजी। तो ऐसा कैसे होता है, अलग अलग दिशा में अलग अलग प्रभाव पड़ता ही है?

उत्तर : देखो बेटा एक practical बात, हम जो feel करते हैं। हम एक धर्मशाला में रहते हैं, ठीक है? हम जिस धर्मशाला में रहते है, उसका दरवाजा पूर्व की ओर है। हम रहते हैं और उसी में एक compartment है, जिसका दरवाजा उत्तर की ओर है। इन दोनों को यदि हम comparatively study किया जाए, पूर्व की ओर और उत्तर की ओर दरवाजा है, आप स्वयं मूल्यांकन कर सकते हैं। आप ही करो देव।

प्रश्न : उसको थोड़ा सा clear बात दीजिए ना बाबाजी।

उत्तर : clear यही है सर्वाधिक झगड़ा जो है, उत्तर के ओर जो मुहँ है, वहीं रखी है, एक। दूसरा, और एक आपको ये कहना चाहते हैं, वहीं हमारा जो compartment है, हम पूर्व की ओर हैं, ठीक है, हमारा बगल में ओर एक compartment है, वो भी पूर्व के ओर ही है, उनका दिमाग की बत्ती खसक गई। उस combination में हम हैं, हम आपको ये बताना चाहते है। ये 70, 80 वर्ष पहले बनी हुई एक धर्मशाला है। उस धर्मशाला मे मैं रहता हूँ। आधा धर्मशाला में मैं रहता हूँ, मैं वहाँ निवास करता हूँ, वहाँ साधना किया हूँ, वहाँ हमनें जो ज्ञानार्जन किया, विवेकार्जन किया वो अलग है। ये व्यक्ति के साथ ये बात जुड़ा है, वास्तु के साथ जुड़ा है, आप ही शोध करो। आप आओ वहाँ रह करके चार दिन शोध तो करो देव, कुछ तो करो, हम भी पतिया जाऊँ। हाँ यदि authenticity चाहते हैं तो ऐसा ही होगा। सांत्वना लगाने के लिए तो बहुत सारा विधियाँ हैं। उसमे हम कुछ नहीं कहेंगे। authenticity पाना होगा तो, महाराज जी detail में जाना ही होगा। मैं स्वयं, स्वयं भी मेरा होना आप मानोगे कि नहीं मानोगे, नहीं मानोगे? क्या है तुम्हारा कहना? मैं हूँ की नहीं हूँ? ठीक है ना, आप जैसे ही मैं भी हूँ ना।

सीधी-सीधी बातें हैं ये। तो आप आकर के हमारे साथ रहो, वहाँ अध्ययन करो। अच्छा और एक बात कहते हैं, वो सात्विक होते हैं बताए थे आपने, उत्तर की ओर वाले, शांति प्रिय होते हैं, सात्विक होते हैं ऐसा बताए थे। ठीक है मान लिया, महाराज जी सारा कचरा वहीं खाते हैं, जबकि सामने मंदिर रखा हुआ है। नर्मदा मंदिर वही सामने रखा है। ठीक है, सारा धरती की कचरा जितना आप मानते हैं मैं मानता हूँ, ये मानते हैं, वो मानते हैं, वो सारा कचरा वही

खाते हैं। क्या करोगे। तो ये सोचने की मुद्दा है, यदि आम बनाना है वास्तु को, ये सब चीज़ों को ध्यान में लाना ही पड़ेगा। वास्तविक में मनुष्य में निहित है, शांति अशांति, वास्तु में निहित है? वास्तविक मनुष्य में संपदा, विपदा रखी हुई है या ये ईटा, पत्थर में रखा हुआ है?

इसको आपको decide करना पड़गा, इस पर आपको research करना चाहिए, मेरा सुझाव है। यदि research करना होगा तो वो funda हम clear करेंगे। मनुष्य में ही शांति अशांति की funda है, ईटा, पत्थर, धरती में नहीं है, हवा में नहीं है। कितना परिवर्तन हो गया है, पूरा funda उल्टा हो गया ना? वास्तु शास्त्र के सारा funda हैं ना, इसमे उलटा हो गया। वो वास्तु शास्त्र में ये बताना चाहते हैं यहाँ शांति से रहेंगे ऐसा वास्तु मे, वो कहते हैं ऐसे वास्तु में सब अशांत रहेंगे, ऐसा वो कहते हैं। जैसा ईटा, पत्थर सबको शांति को खिला रहा है! ये हँसी की जगह में आएंगे कि नहीं आएंगे? लिखा हुआ है भाई हम पढ़े हैं, वो सब कथा को हम सुने हैं और हमारे साथ में बहुत अच्छे जो वास्तु शिल्प, वास्तु शास्त्री जिए हैं उनके बातों को हम सुने हैं, सुनने की बावजूद आज की स्थिति में हमारा ये वक्तव्य है। ठीक समझ में आ गया ना?

तो शांति अशांति मनुष्य में निहित है और ईटा,पत्थर में नहीं है, धरती में नहीं है। मनुष्य इससे बढ़ गया है, आगे है। यही विकसित है, विकसित हो करके इससे आगे हो गया। जैसे कि पत्थर ईंटा से झाड आगे है कि नहीं है? झाड़ में दूसरे ही फल आता है। झाड में जो फल आता है, ईंटे से निकलता नहीं है। निकलता है? नहीं निकलेगा ना। वैसे ही मनुष्य से जो फल निकलता है इससे आगे की है, जीव जानवरों से आगे की है। वही चीज़ है शान्ति प्रियता, न्याय प्रियता, समाधान संपन्नता, सौभाग्य संपन्नता ये सब चीज़ फलन मनुष्य से निकलती है। किसके आधार पर? समझदारी के आधार पर। ये सब से प्रताड़ित काय को होता है? नासमझी के आधार पर। ये हमारा अंतिम निष्कर्ष है। जय हो मंगल हो कल्याण हो!

प्रश्न : बाबा, जैसे चुम्बकीय जो धारा है उत्तर, दक्षिण, ध्रुवों के बीच जो बहता है, वो तो प्रत्येक घर से भी बहेगा, घर कहीं भी बना हो, तो इसका उपयोग शरीर के स्वास्थ के लिए या रोग ना हो उसके लिए किस प्रकार से किया जा सकता है?

उत्तर : उसके बारे में बताया ना भाई, अभी इन्होंने बिल्कुल उसका उलटा बताया। चुम्बकीय धारा के बीच में, मानें चुम्बकीय धाराएँ चारों ओर से हो, वो उस वातावरण में मनुष्य ज्यादा सुरक्षित है, शरीर, मनुष्य सुरक्षित माने, शरीर सुरक्षित।

प्रश्न : बाबा आपने pyramid के बारे में बताया था उसमें चुयंबकीय, जबकि pyramid जो बनाये जाते थे उसमें कोई धातु उपयोग नहीं करते थे।

उत्तर : धातु का बात नहीं है बेटा, चुम्बकीय पत्थर भी होता है। आप क्यों याद नहीं रखते हो? पत्थर भी होता है। अंततोगतवा हम आपको बताए ना वो बैला वाला बात, अंत में वो स्वयं चुम्बकीय पत्थर है। और ऊपर जो लगाए थे वो सब चुम्बकीय पत्थर, नीचे लगाए थे वो भी चुम्बकीय पत्थर। वो proportion को जोड़ना वो कला की बात है।

प्रश्न : मतलब बाबा वो पत्थर अपने आप मे चुंबक नहीं है। जैसे प्राकृतिक रूप से भी चुंबक मिलता है, उसको मतलब चुंबकीय पत्थर बोलते हैं, उसका नाम magnetite है। iron का एक ore है। उसमे एक magnetite नाम की चीज़ है, वो स्वयं चुंबक होता है।

उत्तर : उसमें चुंबक होता है।

प्रश्न : लेकिन वो वाला जो बैला की बात कर रहे है वो, वो नहीं है।

उत्तर : हाँ, वो कहने के बात, वो बैला जो बना है वो स्वयं भी वो चुम्बकीय प्रभाव से प्रभावित होने वाली वस्तु है।

प्रश्न : अभी तक उसको नहीं पहचान गया है ना?

उत्तर : हाँ वही, अंततोगत्वा वही हुआ वो उसका तोड़ा गया, फोड़ा गया, धवस्त किया गया। सारा करने के बाद यही अंत निकला।

प्रश्न : बाबाजी आज कल pyramid है ना चुंबकीय पत्थरों से ना बना के केवल लकड़ी से ही बनाये जा रहे हैं या कुछ भी दूसरी चीज़ से बनाया है, उसमे भी वोही effect आता है।

उत्तर : वो ठीक है, effect आता है तो यहाँ चौहटे में एक मुर्दे को रखा जाय। देखो उसमे दो technique है, वो वहाँ जो जितने भी mummies हैं, जो मृतक के ऊपर लेप करने की एक निश्चित लेप है। वो जो अभी प्रचलित process नहीं है वो technique प्रचलित नहीं है, एक ये है। दूसरा यही है, जो रचना है।

प्रश्न : रचना granite पत्थर से बना है, फिर क्या है?

उत्तर : देखिए यदि आप जो pyramid आकार की एक मंडप बना दो, उसमें सब्जी रखो, सूखता है कि नहीं

सूखता है। जो pyramid जैसा नहीं है उसी के बगल में रखकर के देखो दोनों एकसाथ सूखते हैं कि नहीं सूखते हैं।

इसको देखने में क्या देर लगता है भाई।

प्रश्न : बाबा जो प्रयोग किया गया इसमें जो granite का उपयोग किया गया उससे जो pyramid बनाया गया उसमें बहुत ज्यादा मतलब अच्छा..।

उत्तर : उसमें result है, होगा। इसको सब देखा जा सकता है कहने का मतलब। ठीक है। इसको अपन यहाँ रोकते हैं, उसके बाद आप हम परामर्श करेंगे मंगल मैत्री से ठीक है?

प्रश्न : अभी तो ऐसा हो गया जैसा सिर दर्द कर रहा है तो pyramid के आकार की टोपी को पहन ली, और उस टोपी को पहन लिया तो सिर दर्द दूर हो जाएगा।

उत्तर : ऐसा सोचते हैं, जैसा मणि पहनते हैं, वो पहनते हैं वो भी एक प्रयोग है, उसमे क्या है? अभी-अभी चुंबकीय चिकित्सा की एक बहुत बड़ी भारी हो हल्ला हुआ आप सुने ही होंगे। नहीं सुने हो? सुने हो, ये सब तो संसार मे चलता है। अब तो reiki से ही सब ठीक होने वाला है। हम पहले से, पहले से हम ध्यान से बहुत सा लोगों को ठीक कर दिया। वो भी ऊपर चले गए। तो ये सब बातें हम करते ही आए हैं। कोई कर्म बचाए नहीं हैं हम, मेरे अनुसार। आप जितना कल्पना करोगे सकल कर्म करके बैठे हैं। ठीक है। उसके बाद की हमारा वक्तव्य ये है, आदमी समझदारी से सुखी होता है, बेवकूफी से दुखी होता है। बढ़िया है ना भाषा? बस इतनी ही बात है।

6. आकर्षण, प्रत्याकर्षण और गति

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 22:41-42:35*

प्रश्न : आकर्षण तथा प्रत्याकर्षण से कंपन है, उसकी व्याख्या कर दीजिए?

उत्तर : इसको कहाँ देखा जाए, कैसा देखा जाए? कैसा समझा जाए? ये बात आता है। परमाणु में मध्यांश और आश्रितांश की बात आप हम स्पष्टतया समझ चुके हैं। जब कभी आश्रितांश, मध्यांश से दूर भागने लगते हैं, उनमें तो आकर्षण रहता ही है। किसमें ? मध्यांश से आश्रितांशों के साथ आकर्षण बल बना ही रहता है। ठीक है, इसीलिए नियंत्रित रहते हैं। वो नियंत्रण से बाहर जाने के स्थिति में, उसमें प्रत्याकर्षण होता है। कहाँ से? ये मध्यस्थ बल प्रत्याकर्षण के रूप में अपना बल को डालता है। उसमें आकर्षण निहित है ही है, आश्रितांशों में आकर्षित होने का धार निहित है ही है। वो पर्याप्त ना होने के आधार पर ये मध्यस्थ बल को प्रत्याकर्षण बल में नियोजित करता है। फलस्वरूप वो निश्चित अच्छी दूरी में वापस आ जाता है। दूसरा प्रक्रिया, वोही परमाणु में प्रक्रिया होती है, जो पास में आ जाते हैं। तो उस स्थिति में आकर्षण बल को, परमाणु में निहित जो बल होती है, वो प्रत्याकर्षण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। माने अच्छे दूर में पहुँचने के लिए मध्यस्थ बल जो है ना विकर्षण बल को डालता है, तब ये प्रत्याकर्षण बल में परिवर्तित हो करके नियंत्रित हो जाते हैं। परमाणु के स्थिति में ये है।

तो व्यवहार में आकर्षण, प्रत्याकर्षण, ये क्या होता है? इससे कंपनात्मक गति पैदा होता है बताया। कंपनात्मक गति उत्सव है, कंपनात्मक गति सदा ही एक प्रकार से नृत्य है, नृत्य होना, खुशहाली का द्योतक है, नियंत्रित होने का द्योतक है, स्वभाव गति में आने का द्योतक है, हँसी का द्योतक है, खुशी का द्योतक है। ये ऐसा बनता है मानव भाषा में। उसी को मानव के संदर्भ में सोचा जाए, जब कभी भी हम किसी बात को, जैसा अभी बताया, परमाणु के बारे में, आकर्षण-प्रत्याकर्षण के बारे में बताया जिसके फलस्वरूप वो परमाणु में अपने आप से कंपनात्मक गति पैदा होता है, फलस्वरूप परमाणु अपने स्वभाव गति में होना पाया जाता है। ये चीज यदि मनुष्य को समझ में आता है, एक परमाणु और मनुष्य के परस्परता में एक सुखद सुंदर उत्सव होता है कि नहीं होता है? वो क्या हो गया अपने में? तो समझने मात्र से, समझ की वस्तु एक है "परमाणु", उसकी और समझने वाली वस्तु की बीच में जो दूरी है, वो घटकर एक संगीतमय स्थिति में आते हैं, उसका नाम है, समझदारी।

यदि ये साक्षात्कार नहीं होगा, बोध नहीं होगा, अनुभव नहीं होगा, हमारे में वो खुशहाली होती नहीं। अध्ययन, बोध, अनुभव उसके बाद प्रमाणिकता की हालत आती है। हम अध्ययन से अध्ययन करने के क्रम में ये पहला आरंभिक वस्तु है "शब्द", उसके बाद आता है, उसका परिपूर्ण "वस्तु", शब्द से इंगित वस्तु। इंगित वस्तु हमारे स्मरण से चलकर साक्षात्कार में उदय होना, इसका नाम है पहला स्थिति। दूसरा स्थिति अध्ययन का, वो पूरा का पूरा स्वीकृत हो जाना, सदा-सदा के लिए जीवन में, इसी का नाम है संस्कार, बोध। वस्तु बोध हो गई, बोध होने के पश्चात होता है अनुभव। अनुभव किस बात के लिए है, प्रमाणित करने, बोध होने के बीच की तृप्ति बिन्दु का नाम है अनुभव। बोध को हम प्रमाणित करते हैं, और प्रमाणित करने का क्रिया और बोध क्रिया की बीच में जो तृप्ति बिन्दु है, इसका नाम है "अनुभव"। क्या बात है! इसमे आकर्षण प्रत्याकर्षण होता ही है। जैसा हम किसी वस्तु को देखने जाते हैं, नहीं तो

आकर्षण में रहता हूँ मैं स्वयं, यदि जब हम तृप्त होने लगते हैं, तब प्रत्याकर्षण में परिवर्तित हो जाते हैं। प्रत्याकर्षण का मतलब वो सारे-सारे वस्तु हमारा बुद्धि में निहित हो जाता है। इसका मतलब होता है, वस्तु का स्वभाव, धर्म, प्रयोजन निहित हो जाना। ये समझ है, ये जब तक नहीं होता है, तब तक हम समझे कहाँ हैं। शब्दों के साथ समझ का प्रमाण होता नहीं, वार्तालाप हो सकता है, चर्चा हो सकता है, घटना के साथ अपना किया हुआ चर्चा का एक सांत्वना लगाने वाली काम होता है, प्रमाण तो होगा नहीं। अभी आज सवेरे जो आपके साथ जो शुरुवात हुई थी मिश्रा जी बात जो सवेरे की बात थी।

तृप्ति को पाने का जो संकेत है, वो कंपन है, मनुष्य में क्या कहोगे उसको? "उत्सव"। वो तृप्त बिन्दु स्वयं मे एक कंपन की अवस्था है। किसकी?जो बोध और प्रमाण के बीच की एक कंपन वस्तु है, जो आत्मा में ही होता है, नित्य वस्तु है, निरंतर वो बना ही रहता है। एक बार वो तृप्ति बिन्दु मिलती है, वो तृप्ति निरंतर आवंटित होने के लिए तैयार बैठा ही रहता है। इस ढंग से अक्षय बल का वैभव उसमें तैयार होता है, जीवन में। जीवन के अनुभव के क्षणों में, अनुभव के क्रिया में, निरंतर ये उत्सव बना रहता है।

तो इसमें क्या हुई आकर्षण, प्रत्याकर्षण दोनों का तृप्ति बिन्दु मिल गया, तब वो कंपन हुआ। वो कंपन के against में वो परमाणु में क्या हो गयी? स्वभाव, गति आई। अपने में क्या चीज़ है? वो प्रमाणित हो गया, इसका तृप्ति मिल गई, इस ढंग से आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल में कंपनात्मक गति होती है। यही कई जगह में अपना हर रोजमर्रा में अनेकानेक जगहों में इसको पहचाना जा सकता है।

प्रश्न : प्रत्याकर्षण और आकर्षण से वर्तुलात्मक गति है?

उत्तर : अब जड़ प्रकृति की बात हो गई और मनुष्य के कार्य प्रकृति की बात हो गई। तो किसी वस्तु के साथ हम आकर्षित होते हैं। जिसके ओर आकर्षित रहते हैं, वो प्रत्याकर्षित रहता है, उसका प्रतिक्षा किए रहता है वो आकर्षण। जो वस्तु जाता है, उसका प्रतीक्षा, आगे की आकर्षण उसका प्रतिक्षा किया रहता है, इसका नाम है प्रत्याकर्षण। जैसा यहाँ हम आए, यहाँ प्रतिक्षा बनी ही रही।

प्रश्न : हम लोगों में आपके प्रति प्रत्याकर्षण है?

उत्तर : प्रत्याकर्षण बनी रही, आकर्षण हमारे में बनी रही।

प्रश्न : आप में आकर्षण हम में प्रत्याकर्षण?

उत्तर : हाँ, ये दोनों मिलकरके पुनः गति बन गई। क्या गति बन गई? कार्य गति बन गई, कार्य गति के अंतर्गत अभी अपन गुजर रहे हैं। ये जितने भी विचार से लेकर, कार्य से लेकर, अभिव्यक्ति से लेकर, प्रमाण से लेकर, जितने भी कार्य हम कर रहे हैं इस समय में, वो सब कार्य गति ही है।

प्रश्न :बाबाजी ये सूत्र जड़ वस्तुओं के लिए है या चैतन्य के लिए?

उत्तर : अभी हम मनुष्य के लिए इसको बताया, आप हमारे बीच में इसको बताया, वोही चीज़ एक जड़ परमाणु में है। ये सूत्र है, ये सूत्र को व्याख्या जीवन करता है, परमाणु करता है, अणु करता है, अणु रचित पिण्ड करता है, धरती करता है, धरती की हर जर्रा करती है। व्याख्यायित किया ही रहता है। मूलतः जो मूल बल है, सत्ता है। सत्ता आपमें, मुझमें परमाणु में सब में पारगामी होने के कारण से मूलतः जो है ना, मूल ताकत है, वो सत्ता है। सत्ता में हर वस्तु बल सम्पन्न होने के आधार पर कार्यशील होने के लिए प्रवृत्ति है। कार्यशील करता कैसा हो जाता है भाई ? उसमें आकर्षण, प्रत्याकर्षण का योग होना आवश्यक है। जैसा श्रम और गति का आकर्षण, प्रत्याकर्षण होने पर एक कार्य की स्वरूप बनता है। गति और परिणाम का योगफल होने से, आकर्षण, प्रत्याकर्षण होने से कार्य गति का स्वरूप दूसरा होता है। इस विधि से श्रम, गति परिणाम क्रिया का अभिव्यक्ति है, व्याख्या है। क्रिया है उसका मतलब ही है श्रम, गति परिणाम। तो सदा-सदा श्रम, गति, परिणाम से सम्पन्न प्रत्येक परमाणु उत्सावित होने की विधि आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल में होते ही रहता है। निरंतर होता रहता है।

इसमें दो इकाई नहीं हैं, एक ही इकाई की एक अंग दूसरा अवयव के साथ। जैसा आप ही बैठे हो, आपका आँख के साथ नाक, नाक के साथ हाथ, ये एक दूसरे के साथ आकर्षित, प्रत्याकर्षित होने पर कार्य होगा की नही होगा? शरीर आपका एक ही है। उसी भांति परमाणु एक ही है। परमाणु में ही श्रम गति, परिणाम ये तीनों का तीनों सदा-सदा क्रिया का व्याख्या के रूप में अभिव्यक्त है। नित्य अभिव्यक्त है, नित्य प्रकाशमान है, ये कहीं रूकते ही नहीं हैं। इसको कहीं रुका हुआ जगह को आप हम सारा संसार लग जाओ तो भी नहीं मिलेगा। निरंतर ये रहता ही है। क्या चीज़- विकासशील परमाणुओं में श्रम, गति, परिणाम । इसमें कम से कम दो की योगफल में, आकर्षण, प्रत्याकर्षण, फलस्वरूप दो कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति बना ही रहता है।

ये कंपनात्मक गति की बात हुआ। काहे के लिए कंपनात्मक गति? कार्य में व्यक्त होने के लिए, दूसरा वर्तुलात्मक गति की बात, जो आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल में कम्पनात्मक गति, प्रत्याकर्षण और आकर्षण के योगफल में वर्तुलात्मक गति ये लिखा हुआ है। वर्तुलात्मक गति होने के लिए जो आकर्षण, प्रत्याकर्षण हुआ, उससे जो कंपन बना, उसका प्रयोजन के रूप में जो गति बनता है, उसका नाम है, वर्तुलात्मक गति। इस ढंग से कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति के संबंध को आपको बताया। एक परस्परता में गति की बात, परस्परता नहीं है तो कोई गति की बात ही नहीं है। शून्य में कोई गति की बात ही नहीं है, शून्य कोई गति ही नहीं है, ना तरंग है।

एक इकाई में अंग, प्रत्यंगों के परस्परता में गति की बात कर रहे हैं। परमाणु के एक अंश, दूसरा अंश इन दोनों का योगफल में एक के आकर्षण, दूसरा का प्रत्याकर्षण दोनों मिल करके एक कंपन बनता है। और दूसरे विधि से, इसका विलोम विधि से वर्तुलात्मक गति बन जाता है। इस ढंग से कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति ये दोनों ये कार्य गति, कार्यशीलता का ही परिणाम है। जैसा हर परमाणु कार्यरत है, क्रियाशील है, किस आधार पर? बल सम्पन्नता वश, ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता, चुम्बकीय बल सम्पन्नता वश है, क्रियाशील। क्रियाशीलता के निरंतर प्रेरणा विधि, कार्य विधि 2 अंग हैं। अपने में ही कार्य विधि, अपने में ही प्रेरणा विधि। जैसा नाक खुजवाया, हाथ जा करके उसको खुजवा देता है। जबकि एक ही शरीर है, एक ही यूनिट है। गले में कोई चीज़ अटक गई, उसके आस-पास के पूरे-पूरे membrane हैं, वो इसको ठीक करने के लिए खखारेंगे, खासेंगे, पानी पियेंगे, जो जो करना है, शरीर का अवयव सब मिल करके उसको ठीक करने में लग जाते हैं। कोई एक जगह कट गया, समझ लो, कट गया तो उसको

सब शरीर की सारे फोर्स लगता है, उसको जल्दी ठीक करो, जैसा हड्डी टूट गया, तो उसको जोड़ने के लिए पूरा ताकत लग जाता है। ये क्या चीज़ है? ये कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति के योगफल में जो स्पंदन बनता है, उसका ये सब प्रदर्शन है, प्रमाण है। इस ढंग से हम हर जगह में प्रवृत्ति को, कंपनात्मक गति के फलस्वरूप वर्तुलात्मक गति को, वर्तुलात्मक गति के फलस्वरूप हम कंपनात्मक गति को पाकर हर कार्य संपादन करते हैं।

जड़ परमाणुओं में परिणाम शीलता भी है, श्रम शीलता भी है और गतिशीलता भी है। परिणाम शीलता, गति के लिए, गति पुनः परिणाम के लिए एक दूसरे की प्रेरक होने की विधि बताया।

प्रश्न :दोनों गतियाँ एक साथ रहेंगी? एक दूसरे के पूरक के रूप में?

उत्तर : हाँ, इसके मूल में unit के रूप में क्रिया, एक वस्तु में उसका पूरा Quanta यदि पहचानना है, क्रिया है, क्रिया सहित ही एक क्वांटा है। क्रिया को अलग करके कोई Quanta आपको मिलने वाला नहीं है। ये सोचना निष्क्रिय क्वांटा कोई चीज़ होता है, वो होता ही नहीं है। यही आदमी भ्रमित होने की बात है, तो मूलतः कोई भी मात्रा यदि हम पहचानना है, वो गति सहित ही है, माने क्रिया सहित ही है। क्रिया का व्याख्या श्रम, गति, परिणाम है, जड़ संसार में। और चैतन्य संसार में क्या है, भ्रम और जागृति ही है, और कुछ भी नहीं है। जड़ संसार में, रासायनिक भौतिक संसार में, क्रिया का व्याख्या श्रम, गति, परिणाम ही है,और कुछ चौथे प्रकार की चीज़ होता ही नहीं है। चैतन्य संसार में जो है भ्रम और जागृति ही है, और कुछ होता ही नहीं है। इतने में तो सारा फैसला है। इस अनन्त संसार का फैसला इतने ही essence में बैठा हुआ है।

प्रश्न : श्रम, गति, परिणाम को भी थोड़ा बता दीजिए?

उत्तर : देखो बेटा पुनः वहीं आते हैं, ऊर्जा सम्पन्नता की जगह में। ऊर्जा सम्पन्नता कैसे है? क्योंकि सत्ता पारगामी है। सत्ता को रोकने वाले, सत्ता को arrest करने वाले, सत्ता को अवरोध करनेवाली, वस्तु इस धरती पर एक भी नहीं है। पहले उस सत्य को अपने में अवधारणा में लाना पड़ेगा। ये आने के बाद क्या हो गया? हर वस्तु एक-एक है। एक-एक होने का क्या व्याख्या है? उसके सभी और सत्ता है, सत्ता में डूबा ही है हर एक एक, दो चीज़ हो गई। प्रत्येक एक की सभी और सत्ता का होना ही सीमा है, सीमा का और कोई मतलब नहीं है। दूसरा बात क्या है? हर एक वस्तु सीमित रूप में रचित रहना, दूसरा व्याख्या ये बनता है। कितना लम्बा, चौड़ाई में रचित हो गया, एक ये व्याख्या है, दूसरा व्याख्या रचित है, इसका पहचान क्या है? उसके सभी ओर सत्ता का होना ही है, सभी ओर सत्ता होना ही एक का नियंत्रण रेखा है।

7. प्रकाश एवं ताप

विडिओ संदर्भ देखें: *video 13, time 01:54-36:22*

प्रश्न : प्रकाश क्या चीज़ है?

उत्तर : प्रकाश जो बात है, इतना साधारण बुद्धि से बनेगा नहीं, थोड़ा ज़्यादा बुद्धि लगाना पड़ेगा! प्रत्येक वस्तु प्रकाशमान है। हर वस्तु प्रकाशमान है, एक परमाणु अंश से परमाणु, परमाणु से अणु, अणु से अणु रचित पिण्ड, हर प्राणकोषाएँ, प्राणकोषा से रचित हर रचना प्रकाशमान है। इतना ही नहीं है, व्यापक वस्तु भी नित्य वर्तमान है। प्रकाशमान है एक एक वस्तु और व्यापक वस्तु वर्तमान है। व्यापक वस्तु नित्य वर्तमान है, एक एक वस्तु नित्य प्रकाशमान है। पहचान प्रस्तुत करता रहता है अपना।

प्रश्न : क्या व्यापक अपना पहचान प्रस्तुत नहीं करता ?

उत्तर : करता है ना, वर्तमान पहचान नहीं है, तो क्या है? प्रकाशमानता सीमायें हैं, व्यापकता वर्तमान है। हर एक वस्तु वर्तमान भी है और प्रकाशमान भी है, अपने अलग पहचान को प्रस्तुत करता है। तो इस ढंग से काम है। इस वर्तमानता और प्रकाशमानता का मूल में विज्ञान उस जगह को टटोल पाया, नहीं टटोल पाया, हम नहीं जानते हैं। मूल तत्व है, व्यापक वस्तु में एक एक वस्तु सम्पृक्त रहना, सम्पृक्त रहने का फलस्वरूप ही है इनमें ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता बना रहना। ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता बने रहने का प्रमाण ही है क्रियाशीलता। क्रियाशीलता का व्याख्या ही है श्रम, गति, परिणाम। ये श्रम गति परिणाम के साथ इन पाँचों शक्तियों का पाँचों पहचान, जैसा कि ध्वनि, ताप, चुम्बकीयता, भार, विद्युत का पहचान मनुष्य को है। इन पाँचों प्रकार की पहचान एक ही परमाणु में होता है, हर परमाणु में होता है। इसीलिए हर वस्तु, इस अस्तित्व में जितने भी वस्तु आपको दिखता है बड़ा-छोटा, सभी का सभी परमाणु का ही रचना है, मूलतः।

इन सभी पाँचों चीज़ होने के आधार पर वो एक दूसरे को पहचानता भी है, स्वयं का पहचान दूसरा करते भी हैं। इसमें अपने को तकलीफ कहाँ से आयी है? मनुष्य अपना पहचान को निर्धारित नहीं कर पाया। इसी आधार पर सारे तकलीफ germinated है। प्रकाशमानता = प्रकाश, एक सूत्र आ गए। प्रकाशमानता ही प्रकाश है। ज्यादा प्रकाश, कम प्रकाश, इसको कैसे पहचानोगे? जितना ज्यादा तप्त रहता है, उसका प्रतिबिम्बित ज्यादा प्रकाश कहलाता है। तप्त परम स्थिति में सूर्य है। सूर्य का प्रतिबिम्बित ज्यादा प्रकाश है, किसी के ऊपर प्रतिबिम्बित होता है, वो ज्यादा प्रकाश सा दिखता है। प्रकाशित रहता है ये एक बात है, सूर्य अपने जगह में प्रकाशित है। हम यहाँ धरती पर प्रकाशित हैं, सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ने से हमारा प्रकाशमानता का अर्थ दिन चौगुनी, रात चौगुनी कर देता है। हमारा प्रकाशमानता का एक को दस, दस को हज़ार, हज़ार को करोड़ भाग बढ़ा देता है। परस्पर पहचान के लिए ये बनता है।

उसके बाद और एक अड़चन आ गई - गुग्गु का आँख। गुग्गु का आँख में क्या होता है? दिन में अंधा हो जाता है, दिखता नहीं है। light phobia, जो आदमी को light phobia होता है, जानते हो? ज्यादा प्रकाश होने से आँखें

बंद हो जाते हैं (चुँधिया जाती हैं)। इसी प्रकार से उल्लू [गुग्गु]का आँख में ये प्रकाश से वस्तु नहीं दिखता, अंधा हो जाता है। ये सब बातें आपके पास विविधता रखी हुई है। कहना ये नहीं है कि ये सिद्धांत पूरा हो गया, ऐसा नहीं है। तो स्वयं में हर वस्तु प्रकाशित है, ये सही है। स्वयं में हर वस्तु प्रकाशित है, ये सही है। हर वस्तु अपने में प्रकाशमान है फल स्वरूप एक दूसरे को पहचानता है। उसका प्रमाण कहाँ से मिल गया? उसका प्रमाण अस्तित्व में रखा है, एक परमाणु अंश दूसरे परमाणु अंश को पहचाना है, तभी परमाणु के रूप में कार्य करता हुआ, हमको समझ में आता है। हरिहर।

प्रश्न : हर वस्तु प्रकाशमान है, क्या दूसरी प्रकाशित वस्तु उसके प्रकाशमानता को बढ़ा-घटा सकती है?

उत्तर : ये प्रकाशमानता को और स्पष्ट करता है, दूसरे के लिए। प्रकाशमानता उतना ही है, चाहे सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा हो, नहीं पड़ा हो, आपका प्रकाशमानता उतना ही है। और जिसको हम अंधेरा कहते हैं, उसमें भी आप वैसे ही प्रकाशमान हैं, सूर्य के छाया मे भी आप वैसे ही प्रकाशमान हैं। वस्तु का होना = प्रकाशमान। (आँखों का क्षमता नहीं है कि किसी एक स्थिति में देख पायें, किसी एक स्थिति में नहीं देख पायें)। अभी वो तमाम चश्मा बनाये हैं। अंधेरे में देखने वाला।

प्रश्न : ताप और प्रकाश दोनों को अलग-अलग स्प्ष्ट कीजिए?

उत्तर : प्रकाश ताप नहीं है, ताप को प्रकाश नहीं कहते हैं। प्रतिबिम्बन ही प्रकाशमानता है। आपका प्रतिबिम्ब ही प्रकाशित रहता है, आपका ताप प्रकाशित नहीं रहता है। ताप यदि जरूरत से अधिक होता है, तो परावर्तित होता रहता है, चारों जगह में सभी ओर बट जाता है। आपका बिम्ब का प्रतिबिम्ब सदा-सदा के लिए वैसा ही रहता है। प्रतिबिम्बिन क्रिया = प्रकाशमानता। हर वस्तु अपने सिधाई में, वैसे तो अनंत कोण सम्पन्न है हर एक वस्तु। बिम्ब का प्रतिबिम्ब होता है, हर बिम्ब रचना की फलन है। हर रचना, छोटा से छोटा रचना को अभी नाम देते हैं, तो एक परमाणु अंश ही होता है, उससे कम होता नहीं, वो भी एक रचना ही है। क्यों? उसको गणितीय विधि से विखंडित किया जाता है। वो भी एक रचना ही है। ये शरीर भी एक रचना है, अनेक टुकड़े का एक टुकड़ा। एक धोती, अनेक टुकड़े का एक टुकड़ा, एक दीवार अनेक टुकड़े का एक टुकड़ा, एक धरती अनेक टुकड़े का एक टुकड़ा। हरिहर!

प्रश्न : अभी एक बहुत प्रचलित मान्यता है, कि प्रकाश सरल रेखा में चलता है, प्रकाश विशेष प्रकार के कणों से मिलकर बना है, और वो एक सरल रेखा में चलते हैं?

उत्तर : ठीक है, वो ऐसा देखते होगें, ऐसा व्याख्या करते होगें, कण चलता है कि धूलि चलता है, वो स्वयं में चल देता है, उसके बारे में बाद में बात करेगें। हमने जो देखा है, समझा है, हर बिम्ब का प्रतिबिम्ब होता है, हर बिम्ब एक रचना है। एक रचना दूसरे रचना को पहचानने योग्य रहता है, इसी का नाम है प्रतिबिम्बन, जैसा आपका रचना को हम पहचाने, वो ही चीज़ है आपका प्रतिबिम्बन। ये विधि परमाणु अंशों से लेकर सभी बड़े-बड़े ग्रह गोलों तक है। धरती सूर्य को पहचानता है, तभी अपना एक गतिपथ को बनाया है, निश्चित व्यवस्था को देता ही जाता है, ये सब करते ही हैं। सूर्य का प्रतिबिम्ब धरती पर है, उसी प्रकार धरती का प्रतिबिम्ब सूर्य पर भी रहती है। प्रतिबिम्ब गति नहीं है, यहीं से प्रकाशवाद जो हम प्रस्तुत किए हैं, उसमें और असलियत में क्या दूरी है, ये पता लगता है। प्रतिबिम्ब ही

प्रकाश है, प्रतिबिम्ब गति होती नहीं। नित्य स्थिति है ये, बिम्ब का प्रतिबिम्ब रहता ही है। प्रतिबिम्ब दौड़ना नहीं है। बिम्ब होता है तो उसका प्रतिबिम्ब उसके सीधा line में बना ही है। कितने कोणों में बना है? अनंत कोणों में बना है। प्रत्येक एक अनंत कोण सम्पन्न है। इस विधि से प्रतिबिम्ब सभी ओर रहता ही है।

प्रश्न : एक bulb के सामने तीन cardboard के टुकड़े रख देते हैं। तीनों के बीच में एक एक छेद रहता है। जब वो तीनों छेद एक सीध में हो जाते हैं, तो तीसरे cardboard के बाहर भी वो bulb का प्रकाश दिखता है, परन्तु बीच वाले को यदि हम थोड़ा सा हटा देते हैं, या किसी को भी हटा देते हैं जिससे वो सरल रेखा जो बन रही थी, तीनों छेदों में वो हट जाती है, तो ऐसी स्थिति में फिर उसका प्रकाश आखरी तक पहुँचता नहीं है।

उत्तर : इस आधार पर ये लिखा है, कहीं भी सिधाई वो ही है, जिसका प्रतिबिम्ब पड़ सके। जैसा आप खड़े हो, ये दीवाल आपके सरल रेखा में है, मैं सरल रेखा में, चारों तरफ वस्तुएँ सरल रेखा में – सभी ओर आपका प्रतिबिम्ब है। तो आपको यहाँ इतने में घेर दिया जाए, वो जो घेरा हुआ वस्तु के ऊपर आपका प्रतिबिम्ब सभी ओर रहता है, ऐसा है। उस बुद्धिहीनता को आप कैसे–कैसे बताते हो, आप ही सोच लो। ये सब आदमी को गुमराह बनाने की हो गई की नहीं? ये प्रयोग का तरीक़ा आदमी को गुमराह बनाने की है।

प्रश्न : प्रकाश नहीं है, या ताप नहीं पहुँचा है?

उत्तर : ताप की बात कह ही नहीं रहे हैं। सूर्य का प्रतिबम्ब पहुँचना।

प्रश्न : ये बताइयें bulb का प्रतिबिम्ब उधर क्यों नहीं पहुँच रहा है?

उत्तर : bulb का प्रतिबिम्ब किसी अपारदर्शक वस्तु के ऊपर प्रतिबिंबित होता है। आपका भी वोही हसरत है, सूर्य का भी वैसे ही हसरत है।

प्रश्न : मतलब प्रतिबिम्ब तो सरल रेखा में चलेगा?

उत्तर : सभी ओर सरल रेखा है, तुम जो चाहते हो वोही सरल रेखा नहीं है।

प्रश्न : जैसे तीन cardboard रखें है, पहले cardboard से दूसरे cardboard तक चला गया हटाने पर भी, फिर घूम के जा सकता था।

उत्तर : सभी ओर सीधा है, कोई भी प्रतिबिम्ब कोई भी अपारदर्शक वस्तु के ऊपर पड़ता है, प्रतिबिम्बित होता है।

प्रश्न : उसका अनुबिम्ब बनता है या नहीं?

उत्तर : बनता है ना। वो बनने की विधि को अध्ययन करने के और आगे पड़ाव पड़ता है।

प्रश्न : अभी आप जो बोल रहे हैं कि प्रतिबिम्बन ससम्मुख होता है?

उत्तर : आप सभी ओर ससम्मुख है ना। आप अपने में सम्पूर्ण हैं। आप सभी ओर से ससम्मुख हैं। अभी अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब की बात कर सकते हैं। वो genuine है।

प्रश्न : जैसे यहाँ पर एक प्रकाश का स्त्रोत रखते हैं, वो दरवाजे के बाहर जाता है, तो दरवाजा जितना चौड़ा है, वो प्रकाशित भाग उससे थोड़ा ज्यादा चौड़ा होता है, ऐसा नापे हैं, तो ऐसा मानते हैं कि ये जो प्रकाश है किनारे से थोड़ा मूड़ गया, बाहर की तरफ?

उत्तर : किसी का प्रतिबिम्ब, उसका अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से ये सब व्याख्यायित हो जाते हैं। अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब के बारे में जो आपने जिज्ञासा की थी, उसके लिए अपने को एक दृग बिन्दु नाम की चीज़ को पहचानना पड़ेगा। दोनो आँखों का मिलने पर एक बिन्दु होती है, उस बिन्दु का नाम है दृग बिन्दु। दोनों आँखों की जोड़ जहाँ होता है।

प्रश्न : ये मस्तिष्क के अंदर होता है या बाहर?

उत्तर : आँखों के बाहर होता है ये दृग बिन्दु। भीतर होता है दृग मूल। जो ज्ञानवाही तंतु से जुड़ा रहता है, दृग मूल। दृग बिन्दु बाहर होता है। दृग बिन्दु कहाँ टिकता है? किसी ना किसी बिम्ब के ऊपर जा के टिकता है, अभी ये light के सामने कोई चीज़ आप गेंद रखा, आप light देखने जाओगे तो वो गेंद के ऊपर आपका दृष्टि रूकती है। वो दृष्टि रूकने के पश्चात ये जो प्रकाश आ रहा है, वो इस light को पीछे ले के चले जाएं, और गेंद छोटी होती ही दिखती है। क्यों दिखती है? वो जो गेंद के बाहरी भाग से आई हुई प्रकाश जो है, अनुबिम्ब प्रत्यानुबिम्ब विधि से इन दोनों की दूरी की जो अणु होते हैं, उस पर प्रतिबिंबित हो जाते हैं। अनुबिम्ब क्या है? किसी बिम्ब को लेकर दूसरे के ऊपर उस प्रतिबिम्ब को प्रस्तुत करना, स्थापित करना।

प्रश्न : दो प्रतिबिम्ब, अपना भी किसी दूसरे का भी, दोनों प्रतिबिम्ब पड़ता है, उसका नाम अनुबिम्ब।

उत्तर : ठीक है। उसी प्रकार प्रत्यानुबिम्ब भी ऐसे ही, होते-होते ये जितना दूरी को जितना चौड़ाई को गेंद घेरा था वो छोटा होता चला जाता है। क्यों होता है? सभी ओर से ये प्रकाश का अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब वो प्रकाश को उन कणों में, उन अणुओं के ऊपर स्थापित कर देते हैं। ये सब प्रकाशमान है, ये सब उजाला है, ऐसा लगने लगता है। किन्तु गेंद उतना ही रहता है। हमको देखने में दूर जाने से छोटा दिखता है, पास आने से गेंद का आकार दिखता है। (जिस जगह पर उसका आकार बिल्कुल बराबर दिखता है) बस वोही दृग बिन्दु है।

प्रश्न : एक और चीज़ है pen को सामने लाते-लाते एक ऐसी स्थिति आती है, कि अब वो दिखता नहीं है?

उत्तर : वो तो आँखों के बिल्कुल पास आ जाने से नहीं दिखेगी। दृष्टिपाट इसका नाम है। दृष्टिपाट, दृग बिन्दु दोनों का योग होने पर वस्तु दिखती है। दृष्टिपाट जो होती है, वो सीधा-सीधा कितना दूर तक फैल सकता है, दोनों तरफ इधर 45°, उधर 45°, 90° को cover किया रहता है। दोनों आँखें मिलकर 90° की कोणों में भागती रहती है। तभी और दूर जा करके बहुत सारा विशाल आकाश दिखाई पड़ती है। ये है दृष्टिपाट, उसके अंदर जो एक चीज़ आता है, जैसा सूर्य उदय हुआ, सूर्य को देखते हैं, वो दृगबिन्दु हो गई। अभी गेंद का बात बताया, ये दृग बिन्दु की वस्तु हो गई।

वो गेंद को हम और पास लाया, और पास लाया, और पास लाया, जो हमारा दृग बिन्दु जितना दूर पर उसको बराबर देख सकता था, जितना लम्बा है, चौड़ा है, उससे पास आने के बाद वो हमारे दृष्टिपाट को ढ़क देता है, माने हमारा दृष्टिपाट यहाँ आते तक में जितना चौड़ा है, उससे ज्यादा वो वस्तु बन जाता है। बन जाने के बाद,पुनः पूरा पास में आने के बाद वो वस्तु भी नहीं दिखता है।

वस्तु सभी ओर सत्ता का घेरा होना चाहिए, तभी दिख पाता है, नहीं तो नहीं दिखेगा। वस्तु दिखने के लिए ये सभी ओर से दृष्टि को दृष्टिपाट के अंदर होना चाहिए, दृष्टिपाट से छोटा होना चाहिए, तभी वस्तु दिखेगी, नहीं तो दिखेगी नहीं। दृष्टिपाट से बड़ा होने की कोई चीज़ है तो विशालता ही है, अभी हम 90° के बात किया, ये इस 90° को चार बार घुमा देने से 360° हुई। ये 90° में इस सारे विशालतम वस्तुएँ कितना आ पाते हैं, उसको नापने की बात आती है, जब हमारे दृष्टिपाट में आने वाली पूरा दूरी को यहाँ से करोड़ मील दूर के बाद नापने जाओगे, तो कितना होगा, आप ही सोच लो, अरब मील के बाद जो होता है, उसको सोच के देखो। दृष्टिपाट हमारा फैलती चली जाती है, दृग बिन्दु छोटी होती चली जाती है, यदि हमारा दृग बिन्दु के अन्दर जो वस्तु आता है, वो दूर जाते जाते, छोटा होता है, जबकि दृष्टिपाट चौड़ा होता जाता है, और पास में आने से हमारे दोनों आँखों के बीच की दूरी से यदि चीज़ बड़ी हो जाती है, वो दिखता ही नहीं।

दूसरा इन दोनों आँखों के मिलन बिन्दु के पहले कोई निश्चित दूरी है वहीं तक वस्तु दिखती है, उसके बाद दिखता ही नही। इस ढ़ंग से दृष्टि और प्रकाशमानता, प्रकाश की बात बनती है। हमारा दृष्टि में प्रतिबिम्ब आना ही देखने का मतलब हुआ। कोई भी प्रतिबिम्ब हमारे आँखों में आने से, नहीं आने से देखना नहीं हुआ। नहीं दिखता है, उसका दो स्थिली हो गई, इतना दूर हो गया, वो चीज़ ही नहीं दिखा, या इतना पास हो गई तभी भी नहीं दिखा। वस्तु तो रहता ही है, आँखों में से देखने के लिए बहुत सारा ये components है। आँखों से निश्चित दूरी पर भी होना है, निश्चित दूरी तक ही होना है, इसके बाद में भी नहीं दिखेगा, इससे पहले भी नहीं दिखेगा। ऐसा सिद्धान्त बनता है। हरिहर!

प्रश्न : आँखों से देखने का मतलब क्या है? उसमें दोनों चीज़ की आवश्यकता है, एक तो प्रकाशमानता और दूसरा ताप?

उत्तर : प्रकाशमानता, आकार आयतन दो चीज़।

प्रश्न : आँख से जब हम देखते हैं, उसमें एक प्रकाशमानता की बात है, और दूसरा ताप की बात है?

उत्तर : आँख में ताप का लेन-देन नहीं है। ताप सभी ओर समान भागता रहता है। ताप सामान्य होने के लिए दौड़ता है। प्रतिबिम्ब को कहीं सामान्य नहीं होना है। इन दोनों का अंतर को रखिए। प्रतिबिम्ब को कहीं भी सामान्य अथवा आवेश दोनों नहीं होना है, प्रतिबिम्ब, प्रतिबिम्ब है, ना ज्यादा है, ना कम है।

प्रश्न : आँख से जो हम देख रहे हैं, उस वस्तु का दिखना नहीं दिखना, इस पर निर्भर करता है कि वो तप्त है या नहीं। उस आधार पर हम इन आँखों से देख पाते हैं या नहीं देख पाते।

उत्तर : स्पर्शेंद्रिय का यदि उपयोग नहीं करेगें, तो आँख मे भी तो स्पर्शेंद्रिय हैं। स्पर्श करने की बात आँख में भी है। इस ढंग से ताप आँखों पर भी पहचानने में आए। किन्तु आँख पर ताप का कोई प्रतिबिम्ब नहीं होता है, प्रभाव होता है।

प्रश्न : मैं कोई चीज़ को देख पाता हूँ या नहीं देख पाता हूँ, अंधेरा होने का क्या मतलब ?

उत्तर : अंधेरा होने का मतलब है, हमारा आँख देख नहीं पाना। इसका मतलब ये हुआ, किसी ना किसी एक निश्चित प्रकाशमानता को हम देख पाते हैं, निश्चित प्रकार की प्रकशमानता को देख नहीं पाते हैं।

प्रश्न : प्रकाशमानता तो उतना ही है वस्तु में?

उत्तर : हर वस्तु भिन्न-भिन्न आकार प्रकार वस्तुओं से रचित बिम्ब है।

प्रश्न : यदि घनघोर अंधेरे में एक चीज़ मुझे पढ़ने में नहीं आता है, और अभी पढ़ने में आ रहा है, इसका क्या अंतर है?

उत्तर : उसका अंतर हमारा आँख का ही capacity की बात है, हमारा आँख की योग्यता इस प्रकार की परिस्थिति में पढ़ने योग्य है, इससे यदि भिन्न होता है तो नहीं पढ़ पाता है।

प्रश्न : ये जो परिस्थिति बनी ये दिन में या रात में किस कारण से बनी? किसी तप्त पिंड के कारण ये परिस्थिति बनी हुई हैं?

उत्तर : हाँ ठीक है।

प्रश्न : तो ये निष्कर्ष निकला ना हम जो देख रहे हैं आँख से अभी उसमें दोनों चीज़ काम कर रही है, एक तो वस्तु की प्रकाशमानता, दूसरा उसका तप्त होना। इस मात्रा में तप्त होना कि आँखों की सीमा में आ जाए, उससे ज्यादा तप्त होगा तब भी नही दिखेगा उससे कम तप्त होगा तब भी नहीं दिखेगा।

उत्तर : ये तो बात पहले भी हुआ ना आँखों में भी स्पर्शज्ञान है ही, किन्तु अब देखने की बात जो है, ताप नहीं है, ये वस्तु ही है, प्रतिबिम्ब ही है, ताप दिखता नहीं है आँखों को, आँखों में स्पर्श होता है। स्पर्श होना, देखना - ये दोनों में अलग-अलग प्रक्रिया है, इसको अपने को पकड़ के रखना चाहिए। ज्यादा उत्तम है। आगे चलकरके बहुत सारा composition आएगा, एक ही बात से हम थोड़े पिंड छुड़ा पाएंगे, तो करोड़ों करोड़ों परिस्थितियों में ये सिद्धान्त काम करना है।

प्रश्न : प्रकाशमानता और आँखों से देखना दोनों एक ही नहीं हैं, दोनों में कुछ और भी बात जुड़ जाती है।

उत्तर : प्रकाशमानता का मतलब, बिम्ब का प्रतिबिम्ब आँखों में आता है। ज्यादा तप्त होने पर तप्त बिम्ब जहाँ-जहाँ पड़ता है, वो जितना अच्छे ढ़ंग से प्रकाशित थी, उस प्रकाशमानता को ज्यादा बढ़ा देता है, ये दूसरा देखने के लिए

अनुकूल हो जाता है। जो काम दिखने वाला आँखों में दिखता है, जैसा मनुष्य का आँख कम देख पाता है, उसके लिए अनुकूल है ये।

प्रश्न : जैसे एक पारदर्शी काँच है, वो पारदर्शी कैसे बन जाता है? प्रतिबिम्ब उस पार कैसे जाता है?

उत्तर : पारदर्शी का मतलब क्या मानते हो? उस पार से इस पार दिख जाए, परिभाषा तो वैसे ही रखी हुई है। पारदर्शकता के आधार पर उस तरफ जो बिम्ब है, वो इस तरफ भी वैसे ही दिखता है। अपारदर्शकता का मतलब यही है, उस पार जो बिम्ब है, वो इस पार ना दिखे। काँच में वो स्वभाव है, काँच जैसा और कोई चीज़ plastic बना लो, उसमें भी वो स्वभाव है, उसी प्रकार की पारदर्शकता पानी में होता है। इसी प्रकार और कुछ वैसे चीज़ बना लें उसमें पारदर्शकता आ ही जाती है।

प्रश्न : पारदर्शकता वस्तु का गुण है?

उत्तर : वस्तु का रचना है। वस्तु का रचना के कारण है।

प्रश्न : किसी चीज़ का प्रतिबिम्ब किसी पारदर्शक वस्तु के आर पार जाता है तो ये कणों के रूप में उसको भेद के नहीं जाता है?

उत्तर : भेदता नहीं, रचना का प्रतिष्ठा है ये, उसको छेद बनाने की प्रतिष्ठा नहीं है।

प्रश्न : क्या ऐसा हुआ, काँच में उसका प्रतिबिम्ब बना, उस प्रतिबिम्ब फिर उस पार और बना?

उत्तर : प्रतिबिम्ब कहाँ बना रहता है, वो जो काँच के इस पार आ गया प्रतिबिम्ब इसी का है नाम पारदर्शी, छोड़-छोड़ करके अपन केवल घूम जाते हैं। कोई चीज़ को सम्बद्ध करके हम कहीं गम्य स्थली तक जा पाएँगें।

प्रश्न : ऐसा मानते हैं आजकल कि प्रकाश कण होता है, या कभी-कभी ऐसा भी मानते हैं तरंग होता है?

उत्तर : भ्रम है ये। प्रकाश तरंग नहीं होता है, तरंग के लिए वस्तु को होना आवश्यक है, अवस्तु कोई तरंग होता नहीं।

प्रश्न : सूर्य से यहाँ तक उष्मा आती है, बीच मे कोई कण नहीं है, काफ़ी जगह space है, और इसके बाद एक कण से दूसरे कण के बीच में जब उष्मा का संचार होता हे, तो उसके बीच मे भी सत्ता है, कोई कण नहीं है धरती में, तो एक कण से दूसरे कण तक जो उष्मा आती है, उसका विधि क्या है?

उत्तर : जो space जिसको कहते हैं, हम कहते हैं सत्ता,सत्ता में कोई चीज़ अपने रूप में ही रहता है, चाहे उष्मा हो, ठंड़ी हो, गर्मी हो, वस्तु हो, अवस्तु हो, जो कुछ भी हो, जो स्थिति हो, गति हो, उसी के स्वरूप में रहता है, सत्ता उसको ना रोकता है, ना टोकता है, ना कम करता है, ना बढ़ाता है, इस सिद्धान्त को पहले लिखो। सूर्य बिम्ब की चारों तरफ जो वातावरण है, उस वातावरण के अंतिम छोर में जो कुछ भी तापमान थी, वो ही तापमान इस धरती के अंतिम छोर के वस्तु में आता है। उसके बाद धरती के वातावरण में जो वस्तुएँ हैं, वो बट लेते हैं ताप को।

प्रश्न : ये बटते कैसे हैं?

उत्तर : बटते इस प्रकार से हैं, ऊपर से जब उतना ही आ गई ताप, ताप क्यों आता है? कम ताप जहाँ है, वहाँ खतम होने के लिए आता है। कम ताप की ओर ज्यादा ताप दौड़ता है। ज्यादा ताप जब दौड़ा, कम तप्त था धरती की छोर, वहाँ वो ताप छूआ।

प्रश्न : ताप छुआ मतलब ऐसा लगता है कि इस कण से कोई चीज़ निकलकरके उस कण में पहुँच गया, ऐसा होता है क्या?

उत्तर : सूर्य के अंतिम छोर में जो कणों के पास जितना ताप था, जितने degree की ताप था, वोही degree की ताप धरती के अंतिम छोर की कणों के साथ जुड़ा।

प्रश्न : ये जुड़ा कैसे कुछ चीज़ आया वहाँ से, चलकर कोई कण आया?

उत्तर : परावर्तन, कणों से कणों तक पहुँचने को परावर्तन कहते हैं।

प्रश्न : एक कण से दूसरे कण तक क्या कुछ चीज़ निकल के पहुँचता है या भौतिक वस्तु का आदान, प्रदान नहीं है?

उत्तर : आदान, प्रदान कुछ नहीं, वो ताप जो दौड़ता है, यहाँ वस्तु है, वहाँ वस्तु है, इन दोनों के बीच में space है, इसको गरम कर दें वो गर्मी वहाँ भी है।

प्रश्न : क्यों हो जा रहा है ये गरम?

उत्तर : इसमे कोई खाने वाला नहीं है, इसमें घटाने वाला बढ़ाने वाला नहीं है बीच में।

प्रश्न : गर्मी इसको किये हैं वो कैसे हो जा रहा है गरम?

उत्तर : इसीलिए होता है, इसके – इसके ससम्मुखता है। इसके सामने ये है, इसलिए होता है।

प्रश्न : अपने आप जैसे आप को भी बहुत ज्यादा प्रसन्नता होगी तो मैं प्रसन्न हो जाऊंगा इसी type का?

उत्तर : इसी विधि से शोक संताप भी है, ये सभी चीज़ ऐसे ही है। बहुत आसान कार्यक्रम है ये, सहज कार्य है ये।

प्रश्न : मतलब बाबा एक इकाई आवेषित हो गई है, उसके आवेश को सामान्य बनाने के लिए बाकी सब तुले हैं, उसके बाजू का जो कोई भी कण है, वो अपने आप में कुछ आवेश को स्वयं में स्वीकार लेता है, उसका आवेश कम हो जाता है। यही सहस्तित्वादी विधि है?

उत्तर : यही सहअस्तित्व का प्रमाण है, इसी विधि से हर आवेश सामान्य होने की सिद्धान्त निकलती है। नहीं तो आवेश सामान्य ही ना हो।

8. रश्मि और ताप

विडिओ संदर्भ देखें: *video 7, time 20:50-28:20*

प्रश्न : बाबाजी धरती का बल जहाँ तक काम करता है, उस के फिर आगे जाकर शून्य आकर्षण है?

उत्तर : वो अभी भाषा को बदलिए। धरती का वातावरण जहाँ तक है – उसका क्या मतलब है? धरती अपना रक्षा कवच बनाए रखा है, संतुलन के लिए अपने वातावरण को बनाता है। हर एक– एक आप अपने संतुलन के लिए आपका वातावरण बनाते हो, मैं अपने संतुलन के लिए मैं अपना वातावरण बनाता हूँ, ये अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बनाता है। ये प्रकाश अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बनाए रखा है। ये जो दिख रहा है आपको चित्र, ये अपने संतुलन के लिए अपने वातावरण को बनाए रखा है। एक परमाणु अपने संतुलन के लिए अपने वातावरण बनाए रखा है। परमाणु से रचित अणु अपने संतुलन के लिए अपने वातावरण को बनाए रखा है। उसी क्रम में ये धरती अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण को बनाए रखा है। कितना राम कथा निकल गया? ये पूरा निकल गया ना। निकल गया तो ये संतुलन के अर्थ में जो चीज़ है उसको धरती के संतुलन के लिए रक्षा कवच है। क्या रक्षा करता है पूछा? ये तो स्वाभाविक है, आदमी जात कल्पनाशील है ही है, वो तो पूछेगा ही।

उसका रक्षा के लिए ये हमने बताया है सूर्या का ऊष्मा धरती के वातावरण तक जब पहुँचता है, वो उसी के समान रहता है, सूर्य के वातावरण से disperse हुआ रहता है। सूर्य का भी एक वातावरण होगा। चंद्रमा का भी एक वातावरण होगा। सूर्य का वातावरण के अंतिम छोर में जो ऊष्मा का स्वरूप था, वो ही ऊष्मा का स्वरूप धरती के प्रथम छोर में पहुँचता है। बीच में कोई loss नहीं है क्योंकि neutralize होने के लिए कोई वस्तु नहीं है, बाँटने के लिए वस्तु नहीं है। वस्तु यदि होगा भी नगण्य है, वो radiation के रूप में जो आप कहते हो, ऐसा कोई travel करता भी होगा, उसका नगण्य बात है।पहुँचता है तो क्या होगा भाई? ये इसका नाम है किरण। उसको विकिरण कहो, किरण कहो, नाम आप रखो। ऊष्मा ही transfer हो करके आया है। ये सच्चाई है। ताप ही परावर्तित हो करके धरती के वातावरण के अंतिम छोर में छू गयी। कितना है वो ताप? सूर्य के वातावरण के अंतिम छोर में जो ताप का अनुपात था, उतना अनुपात ये धरती के अंतिम छोर को छू गया। छूने के बाद परावर्तन में ऊष्मा आबंटित होना शुरू हो गया। ऊष्मा आबंटित होने के लिए अपना रक्षा कवच को बनाए रखा है। आबंटित होते होते धरती को छूते तक में रश्मि के स्वरूप में छूता रहा। उसमें विज्ञान हस्तक्षेप किया, वो रश्मि बनने में व्यवधान पैदा किया। फलस्वरूप क्या हुआ? धरती में ताप बड़ गयी। धरती में ताप बढ़ने से जो होने वाला परिणाम है, शायद आप लोगों ने अंदाज़ा लगाया ही होगा।

प्रश्न : रश्मि और ताप में क्या अंतर है?

उत्तर : किरण और रश्मि। तो क्या होता है ताप कैसे पहुँचा है? सूर्य के प्रतिबिम्ब के रूप में पहुँ४५६७८९५चा है, जिसको हम प्रकाश कहते हैं। परावर्तित हुआ है ताप, बिम्ब के साथ आया है, प्रतिबिम्ब के साथ आया है। जैसा, यहाँ जब ताप इससे पहुँचा है, इसका प्रतिबिम्ब के साथ ही आ रहा है। उसका रूप का प्रतिबिम्ब है, उसका नाम हैं

प्रकाश। जो परार्वतन में आ रही है, वो ताप है। पहले प्रतिबिम्ब आता है, बाद में ताप आता है। ताप की गति कम है, प्रतिबिम्ब पड़ा ही रहता है। जैसे ये (bulb) जलने के पहले भी इसका प्रतिबिम्ब रहा। क्या बात है – क्या हालत है ,हालत कहाँ पहुँचा?

इस ढंग से प्रकाश और ताप दोनों अलग अलग विन्यास है। बिम्ब का प्रतिबिम्ब एक प्रकाश है। बिम्ब में निहित उष्मा का परार्वतन हमको मिलना वो ताप है। वो ताप जो प्रतिबिम्ब के साथ आता है, उसका नाम है किरण। ताप जो प्रतिबिम्ब के साथ इस धरती के ऊपरी सतह में आ कर छूता है, उसका नाम है किरण। उसके साथ प्रतिबिम्ब रहता है बताया, वो प्रतिबिम्ब का अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब होना पाया जाता है।अनुबिम्ब का मतलब है, जो प्रतिबिम्ब पड़ा है वो कई direction में जो molecules रहते हैं, उसके ऊपर जा करके आबंटित होना और उसके बाद वो पुनः आबंटित होना ये प्रक्रिया धरती के सतह में आने तक, अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से बंटता रहता है। उसी अनुपात में ताप भी आबंटित होता हुआ आता है। आते आते धरती को जब छूता है प्रतिबिम्ब, उसका नाम है रश्मि। क्या बात है! ये बहुत छोटा सा काम! आगे चल करके प्रकाश विधि इसी आधारों पर, इसी सूत्रों पर, इसी बुनियाद पर प्रकाश व्याख्यायित हो जाता है।

ताप परावर्तित होने के लिए दौड़ता है। परावर्तन का मतलब है, ताप घटने की आशय से ताप बहता है। ताप के रूप में जो एक स्वरूप रहता है कहीं भी, ताप का मापदंड के रूप में हम कहते हैं – 200˚, 400˚, 1,000˚, 2,000˚ – ये सब कहते हैं ना? किसी ना किसी degree में ये धरती के अंतिम छोर में छूआ है, वहाँ से वो ताप क्या करना चाहता है? कम होना चाहता है, कम होने के लिए यहाँ वातावरण बना हुआ है। बनी हुई वातावरण को हमने क्या कर दिया? छेद काट दिया – ये विज्ञान है।

9. किरण, विकिरण, तरंग, प्रतिबिम्ब

विडिओ संदर्भ देखें: *video 14, time 44:00-59:28*

चुम्बकीय चिकित्सा नाम की एक चीज शुरू हुई, और TV में हम समझता हूँ एक 10 दिन वो आदमी चुम्बकीय चिकित्सा के बारे में चीखता रहा। उसमें से एक दिन वो चीखाई को हम भी सुना, संयोगवश भोपाल में किसी के घर में था, उस दिन वो तमाम प्रकार के बताता, इसमे सब रोग दूर होता है बोले। सबसे अच्छा ये हुआ उनका रोग दूर हो गया। क्या रोग? दरिद्रता! कैसे? उनका किताब बिक गया, वो लोहे की टुकड़ा वो जो चाहा उस भाव से बिका, इतना हम जनता हूँ, बाकी एक भी कोई चीज कामयाब नहीं हुआ। ये पुराणिक साहब यहाँ बैठे हैं, इन्ही के यहाँ से वो चुम्बकीय पथरों को हम डुहार के ले गये, क्या किये? डुहार के ले गये, उसको प्रयोग किये, ईमानदारी के साथ प्रयोग किए, एक पैसे की फर्क नहीं। चीखाई हम टीवी में सुने। उनका तो दरिद्रता छूट गई ये बात सही है। Delhi में उनका बंगला बना हुआ है, आलीशान एक एकड़ जमीन में। बना के दिखाओ? पता लगता है। ये तंदरुस्ती बढ़ गई। आगे चलो।

प्रश्न : बाबा पर समृद्ध हो गये क्या वो, दरिद्रता दूर हो गई तो?

उत्तर : अरे कहाँ से समृद्ध हो गये हो, वो दरिद्रता तो और चौगुने की तो बना ही है।

प्रश्न : दूर कहाँ हुई?

उत्तर : तो पहले की अपेक्षा तो परिवर्तित हो गये ना रे, लोगों की आँखों मे उनको पैसा मिल गया ये ही evidence मिल गया ना भाई।

प्रश्न : आकाश से कोई उलका आकर धरती में गिरता है, तो ये उलका पात आकाश से आता किस जगह से है?

उत्तर : इसके ऊपर बहुत सारे अटकलें हैं पहले, तो वो तारा टूट करके आता है, उसके बाद उलका होता है, वो जो तारा ही उलका है दूसरा कोई उलका है, ये सब बात ही थी। ठीक है? उलका पात होता है ये बात सही है। हमारे आँखों को भी दिखता है, कोई-कोई चीज कोई दिन कोई बिल्कुल बरता हुआ, जलता हुआ चीज, धरती की ओर दौड़ता हुआ, आप हम देखते हैं। ठीक बात है ये, यहाँ तक पूरा हो गया। उसके बारे में हमने जो देखा है, इसकी सही स्वरूप को देखा है, वो ये है, ब्रह्मांडीय किरणों का निरंतर गति बना रहता है, ये तो आप जानते ही हैं, कोई एक प्रकार कि ब्रह्मांडीय किरण का संयोग होने से उसमें इतना ताप बढ़ जाता है, एक second की करोड़ों - करोड़ों भाग में, आस पास की बहुत सारे अणुओं को एकत्रित कर देता है। आकर्षण बल बढ़ करके एकत्रित कर लेता हुआ, जलता हुआ ज्वाला जैसा नीचे तक आता है। वो कोई चीज जैसा भी मिल सकता है कभी-कभी, कभी-कभी नहीं भी मिल सकता है।

प्रश्न : ये जो घटना है, धरती के वायुमण्ड़ल के भीतर घटित होता है?

उत्तर : ये धरती के वातावरण के अंदर घटित होता है।

प्रश्न : मतलब धरती के वातावरण के बाहर से कोई चीज नहीं गिरता है?

उत्तर : बाहर से कोई चीज नहीं आता है। निःसोच बैठे रहो।

प्रश्न : इतने बड़े-बड़े पत्थर धरती पर गिरते हैं ?

उत्तर : वो सब इसी धरती की वातावरण की है। आप सोचो, इस धरती से समृद्ध वातावरण कहाँ होगा?

प्रश्न : उन पत्थरों का अध्ययन करने से पता चला है कि जो उसका material है, वो धरती में मिलने वाले material से भिन्न है?

उत्तर : अभी चन्द्रमा से लाए material, धरती में जो material है, किसी material के तुल्य ही है। अरे व्यर्थ की ये सब बातें ले करके दिमाग पचाना हो तो पचा सकते हैं।

प्रश्न : हम लोग ऐसा अभी तक सुनते हैं यदि किसी जगह में यदि गर्मी हो जाए, वहां से हवा के कण दूर हट जाते हैं, आप इससे विपरीत बता रहे हैं, कि कहीं यदि तापमान हो जाए तो दूर-दूर से कण वहाँ पर आ जाते हैं?

उत्तर : हाँ, वो चुम्बकीय बल के संयोग से बता रहा हूँ, वो छूट गया ना, उसको जोड़ लीजिए, वो पूरा हो जाता है। वो धरती को छूते तक वो इकट्ठा करते ही आता है, पिण्ड बन जाता है।

प्रश्न : जबकि जो विज्ञान की अवधारणा है वो इसके उलटा है, कि वो मोटा आता है, और हवा से टूट-टूट करके छोटा रह जाता है?

उत्तर : ठीक है भाई, कहने में हम क्या कर डालें हम, कहे हैं। होता है इतना ही है।

प्रश्न : ये जो ब्रह्मांडीय किरणें हैं, इतनी आवेशित हो जाती हैं, गर्म हो जाती हैं?

उत्तर : किसी एक प्रकार की अणु का संयोग होने से, ये तो आप जानते हो, कोई भी दो प्रकार की आवेश, एकत्रित होने से तीसरे प्रकार की आवेश में परिवर्तित होता है। ठीक है? कोई भी दो प्रकार की आवेश एकत्रित होने से तीसरे प्रकार की आवेश में परिवर्तित ,परिणत हो जाता है। ये समझ में आता है? उसी विधि है इसमें भी। इसमें क्या हो जाता है, जो ब्रह्मांडीय किरण आ करके, किरण का संयोग में, किसी निश्चित प्रजाति की अणु मिलना चाहिए, उसमें योग होना चाहिए। योग होते ही उसमें एक ताप का प्रचण्ड ताकत बनता है। वो ताप से, आकर्षण बल दूर-दूर तक, आकर्षण का field जो बनता है वो दूर तक बन जाता है। बनते ही, उसी के साथ-साथ जलता-जलता हुआ नीचे आता है। आते आते उस मार्ग में जीतने भी आस-पास के हैं सबको बटोर के धरती में आ के बैठता है।

प्रश्न : ब्रह्मांडीय किरण का मतलब आवेषित कण?

उत्तर : ब्रह्मांडीय किरण के बारे मे बात ऐसा सोचना चाहिए, बहुत सारे किरण, विकिरण के रूप में दौंड़ते हैं। विकिरणीयता क्या चीज है? जब कभी भी परमाणु में जो कार्य होता है, उसका जितने भी ताप है, वो परावर्तित होता है। परमाणु में जितना ताप होता है, वातावरण में यदि उससे कम होगा, उस स्थिति में वातावरण में वो परावर्तित होता है। विकिरणीय material में परिवेशीय गति से उत्पन्न, जितने भी ताप है, वो मध्यांशों पर प्रभावित कर देता है। उसमें हजम होने की एक निश्चित ताकत है, वो ताप को अपने में रखने के लिए, हजम करने के लिए, माने डुहारने के लिए निश्चित एक अवधि है, मध्यांश में। वहाँ तक वो अपने में समा लेता है, वो क्षमता के अनुसार बिल्कुल पूरा अपने में समा लेता है। उससे ज्यादा होने के बाद उसका प्रभाव को उसके बाह्य वस्तुओं पर फेंक देता है, फेंकना शुरू करता है। वो कैसा फेंकता है? वो ताप के रूप में नही फेंकता, कंपन के रूप में फेंकता है।

प्रश्न : कंपन माने?

उत्तर : वातावरण में जो molecules रहता है, वो उद्वेलित होते कि स्थिति में जाता है। अभी अपने शरीर में विकिरणीय प्रक्रिया से X-ray करते हैं, इसमें क्या होता है? हमारा शरीर के अणुओं को उद्वेलित करके हड्डी का photo लेता है। इसी क्रम से वातावरण में उसका उद्वेलन शुरू होता है। हो करके वो अणु से अणु, अणु से अणु होते-होते, केवल प्रभाव ही जाता है, इसको विकिरण नाम है। उसमें ताप travel नहीं होता है, तरंग travel होता है। तरंग मध्यांशों से प्रेरित प्रकरण है, प्रेरणा है ये। उसकी इतना ज्यादा पैनीपन है, चुभने वाली चीज है, एक के अंदर घुसने की योग्यता है, वो अपना वांछित विधि से उससे काम लेने योग्य ताकत है। उसको अभी ले भी रहे हैं। ये विकिरणीय गति का मतलब है। विकिरण की गतियों को भी ब्रह्मांडीय किरण कहलाता है।

प्रश्न : ये जो विकिरण का प्रभाव है, किसी इकाई के केन्द्र मे होता है, या बाहरी भाग में?

उत्तर : केन्द्र में होता है।

प्रश्न : जैसे सामान्य रूप में जो प्रभाव होता है?

उत्तर : वो सब तो बाहरी, बाह्य परिवेश की जो वस्तु में होता है। ये जितने भी अभी अपन बाकी बात कहते हैं, उसमें क्या होता है, मध्यांश से बहिर्गत होता है ताकत, उसमें कोई particle जाता नहीं है। हमारा सोचना है particle के रूप में भागता है विकिरण, विज्ञान में ऐसा मानते हैं।

प्रश्न : विज्ञान में ऐसा मानते हैं, alpha beta gamma तीन प्रकार के particle निकलते हैं, परमाणु से।

उत्तर : ये तीन प्रकार से प्रभाव होता है, particle नहीं होता है। अभी अपने को प्रभाव मानना चाहिए। बाह्य संसार में जितने भी अणु परमाणु होते हैं, उनके ऊपर प्रभाव डालते हैं, वो तरंगवत जा करके वांछित क्रिया करते हैं।

प्रश्न : ये आपने विकिरण के बारे में बताया?

उत्तर : हाँ ये विकिरण के बारे में।

प्रश्न : किरण क्या है?

उत्तर : किरण ये चीज है, कहीं से भी प्रकाश होता है, जैसे सूर्य से आ रहा है, ये किरण है।

प्रश्न : ताप सहित जो है वो किरण है?

उत्तर : ताप से नहीं प्रतिबिंब से, प्रतिबिम्बों से किरण। प्रतिबिम्ब, अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से किरण, परावर्तन विधि से ताप।

प्रश्न : किरण ताप के साथ भी हो सकती है, बिना ताप के साथ भी हो सकती है?

उत्तर : ताप एक अलग चीज है किरण एक अलग चीज है, प्रतिबिंब विधि है वो, ये जो है ना ताप विधि परावर्तन विधि है। ये जो अभी तीसरा बात कहा ये तरंग विधि है, वातावरण में तरंग पैदा करने की विधि है, मध्यांशों में जो दबाव बनी रहती हैं, उसके कंपन से वातावरण में तरंग पैदा हो जाते हैं, ऐसा है विकिरण।

प्रश्न : किरण और रश्मि दोनों अलग अलग हैं?

उत्तर : हाँ, रश्मि एक दूसरी भाग है। किरण किसी भी धरती के वातावरण में आने के बाद, वो अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब में विभक्त हो करके अनेकानेक बन करके, एक किरण अनंत भागों में बँट करके, धरती को छूता है, इसका नाम है रश्मि।

प्रश्न : surface tension नाम का एक शब्द विज्ञान में पढ़ाते हैं, यदि एक काँच के tube में पानी भरेगें, तो ऐसा दिखाई देगा कि tube के किनारे-किनारे पानी कि ऊंचाई ज्यादा है, और केन्द्र के तरफ पानी गहराई में हैं। मतलब थोड़ा झुका हुआ दृश्य दिखता है, उनको ऐसा कहते हैं कि सतह के कारण ये खींचते हैं, जबकि पारा में देखते हैं, पारा में ऐसा उठा हुआ दिखता?

उत्तर : वो tube में भरने के कारण है, वो ही चीज glass में भरते हैं, वो ऊपर ही रहता है। tube के आकार में पानी भरोगे, ऐसे ही दिखेगी, आकार के कारण।

प्रश्न : ये जो गोलाई होता है इसका क्या कारण है?

उत्तर : आप तो जानते हो, पानी में भार होता है। पानी में और एक गुण है, पानी अपने level को maintain करता है। यदि दो जगह हो, पानी को अपने level को show करने के लिए हो, चार जगह हो, माने एक tube, दो tube, चार tube बना दिया, आपने एक में पानी भरा, उन सभी tube में एक ही लेवल level में पानी होता है। इसका क्या नाम दिया आप लोगों नें? water makes its own level एक नाम दिया। पानी किसी में भरिए, अपने में एक level बना लेता है, कैसे भी भरिए, वो अपने में एक level बनाता है। उसके साथ आपने क्या कर दिया? tube को bend कर दिया। वो सीधा tube में भर के देखो, कैसा दिखता है? सीधा tube में भर के देखोगे तो उभरा ही दिखता है, glass में भरोगे तो उभरा ही दिखता है।

प्रश्न : जैसे तालाब में पानी जमा रहता है, ये जो इसका level maintain करता है, वो flat रहता है या वो भी ऐसा उठा हुआ रहता है?

उत्तर : वो उठा ही रहता है, समुद्र ही उठा रहता है, ये धरती के आकार में सब बने रहते हैं। Surface पूरा धरती के आकार मे रहता है। तब पानी हो, चाहे हवा हो, चाहे ठोस हो।

प्रश्न : ठोस तो धरती का आकार में नहीं बन पाएगा, पहाड़ ऊबड़-खाबड़ जो हैं?

उत्तर : पहाड़ सब मिलकरके धरती का आकार है, अंततोगत्वा वो सब एक गोलाकार ही है। ऊबड़-खाबड़ बराबर गोल-मोल।

10. पदार्थ का ऊर्जा में रूपांतरण प्रतिबिम्ब

विडिओ संदर्भ देखें: *video 14, time 59:29-1:08:00*

प्रश्न : जैसे पदार्थ का एक टुकड़ा है, उसको यदि हम किसी गति में ले के जाएंगे, जैसे-जैसे उसका गति बढ़ते जाएंगे, गति बढ़ाते-बढ़ाते एक ऐसी स्थिति आएगी की, वो पदार्थ पूरा का पूरा ऊर्जा में बदल जाएगा। क्या पदार्थ वास्तविक रूप में ऊर्जा में बदल जाता है, ऐसे कोई बात अस्तित्व में होती है क्या?

उत्तर : कोई भी वस्तु ऐसा नहीं है जिसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म तम् विभाजन हो सकती है। परिवर्तन हो सकता है, अभाव नहीं हो सकता। सूक्ष्म सूक्ष्मतम जो हम गिन नहीं सकते हैं, उस प्रकार से टुकड़े-टुकड़े हो सकते हैं। और हम जो अपेक्षा रखते हैं, उससे ज्यादा परिवर्तन भी हो सकते हैं, अभाव नहीं होता है।

प्रश्न : यदि उसका गति बढ़ा दे? पदार्थ क्या ऊर्जा में बदल जाएगा?

उत्तर : गति बढ़ाइये, कुछ भी कर लीजिए, ऊर्जा में नहीं बदलेगा।

प्रश्न : ऐसा कहा जाता है, यदि प्रकाश के वेग तक उसको बढ़ाया जाये?

उत्तर : देखो बहुत आसान game है ये। कोई भी वस्तु है, तब तक उसमें गति दिया जाए, जब तक उसका आकर्षण बल शून्य ना हो जाए। एक अवधि ये बनता है, शून्याकर्षण में होने तक, एक क्रम तो ये है। दूसरा ये हो जाए, वस्तु को इतना विखंडित किया जाए, धरती के वातावरण से बाहर भागने योग्य हो जाए। इतना छोटा टुकड़ा किया जाए, वो इतना वातावरण के जाल के बीच से, खिड़की से घुस करके इस धरती के वातावरण से बाहर भाग जाए। अभी ये लोग जिसको तरंग कहते हैं, वो सब इसी प्रकार भागी हुई चीज़ को तरंग कहते हैं। वो तरंग को ये ऊर्जा कहते हैं। जबकि वस्तु के बिना तरंग होता नहीं। आप समझे? वस्तु के बिना कोई तरंग नाम की चीज होता नहीं। (वस्तु माने particle?) हाँ particle का particle, particle का particle उसको दो हजार वर्ष बोल रे, उसके बाद भी कोई चीज रहता है, वो ही है।

दो हजार वर्ष के बाद का particle, वैसा मान ले। हमको क्या तकलीफ है? कल्पना करने में आपका क्या जाता है, हमारा क्या जाता है, ठीक है? तो तरंग इसी को कहा जाता है। अभी प्रकाश में जो तरंग की बात कही, उसके लिए एक प्रयोग किया है विज्ञानियों ने, एक छत की छेद से एक प्रकाश को धरती तक छूया हुआ देखा गया। ऐसा दो tube बना दिया। दो tube बनाने से धरती में जो प्रतिबिम्ब पड़ा रहता है, वो हिलता हुआ दिखता है। उसको दिखा करके ये कहते हैं, प्रकाश में तरंग है। कुछ समझ में आता है? ऐसा करते है कि नहीं?

प्रश्न : कोई दो छेद लें किसी पट्टी पर और कोई एक इकाई को आप continuity में देखने जाएं, उसका जो reflection बनता है, वो गोल गोल उसके ring बनती है। उसकी जो rings बनती है, उस ring को explain

करने जब जाते हैं, के किस आधार पर उसमें वो ring बन गयी। उसके आधार पर कहते हैं, तरंग उसमें है तो ही ये ring बनेगा। अगर तरंग मूल रूप में नहीं है, तो प्रकाश का जैसा स्त्रोत या उसका प्रतिबिम्ब वैसा ही बनेगा।

ओ ठीक है।

उत्तर : जो प्रकाश का जो बात अभी आपने कहा, हम छत से कह रहे हैं, आपने दीवार से कहा, वो सब ठीक है। वो जितने भी नचाई दिखती है, आप कहते हो ring, हम कहते है नचाई, वो जो कुछ भी दिखते है, प्रकाश के अंदर जो molecules जितना नाचते रहते हैं, वो ऐसा दिखते हैं। इतना ही बात है।

प्रश्न : उसमे निश्चित केंद्र से परिधियाँ बनती है, वर्तुल बनते है, इसमें कुछ वर्तुल dark होते हैं फिर bright होते है हैं, polarisation कहते हैं इसको। ring बनने का विषय तरंग के आधार पर explain होता है।

उत्तर : तरंग बताने के लिए व्याख्यायें ये हैं, किन्तु वो तरंग होने वाली जो बात है material है उसको बताया, उस प्रकाश के अंदर जितने भी molecules रहते हैं, वो सबका नचाई बना ही रहता है। वो जिस model से बनता है, उसको आप अपने अनुसार व्याख्या करते हैं। हमको कहना है प्रकाश तरंग है, हम कहते हैं। कहिए, इसमें किसको क्या तकलीफ है?

प्रतिबिम्ब में कोई तरंग होता नहीं हैं। किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब में कोई तरंग नहीं होता है, प्रतिबिम्ब रहता ही है।

प्रश्न : बाबा ये प्रयोग सबसे बढ़िया है। जैसे सामने कोई cardboard रखें, उसमें एक गोल छेदा कर दिए, उसमें एक गोला दिखना चाहिए। एक गोला ना दिखकर एक bright गोला दिखता है। उसके ऊपर थोड़ा सा एक हल्का चमक वाला गोला दिखता है।

उत्तर : वो वो चीज़ है, जो प्रकाश कहीं भी जा के टिका, वो जहाँ टिकने के पश्चात उसके आस पास के जितने भी अणु राशियाँ हैं, उसके ऊपर अनुबिम्बन, प्रत्यानुबिम्ब विधि बनी रहती है, उसमें दूसरा गोलाई जैसा दिखता है। इसमे कोनसा बड़ी बात है? हर बच्चे तो समझ सकते हैं इसको!

प्रश्न : एक नहीं बाबा अनेक गोलाई दिखता है।

उत्तर : अनेक इसीलिए दिखता है, ये जो पृष्ठभूमि है, जहाँ टिका है, वो resource है जितना दूर से आया है, वहाँ से यहाँ तक, परावर्तन, प्रत्यानुबिम्ब अनुबिम्ब की प्रक्रिया, वहां से ही शुरू हुआ है, इसीलिए अनेक ring दिखते हैं। इसमें क्या आपत्ति हुई? इसमे क्या तकलीफ है आपको क्या तकलीफ है?

(तकलीफ तो नहीं है लेकिन उसको ठीक ठीक परिभाषित करना पड़ेगा की उसकी जो intensity है, brightness है और darkness है, उसकी पूरी प्रक्रिया क्या है? निश्चित दूरी पर निश्चित intensity होती है, अंधकार की या प्रकाश की। कालेपन की या brightness की।

उत्तर : वो ही मुख्य है। जितना अंधकार बना करके ये छेद से प्रकाश को दूसरे धरती पर टिकाने से, ये गोले जो है ना, ज्यादा दिखेंगे। यदि प्रकाश का स्त्रोत से यहाँ पर टिकने वाले जगह के आस पास में, यदि प्रकाश बनाए रखोगे, कई गोले नहीं दिखेंगे। जितना dark बना करके इसको परीक्षण करोगे, उनता ज्यादा गोला दिखेगा। (इसको और स्पष्ट करने की आवश्यकता है) वो ठीक है। अध्ययनगम्य बनाना वो एक अलग चीज है। उसको कराया जा सकता है, उसी के लिए आप हम पैदा ही हुए हैं, लगता है।

11. ज्योतिष शास्त्र एवं किरणें

विडिओ संदर्भ देखें: *video 5, time 28:13-1:09:40*

ज्योतिष शास्त्र के बारे में, बहुत प्राचीन समय से बातचीत चलती ही है, ज्योतिर्विदों के बारे में बहुत कुछ सोचा जाता है – भविष्य को बतायएँगें, अच्छी चीज़ों को बतायएँगें, उपाय बताएगें, येन-तेन। इस विधि में एक ज्योतिष को सुनने की एक इच्छा तो संसार में बनी ही है। ज्योतिष को जानने मानने की प्रबल इच्छाएँ मानव परंपरा में तो आज भी देखने को मिल ही रहा है। पेपरों में भी लिखते हैं, और भी करते हैं, बहुत सारे लोग ज्योतिष के बारे में जुड़े भी हैं। मूल में ज्योतिष का मूल रूप क्या है? उसके बारे में मैंने जो देखा है वो ये है – ब्रह्माण्डीय किरण का संचार तो होते ही रहता है। उसके होते हुए जो निश्चित ग्रहों को इस सौर व्यूह में पहचानी गई है, उन ग्रहों के माध्यम से, वो किरण कैसा काम करता है। जैसा, सूर्य के माध्यम से ब्रह्माण्डीय किरण कैसा काम कर रहा है।

बुद्ध एक ग्रह है, उसके माध्यम से कैसा ये काम कर रहा है, दूसरे ग्रह मंगल के माध्यम से कैसा काम कर रहा है, और उसी प्रकार चन्द्रमा के माध्यम से कैसा काम कर रहा है – इसको पहचानने की विधियों को हम ज्योतिष शास्त्र कहते हैं। और इसको पहचानने की क्रम को एक गणितीय विधि से, इस बात को पहचाना गया कि जो अक्षांश-रेखांश के संयोग से एक वर्ग को – छोटे से छोटे, बड़े से बड़े वर्ग को – पहचानने की विधि तैयार कर लिया। उस वर्ग में, उस समय में कैसे ग्रहों का, किरण का प्रभाव रहता है, उसका अध्ययन है ये। उससे होने वाले फला-फलों को बताने के लिए, माने सही फलों को या गलत फलों को दोनों को, बताने की सोच करता है। इसके आगे, इसके आधार पर ज्योतिषी भी यही मानता है, ये ज्योतिष तंत्र के साथ ही सारे मानव तंत्रित हैं, ऐसा शुरू कर देते हैं। ये शुरू किया है। जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है। तो शरीर के ऊपर जो ब्रह्माण्डीय किरणों का फल होता है, प्रभाव होता है, परिणाम होता है, जीवन के ऊपर ग्रहों का, इन ब्रह्माण्डीय किरणों का एक भी प्रवाह नहीं है, एक भी प्रभाव नहीं है, एक भी परिणाम नहीं है, ये होता है शरीर के ऊपर ही सारे फल परिणाम हो पाते हैं।

प्रश्न : ब्रह्माण्डीय किरण क्या चीज़ है बाबाजी ?

उत्तर : ब्रह्माण्डीय किरण ये चीज़ है, जैसा हमारा धरती है, इस धरती से विकिरणीय जो प्रवाह है, वो सतत् निःसृत होता ही रहता है। वैसे ही कई ग्रहों से विकरणीय प्रवाह बहती रहती है। इसको ब्रह्माण्डीय किरण हम कहते हैं। ये प्रवाह कभी भी बंद होते ही नहीं। ये ग्रह गोल में जितना विकसित रहता है, उतना ही ज्यादा उसमें से विकिरणीय प्रवाह बर्हिगत होता ही रहता है, हर ग्रहों से विकिरणीय प्रभाव रहता ही है, इसमें दो राय नहीं। इस प्रकार से ब्रह्माण्डीय किरणों का स्वरूप, विकिरणीय प्रवाह के स्वरूप में हम पहचान सकते हैं, विकिरणों का जो प्रवाह किसी धरती के, किसी ग्रह गोल के माध्यम से वो हर एक अक्षांश-रेखांश की वर्ग को बताया, उस वर्ग में कैसा प्रभाव पड़ता है, उसका गणना करना ही ज्योतिष का मतलब है।

उस वर्ग में जो आदमी पैदा होता है, और जीवित रहता है, और उनके शरीर पर कैसा काम करता है, इसको लोग बताते हैं, उसी से रोग-राटा, येन-तेन बात बताते हैं, उसके परिहार के लिए कुछ उपाय भी बताते हैं। इस ढंग से

ज्योतिषशास्त्र की मतलब है। उसको जीवन के ऊपर प्रभाव नहीं होता है, ये बात अभी ज्योतिषशास्त्र नहीं समझा है और आगे चल करके समझेगा, कालातंर में समझेगा। अभी जैसा विज्ञानी नहीं समझें हैं, वैसे ही ज्योतिषशास्त्र भी जीवन को नहीं समझा है। ज्योतिर्विद जो है, जीवन को समझा है, ऐसा कुछ भी नहीं है। वो भी शरीर को ही जीवन मान करके सारे भविष्य फलों को बताया करते हैं। ऐसा बात है।तो उसके बाद एक आत्मा नाम की चीज़ को मानते हैं ज्योतिर्विद, भारत में, और अन्य देशों में क्या मानते हैं, हम नहीं जानता हूँ। भारत में एक आत्मा को मानते हुए ये सारे बात को गढ़ते हैं, आत्मा से आत्मविद ज्योतिषी होते नहीं हैं। आत्मा को कोई समझा ही नहीं, तो ज्योतिषी क्या समझेगा? आत्मा का नाम का प्रयोग करते हैं, इस ढंग से हम बैठे हैं। तो ये जरूर है – ब्रह्माण्डीय किरणों का प्रभाव शरीर के ऊपर होता है।

प्रश्न : बाबाजी, अगर आप की इस बात को हम लोग मान लें, तो ज्योतिष में जो ब्रम्हज्ञानी बनने का योग रहता है, राजा बनने का योग रहता है, अगर वो जीवन को, जीवन के जागृति के स्थिति को नहीं जानता, तो ब्रम्हज्ञानी योग को किस आधार पर, [क्योंकि ऐसे बहुत सारे महापुरूषों की कुंडलियों का विश्लेषण करने से पता लगा, वाकई अपने युग में वो लोग ब्रम्हज्ञान को उपलब्ध हुए], समाधान को उपलब्ध हुए। आपकी और उनकी बात का तालमेल कैसे होगा?

उत्तर : बहुत साधारण बात है ये, ये आपने बहुत अच्छा पूछा भी है।

अभी ब्रह्मज्ञानी जो हुए हैं, वो तो अपने को नहीं कहा है कि हम ब्रह्मज्ञानी हुए, एक भी आदमी नहीं कहा है। उपनिषद युग तक की ऐसे ही अवधारणा है। उसमें लिखा है, उपनिषदों में, जो कहता है, हम ब्रह्मज्ञानी हो गये बिल्कुल ब्रह्मज्ञानी वो नहीं हैं – ये लिखा है। एक ये चीज़ है। उसके बाद में और कोई कहा होगा तो बात अलग है, तो हम उसको कुछ कहते नहीं हैं। अभी उपनिषद के कथन के अनुसार वो ऐसी ही मानी गई है – "हम ज्ञानी हो गये, इस बात को हम सत्यापित नहीं कर सकते"। तो ज्ञान का जो कुछ भी प्रबोधन की बात है, इशारा करने की बात है, उसको शास्त्र को ही प्रमाण माना है, और दूसरे किसी को प्रमाण नहीं माना है। व्यक्ति को प्रमाण नहीं माना है। अच्छा, लोग बहुत सारे लोगों को ब्रह्मज्ञानी हैं, ऐसा मानते रहें हैं। ये बात, लोगों ने माना है, ये ठीक है। तो इस विधि से हम यहाँ निष्कर्ष में पहुँचते हैं, उसके साथ-साथ ये भी एक हमारे पास गवाही है – मैं जब समाधि को देखा था, देखे हैं, और उस अवस्था में हम ब्रह्मज्ञानी हो गया हूँ, ये हम स्वयं नहीं कह पाते थे।

ये ज़रूर है, ये जो शास्त्रों में लिखी हुई एक बात अवश्य उसमें गवाहित हुई – तो वो "सुख-दुख से परे" एक बात कहते हैं, शस्त्रों में लिखी हुई है। तो सुख का भी हम गवाही नहीं कर पाते थे, ना दुख का गवाही कर पाते थे। इसी घटना को यदि सुख-दुख से परे हम माना जाए, वो लिखा हुआ ठीक है। एक बात ये थी। सही गलती को भी हम बताने में असमर्थ रहे, हम निर्धारित नहीं कर पाते रहे। ये बात ज़रूरी है, कोलाहल संसार से, संसार को दुख मानने वालों के लिए ये समाधि स्थली बहुत राहत वाला जगह है। ये मेरा कहना है। इसको मैं भले प्रकार से देखा हूँ।

दूसरा आपने बोला था – ब्रह्मज्ञानी होंगे वगैरह, राजा होंगे ये हो गया, सही हुआ है, इत्यादि। सही को ही हम मान के चलें, हम दूसरे भाग को लेवे ना करें। तो यदि दस जगह में ठीक हुआ है, चार जगह में नहीं हुआ है, या बीस जगह में ठीक नहीं हुआ, उसको हम नहीं जाएंगे। हम सही हुआ है, उतने को ही ले के चलेंगे। इस बात के लिए ये जो अभी

बताया था, ब्रह्माण्डीय किरणों के आधार पर, जो कुछ भी वस्तु के ऊपर ही बात है, वस्तु के ऊपर प्रभावित होता है। तो ब्रह्मज्ञानी को पहचानने की विधि – विरक्त होना, और वस्तुओं से रिक्त रहना – के योग को पहचाना गया है। उसको विरक्ति योग, विरक्ति का मतलब ही यही होता है, वस्तु संग्रह सुविधा से दूर रहना, इसी को विरक्ति कहा गया है। ये बात वस्तु से ही संबंधित है। ये उस ढंग से सन्यासियों को बताया है, परिव्राजक योग बताया है, ये बात भी हमको समझ में आता है।

प्रश्न : बाबाजी ब्रम्हज्ञान का योग भी बताया।

उत्तर : ऐसे विरक्ति को ब्रम्हज्ञान होने का योग है, ऐसा कहा होगा।

प्रश्न : नहीं बाबा ऐसा नहीं है, बाकायदा आत्मज्ञान, ऐसा साफ–सुथरा लिखा है।

उत्तर – ठीक है बाबा, भाषा में कहने के बारे में हमको कोई एतराज नहीं है, उस को प्रमाण तो कुछ होता नहीं है ना व्यवहार में। तो इसको तो आपने सुन लिया "हिमालय के योग से, अध्यात्म से, व्यवहार से लेन–देन नहीं"। ब्रह्मज्ञानीयों के बारे में ही मैं कह रहा हूँ बाबा, जैसा समाधि को आप क्या कहेंगे – ब्रह्मज्ञानी मानोगे कि नहीं मानोगे? मैं स्वयं गवाही कर रहा हूँ – हम ब्रह्मज्ञानी हो गया हूँ – इस बात को समाधि की स्थिति में हम बताने में असमर्थ रहे। मैं स्वयं गवाही कर रहा हूँ! आपके सम्मुख एक जीता जागता हुआ एक आदमी है! उसके बाद क्या बात है? ये सच्चाई की बात है। हम ये नहीं कह सकते हम ब्रह्मज्ञानी हुआ, सही और गलती को हम नहीं बता सकते। हम समझा हूँ – इस को भी नहीं बता सकते, नहीं समझा हूँ ये भी नहीं बता सकते। हम सुखी हो गया हूँ – ये भी नहीं बता सकते, हम दुखी हूँ – ये भी नहीं बता सकते। ऐसे स्थिति में तो हम स्वयं रहे हैं। इस बात से ही हम आपको ये बताया – शास्त्रों में लिखी हुई वो बात सच्चाई उतरती है – जो सुख दुख से परे है – ब्रह्मज्ञान। ये बात से हम संतुष्ट हो सकते हैं तो ऐसे ब्रह्मज्ञानी हो सकते हैं – जिन–जिन को समाधि होता है वो सब ब्रह्मज्ञानी हैं। इस ढंग से बनता है।

विरक्ति के आधार पर ही हम ब्रह्मज्ञानी होने कि यदि तीव्र रूप में यदि विरक्त होने की योग आता है, वस्तुओं से दूर रहने की योग बनता है, ऐसे स्थिति में ये ब्रह्मज्ञानी हो सकता है, ऐसा हम भविष्यवाणी कर ही सकते हैं, ऐसा मेरा सहमति है।

दूसरी और – ये राजयोग की बात। राजयोग के बारे में ये है, यही हमारा अभी तक की सोचने की मुद्दा बनी हुई है, राजयोग का मतलब है – दूसरों की वस्तुओं को ज्यादा से ज्यादा जो हड़प सके, वो सब राजयोग है। (पुराने समय में ऐसा ही था), आज भी वैसे ही है। आज भी राजयोग का मतलब वहीं जाता है – दूसरे का वस्तुओं को हड़प के अपना बनाने में समर्थ होता है – ऐसे व्यक्तियों को हम राजयोगी कहते हैं – ज्योतिष के अनुसार। वही मुद्दा है हमको विरक्ति पैदा किया। किससे? ज्योतिष से। हमको ये पटा नहीं, हम इसमें सहमत हो भी नहीं सकते। ठीक है? किन्तु ये होता है ये ज़रूरी है। राजयोग जिसको होता है, वो संसार के धन को अपहरण करते हैं, हड़पते हैं, सारा झूठ बोलते हैं, उसके बाद भी अच्छे आदमी बने रहते हैं।

प्रश्न : स्वेक्षा पूर्वक संसार उनको धन नहीं देता है? राजयोग में, सवेक्षा पूर्वक संसार उनको धन अर्पित नहीं करता है, वो हड़पता ही है?

उत्तर : हाँ, दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।

प्रश्न : स्वेक्षा पूर्वक, उपहार स्वरूप, दान स्वरूप ऐसा नहीं है? हड़पने की स्थिति नहीं आयी, जैसा विवेकानंद ने विश्व का दौरा किया और उनको अरबों रुपयों की सहायता लोगों ने दी। उसको तो, राजा जैसे ही जिया, शान के साथ जिया, बहुत सम्मानित हो के जिया, वो भी एक राजयोग था, सन्यासयोग के साथ। तो हर बार राजा लोग हड़प के ही बड़े आदमी बने ऐसा कहाँ सिद्ध हुआ? कुछ लोग उद्योग धंधा करके बने, कुछ लोग अपनी प्रतिभा से बहुत संपत्ति बढ़ा कर बने?

उत्तर : वो बात को अपन नीर-क्षीर, न्याय कर सकते हैं। तो अधिकांश राजयोग का अर्थ वही है, जो मैंने पहले कहा है। अब रह गया विवेकानन्द जी वगैरह की बात लाये। इसमें स्वधन में ये बात लिखी हुई है, कि परितोष और पुरस्कार रूप में जो कुछ भी प्राप्ति होती है, प्रतिफल रूप में जो प्राप्त होती है, इसको हम स्वधन के नाम से प्रतिपादित किया है। उसमें हम सही हैं। उस बात से हम खरे उतरते हैं।तो इसी क्रम में विवेकानन्द जी, गांधी जी स्वयं में उपार्जन नहीं किए, किन्तु उनको परितोषक द्रव्य बहुत कुछ मिला। उसको एक अच्छी ढंग से, एक जगह में संग्रह करके, लोकोपकार के लिए अर्पित करके इन लोग चले गये। वो स्वयं में कितना उपयोग किया हम नहीं जानते हैं, किन्तु वो जितना उपयोग किया उससे ज्यादा संसार के लिए अर्पित करके ही गए हैं, ऐसे मेरा सोचना है। तो ऐसे लोग कई हुए, कई लोग ऐसा किये हैं। तो इसमें से एक व्यक्ति विवेकानन्द जी भी हैं। विवेकानन्द ट्रस्ट में इस बात को देखा जा सकता है।

वैसे ही गांधी स्मारक निधि में भी ऐसी ही चीज़ देखा जा सकता है। तो इस प्रकार की कई नजीर अभी रखी हुई है।अभी एक बहुत बड़ी भारी फोर्ड नाम की एक आदमी था, वो बहुत बड़ी भारी धनाढ्य हुआ, उनका एक trust है, संसार को हर वर्ष अरबों रूपया बाँटता है, Ford Foundation, वो करते हैं, Rockefeller Foundation, ऐसा कई चीज़ें हैं, वो उन लोग पैसा बाँटने के अर्थ में बने ही हैं। इसको अपने को अच्छी तरह से समझना बनता है। इस बात को यदि हम ठीक से समझ पाते हैं, तो उसमें राजयोग का जो बात आती है, उसको हम अच्छी तरह से प्रतिपादित कर सकते हैं। तो विवेकानन्द जी वाला परमहंस योग - यदि वस्तु प्राप्त होते हुए भी उसको जो त्याग देते हैं, उसको हम परिव्राजक योग कहते हैं - वस्तु हमको बहुत प्राप्त हो गई, उसको हम उपयोग नहीं करते हैं, जन उपयोग के लिए अर्पित कर देते हैं, इसको परिव्राजक योग नाम दिया है।

इस प्रकार की योग से भी ऐसे महापुरुषों को और मूल्यांकन किया जा सकता है। राजयोग से परिव्राजक योग बहुत दूर है। उसमें जो है ना एक प्रकार से हठ पूर्वक, बल पूर्वक, छल पूर्वक हड़पने की बात आती है - राजयोग में, जबकि परिव्राजक योग में जो एक पुरस्कार रूप में, परितोष रूप में, सम्मान रूप में, सम्मोहन रूप में सम्मान करने की बात आती है। इन बातों में दोनों में बहुत अंतर है। जैसा हम ही हैं - बच्चों के लिए कुछ भी हम न्योछावर कर देते हैं, कुछ भी पैसा खर्च कर देते हैं, वही चीज़ बल पूर्वक हमसे दो रूपया छीनने के लिए कोई आदमी तैयार होता है, उसमें हम सिर कटाने के लिए तैयार हो जाते हैं, सिर काटने के लिए, तैयार हो जाते हैं। ये देखने में ये कितना बड़ी-भारी

विरोधाभास है। हजारों रूपया हम जहाँ चाहते हैं, हमारा चाहत जहाँ बना रहता है, हमारा मन जहाँ लगा रहता है, वहाँ हजारों रूपया लूटा देते हैं। दो रूपया हमसे छीनने आते हैं, तो जान लेने के लिए, जान गवाने के लिए तैयार हो जाते हैं। ये सब चीज़ें एक मानव प्रवृत्ति में देखा हुआ बातें हैं ये। इस ढंग से जो बल पूर्वक, छल पूर्वक जो धनार्जन करते हैं, उसको राजयोग बताने का बात से हम सहमत नहीं हो पाए। ठीक है?

इस ढंग से ब्रह्मांडीय किरणों की सहायता से, धरती के अक्षांश-रेखांश के वर्ग में क्या प्रभाव पड़ता है, इसको पहचानने की बात, उसके आधार पर मनुष्य शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, उस को गणना करने की बात, शरीर के आधार पर मन को परिकल्पना देने की बात और जो पूर्व पुण्य योग एक बताते हैं, कैसे पृष्ठभूमि से वो शिशु पैदा हुआ रहता है, उस पृष्ठभूमि को पूर्व पुण्य योग बताते हैं, उस पूर्व पुण्य योग के आधार पर उनका भविष्य फल बताने के लिए प्रयत्न है।

राजा का घर में एक लड़का पैदा होता है, राजयोगी होगा ही, इस ढंग की सोचा गया। कोई-कोई दरिद्र योग में भी पैदा होते हैं, ये भी हुआ है। और कोई-कोई ऐसे हुए हैं - राजा का घर में पैदा नहीं हुए हैं, उनको भी राजयोग आ गया है, उनको राज्य मिल गया है – ऐसा भी कथाएँ बनी हुई हैं, है ना? वो राजा के सिंहद्वार में सबेरे पाँच बजे पहुँच गया, उनको पकड़ लाओ हमारा लड़की को शादी कर देते हैं, उनको राज्य मिल गया। ख़तम हो गया, राजयोग हो गया। ऐसी बातों को लिखा हुआ है परिकथाओं में। ठीक है? ये सबको हम सुने हैं। ये सुनने के बाद भी, जो उसमें अधिकांश भाग है, ये छल बल के साथ ही धनार्जन, देश का अर्जन, यश का अर्जन, ये सब जुड़ी हुई है - राजयोग में। ये कोई अच्छी बात नहीं है, ज्योतिषी की ज़िन्दगी के लिए, ये ख्यातशील बात नहीं है। ये हमारा सोचने की तरीका है। अभी इसमें ये नहीं है, हमारा कोई आग्रह भी नहीं है, इसको सभी कोई मानना ही है, ऐसा नहीं है। मेरा मंतव्य ही यही है।

प्रश्न : आपकी बात मानवीयता के ढंग से सही है बाबा। लेकिन इससे जुड़ा हुआ जो दूसरा सवाल है, कि बहुत सारे ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव की वजह से, जैसा ज्योतिष शास्त्र में गणित है, मनुष्य को सांसारिक जीवन में ढेर सारे सुखों और दुखों को भोगने की स्थिति आती है। दुखों से बचने की मनुष्य की आकांक्षा तो स्वाभाविक है। तो उसके लिए जो उपाय बताए गए हैं और जो ग्रहों का - मंगल का, बुध का, सूर्य का - किसी बीमारी के रूप में, दुख के रूप में, मृत्यु के रूप में जो असर पड़ेगा। उसमें बहुत सारी बातें सही उतरती देखी गई हैं, तो उनका एक करोड़ों मील दूर किसी ग्रह या नक्षत्र के प्रभाव से, एक व्यक्ति के जीवन में कोई घटना घटित हो, जिसकी सालों साल पहले घोषणा की जा सके, कोई सुनिश्चित विज्ञान होगा। वो किस तरह से काम करता है, और उस से बचने के लिए जो उपायों की चर्चा की गई है, उसको हम लोगों ने थोड़ा बहुत अनुभव भी किया। वो उपाय कहाँ तक कारगर है.? उन उपायों को और कारगर बनाने के लिए हमारी कोशिश क्या होना चाहिए?

उत्तर : उसके लिए और एक हमारा observation - ये निरीक्षण परीक्षण की बात है। मानव इतिहास के अनुसार हमारे यहाँ भविष्यवाणी का दो ही बात हैं - सुफल और दुष्फल - अनिष्टफल, इष्टफल। इष्टफल में वो ही माना गया है – लाभ, धन प्राप्ति, पद प्राप्ति, यश प्राप्ति, स्वास्थ्य प्राप्ति, अच्छे भार्या की प्राप्ति, बच्चों की प्राप्ति - जो आज तक देखा गया है, वो ही चीज़ें बनी हुई हैं। इन प्राप्तियों के क्रम में जो एक हज़ार वर्ष पहले, मनुष्य के साथ जितना दुर्घटनाएँ

घटित थीं, आज उतना दुर्घटनाएँ नहीं हैं। औसतन[1] दुर्घटनाएँ घट गई। किन्तु मानसिक रूप में वहीं का वहीं है। दुर्घटना को घटाने की मानसिकता तो है मनुष्य के पास, किंतु दुर्घटनाओं को घटित करा नहीं पाता है। कम हो गया। अभी एक हज़ार वर्ष पहले दिन में दो बार युद्ध होता था। अभी कई वर्षों में एक बार देश के सम्मुख युद्ध की स्थिति बनती है। ये बात आज के उन दिनों के बीच में बात है। एक हज़ार वर्ष पहले आदमी के पास कल के लिए दाना-पानी जुटाना इतना आसान game नहीं रहा। कल के लिए एक हज़ार वर्ष पहले, दो हज़ार वर्ष पहले, कल के लिए हमारा दाना-पानी सुरक्षित है - इसको सोचना बड़ा दुष्कर था, अधिकांश लोगों के पास। आज उसका विलोम है। आज अधिकांश लोगों के पास कल के लिए दाना-पानी सुरक्षित है, इस जगह में आदमी आ गया है। इन दोनों चीज़ को हम ध्यान में रखते हुए ज्योतिष तंत्र को हम सोचते हैं, इष्ट अनिष्ट घटनाओं के बारे में, उन दिनों में जैसा हम भविष्यवाणी करने के लिए आधारों की सोचते रहे, आधारभूत बात तो जीता हुआ, रोजमर्रे को देखकर ही ये आधार बनता है, रोजमर्रे के आधार पर ही भविष्यवाणी किया जाता है। तो आज की रोजमर्रे की आधार का आकार है ना, ये दो हजार वर्ष, एक हजार वर्ष पहले की आकार से भिन्न हो चुकी है। आज जो है, परिवेश भिन्न होने के आधार पर ज्योतिष को एक सटीक प्रस्तुत करने के लिए पुनर आयामों को पहचानने की आवश्यकता है।पुनर आयाम क्या चीज़ है भाई? आदमी का जो आज की मानसिकता है - धरती को स्वस्थ बनाने की मानसिकता - सर्वाधिक लोगों में है। धरती स्वस्थ रहेगा तो कल हम भी रहेगें, नहीं तो धरती में हम रहवे नहीं करेंगे। एक मानसिकता ये है। धरती को स्वस्थ बनाए रखने के लिए जो पर्यावरण समस्या है, उसका निराकरण - एक।

दूसरा - उसके बाद आता है, मनुष्य परंपरा में जो बनी हई व्यापार बुद्धि है, उसको समृद्ध बुद्धि की ओर दिशा देना। वो दिशा चाहता है आदमी, दिशा अभी स्पष्ट नहीं है। उसमें कितना सफल होगा, नहीं सफल होगा, इन आयामों पर सोचने की आवश्यकता है। हर परिवार समाधान, समृद्धि पूर्वक जीना चाहता है, इसमें सफल होने की दिन कब आएगा, इसको सोचने की आवश्यकता है। इसके लिए उपायों को सुझाने की आवश्यकता है। ये विभिन्न आयामों को पहचानने की आवश्यकता पर हमारा बल ये है। इस ढंग से हमको सोचने की आवश्यकता है। तभी ज्योतिष की सार्थकता को हम ले जाएंगे।

दूसरे और एक आयाम है, वो इससे इतना ही बलवती है। वो है – मानव को मानवीयता पूर्वक जीने के दिन कहाँ हैं? राक्षियता, पाशवियता से जीने के दिन को ज्योतिष ने अच्छी तरह से परिगणना कर लिया। इसमें हमको कोई शंका नहीं है। मानवीयता पूर्वक जीने की दिन कब से शुरू होगा और उसके लिए क्या उपाय करना होगा? इस dimension में अपने को बहुत काम करने की जरूरत है। ये मौलिक कार्य होगा, मानव के लिए देन होगा, उपकार होगा, परंपरा स्वस्थ होने के लिए एक साधन बन जाएगी। ऐसा मेरा सोचना है। इस पर आप हमको काम करना चाहिए।

प्रश्न : एक व्यक्ति के जिन्दगी में करोड़ों मील दूर के ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव कैसे प्रभावी होता है, जिसकी कई बरस पहले भविष्यवाणी कर देते हैं और वो भविष्यवाणी सही साबित होता हैं। वो प्रक्रिया क्या है, और उससे बचने के जो उपाय बताये गये हैं, जिन उपायों को कई स्थानों पर कारगर होते हुए भी हम लोगों ने देखा। तो उन उपायों की

[1] ओसतन : औसत के हिसाब से (on an average)

उपादेयता, और उसमें कुछ plus minus करना हो जिससे उनको ज़्यादा effective बना के, मानव को दुख से परेशानी से बचा सकें।

उत्तर : ब्रह्माण्डीय किरण सदा-सदा बहता ही रहता है। वो दूर से पास से संबंध नहीं है उसका। ब्रह्माण्डीय किरण सतत् बहाव है। ये कभी रूकते ही नहीं है। उसी भाँति इस धरती पर भी बहुत सारे ब्रह्माण्डीय किरण सम्पर्क में आते हैं। इस धरती से भी ब्रह्माण्डीय किरणों के लिए उपादेयता बनी हुई है। ये अपने को पहचानने की आवश्यकता है। ये पहचानने के उपरांत, जो ब्रह्माण्डीय किरणों का बहाव के साथ, जितने भी भौतिक, रासायनिक परिवर्तन होता है, उसको हम पहचानने की आवश्यकता है।इन भौतिक रासायनिक परिवर्तन के साथ-साथ जीवन अपने आप को अभिव्यक्त करने में, अपने सार्थकता को सिद्ध करने में, जितना अड़चन पैदा होता है, और जितना सुगमता पैदा होता है, उसको निर्धारित करने की बात है। अभी वो समय समीचीन हो गई। अभी आगे ज्योतिष में जो उपलब्धि कराने की बात आती है, वो यही है। उसका ध्रुवीकरण का बिन्दु यही बनता है - मानवीयता पूर्ण आचरण। वो चौखट को ध्यान में रखते हुए, अभी पहले राजा को ध्यान में रखते हुए सारे पाप-पुण्य हो गया, कर्मकाण्ड सबको हम सोचते रहे, वो पर्याप्त नहीं रह गया अब। अब मानवीयता पूर्ण मनुष्य को पहचानते हुए वो सारा कर्म-काण्ड, पाप-पुण्य, को बताने की आवश्यकता आ गई। सही गलती को बताने की आवश्यकता है, और दुर्घटना, सद्घटनाओं को बताने की आवश्यकता आ गई। ये बहुत सटीक उतरने वाली भविष्यवाणी होगी। इसमें हमारा सोचने की तरीका ये है।

प्रश्न : एक आदमी की जिन्दगी में, जिनको हम दुर्घटना मानते हैं या अच्छी घटना मानते हैं, क्यों वे घटती है? कोई विशेष समय में घटती हैं, उसके घटने का जो phenomena है, कैसे घटती है, उसका प्रक्रिया क्या है?

उत्तर : अभी तक की जो बीती-गुजरी खिचड़ी है, उसके अनुसार हम भ्रम विधि से ही सारे बात को ताना-बाना बनाए। इस बीच में कुछ ऐसे भी बात जन्म चुकी है, प्रमाणित हो चुकी है, जैसा ज्योतिष की बात कर रहे हैं। तो हम जागृति पूर्वक ये सब गढ़े हैं, ऐसा नहीं है। ज्योतिष को गढ़ना, जीवन जागृति के बाद हम गढ़े हैं, ऐसा नहीं है। हम जैसे भी थे, उसी से इतने को गढ़े। हमारे में ये भी बात रही, आदिकाल से भी, शुभ की अपेक्षा बनी हुई रही। बहुत आदि काल से, बहुत प्रारम्भिक काल से, कैसे रहा इसको कहा नहीं जा सकता। किंतु मानव जब कभी भी अपने हाथ पैर हिलाना शुरू किया है, तब से शुभ की अपेक्षा तो बनी हुई है। कल्पनाशीलता तो प्रभावशील रहा ही है। तभी तो जंगल युग से, कबीला युग में, ग्राम युग में, ग्राम युग से राजयुग में, राजयुग से और युग में और अभी सर्वोपरि विज्ञानयुग में हम पहुँच चुके हैं। तो ये सब जो है ना हमारा कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता के चलते ये सब चीज़ वैभवों को हम प्रमाणित किया।

प्रमाणित करने के क्रम में हमारा जो गतियाँ जो हैं, पहले की अपेक्षा गतियाँ बढ़ते गई। जब हम पैर से चलने वाली बात थी, उस समय में भी पैर में ठोकर लगती ही रहे। ये नहीं रहा कि पैर में ठोकर नहीं लगा है कभी, ऐसा बात नहीं है। पैदल चलने वालों को भी पैर में ठोकर लगी है। पैदल चलने वाला भी फिसल के गिरा है। हम स्वयं उसमें गवाही हैं। ये सब चीज़ें गुजरता ही रहा है। अभी जो है, गति बढ़ गई। मोटर से गिरेगा तो और कुछ होगा, हवाई जहाज से गिरेगा तो और कुछ होगा। बात ये पता लगता है, यदि वो ही जलयान से यदि गिरेगा तो और कुछ होगा।

ये सब बात, हमारा गति की चलते, जिस प्रकार की गति में हमारा व्यतिरेक बनता है, किस प्रकार की हमारा गति में जो परेशानियाँ निर्मित होते हैं, उसको सोचने की बात आती है। उसको यदि हम सोचने जाते हैं, ये पता लगता है, उस उसका एक परिस्थिति बनती है। जैसा जो aeroplane से गिरने की, aeroplane fail होना होगा, नहीं तो काहे को गिरेगा आदमी। तो यंत्र ही fail हो गया तो आदमी गिरेवे ना करेगा। इसको अपने को अच्छी तरह से समझना चाहिए। अब क्या हो गई? यंत्र के ऊपर आ गया ज्योतिष। यंत्र ठीक चलेगा की नहीं, अब वहाँ पहुँच गए। अब मनुष्य का ज्योतिष तो fail हो गई, यंत्र का ज्योतिष प्रबल हो गई।

प्रश्न : जब हवाई जहाज उड़ातें हैं, तब पूरा check करके जब ok हो जता है। जहाँ तक यात्रा में जाना है, वहाँ तक की यात्रा में ये ठीक चलेगा। ऐसा स्वीकारने के बाद ही हवाई जहाज को रवाना करते हैं, उसके बावजूद भी crash होता है। रोज तो होता नहीं, कभी-कभी हो जाता है। हो जाता है इतना ही नहीं ऐसा होगा करके बहुत लोग पूर्व में भविष्यवाणी कर दिये थें, और सचमुच वो घटना के रूप में घटित हो गया। जबकि mechanically इस तरह से कोई पकड़ या इस तरह से कोई भविष्यवाणियाँ नहीं थीं, engineer लोग उस बात को पकड़ नहीं पाए थे, ज्योतिषी ने पकड़ा था और वो बात सही उतरी।

उत्तर : ठीक है, ये मान लिया गया, ये सब बातों को अनुभव भी किया गया है कई स्थितियों में, क्योंकि ज्योतिष के ऊपर हम जितना काम किया, उसमें ये सब बातें परिकल्पना में हमारा आता है। ये सब बात घटित भी हो सकता है, इसमें हमको कोई शंका नहीं है। किंतु कुल मिलाकर के भविष्यवाणी कहाँ गया? यंत्र के आधार पर चला गया। ये तो बात होता ही नहीं है, जो अभी train accident हुआ, उतने लोगों को एक साथ कोई मृत्यु योग का परिस्थिति बनता नहीं, आप आजमा करके देख लीजिए। आदमी की बेवकूफी से, यंत्र की गलती से, ये घटना घट सकती है। इसमें क्या हुई? किसी एक आदमी के कारण से सब आदमी मर गए। वो एक आदमी की गलती सबको ले जाने वाला योग आ गया। ऐसा बनता है। सही बात तो यही बनता है। उसको अपन, इतने लोगों को उसमें जितने भी थे, अभी हज़ार आदमी मर गए, मान लीजिए, उस मुहूर्त में मृत्यु योग सबका एक साथ बनता नहीं। आप प्रयोग करके देख लीजिए। अभी युद्ध में जो आदमी मर गए, उतने लोगों का उस समय में मृत्यु योग रहता नहीं। भूकंप में कहाँ मृत्यु योग रहता है? धरती धँस गई, धरती धँस करके यहाँ तालाब हो गया, यही जगह, मान लो। इसमें मृत्यु योग क्या करेगा? धरती का योग काम करेगा। हमारा कहने का मतलब यहाँ है। तो यंत्रों की रचयिता, यंत्रों का जो जातक है, उसको हम को पहचानना पड़ेगा।

प्रश्न : मूल प्रश्न तो बाबाजी छूट रहा है कि, इस तरह से ब्रह्माण्डीय किरणों का शरीर को प्रभावित करने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर : बता तो दिया ना भाई, ये तो मनुष्य के साथ है ये, ब्रह्माण्डीय किरणों का। अभी आपको बता दिया। अभी हम आपको अंगुली न्यास किया - एक आदमी गलती करता है, उससे हजार आदमी मरेगा – ऐसा भविष्यवाणी करिए। वो एक आदमी को यदि भविष्यवाणी कर पाते हैं, pointedly, उस स्थिति में उस आदमी से बचा जा सकता है।

प्रश्न : अभी अपन उपाय की चर्चा नहीं कर रहे बाबाजी, ब्रह्माण्डीय किरणों के द्वारा घटनाओं के घटने का प्रक्रिया क्या है?

उत्तर : अभी क्या बताया, ब्रह्माण्डीय किरण बहता रहता है, प्रभावित करता रहता है और सकारात्मक, नाकारात्मक घटनाओं को घटाता रहता है।समय calculation की मूल पूँजी जो हमने बताया ना, धरती में दो प्रकार की रेखा खींचा जाता है। एक अक्षांश रेखा, एक देशांतर रेखा। एक गोल-गोल रेखा, एक उत्तर ध्रुव, दक्षिण ध्रुव की रेखा। इसको खींचने पर अपने को छोटे से छोटे और बड़े से बड़े वर्ग मिलते हैं। उन-उन वर्ग पर इन ब्रह्माण्डीय किरणों का प्रभाव, जो बुध ग्रह के द्वारा कैसा प्रभाव होता है, और मंगल ग्रह के द्वारा कैसा प्रभाव होता है, उसको हम पहचाना है। यही ग्रहों को पहचानने का मतलब है। इसको पहले ध्रुवीकरण करिए। ये बहुत ही साधारण बात है, इतने को पहचाना ही जाता है। मैं समझता हूँ, इसके लिए बहुत पसीना गवाना नहीं है। इस मुहूर्त में शनि से जो reflect हो करके जो ब्रह्माण्डीय किरण आते हैं, उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, उसका कुछ निरीक्षण, परीक्षण भी किए हैं, कुछ परिकल्पनाएँ बनी भी है, और भी आगे परिकल्पनाएँ निरीक्षण होता रहेगा, ये प्रक्रिया चालू है। ठीक है?

प्रश्न : जिस तरह का प्रभाव एक ग्रह के द्वारा होता है पैदा, उस तरह के प्रभाव के लिए क्या चीज़ जिम्मेदार है?

उत्तर : जिम्मेदार जो है, मनुष्य, वो स्थली जो आक्षांश-रेखांश का वर्ग बताया वो स्थली, जो प्रभाव जिस ग्रहों के द्वारा आई वो मुहूर्त। ये स्थल, समय और उसका resource, ब्रह्माण्डीय किरणों का resource - इन तीनों मिल करके घटना घटती है। इन तीनों को पहचानना ही ज्योतिषशास्त्र का महत्वपूर्ण भूमिका है। जो कुछ भी महिमा कहो, यही ज्योतिषशास्त्र में हम लोग पहचानते हैं, इसी विधि से भविष्यवाणी होते ही है। इस समय में शनि का प्रभाव इस प्रकार से है, शनि का रुख़ पहचानने की विधि अलग है, शनि स्वस्थ है, अस्वस्थ है, रोग ग्रस्थ है, ग्रहण ग्रस्त है, परेशान है और ख़ुशहाली है, वो सबको पहचानने की विधियाँ है। इन विधि के आधार पर ख़ुशहाली के समय में वो क्या कर देता है शनि, वो ही ख़ुशहाली के समय में बृहस्पति क्या कर डालेगा, वो ही चीज़ मंगल ख़ुशहाली के समय में क्या कर डालेगा? इसको हम पहचानते ही हैं, इसमें कोई शंकाएं नहीं हैं। इसको पहचानने के बाद वो स्थान, वो समय को निर्धारित करते हैं, उस समय में उसके अनुसार फल क्या होता है, उसको हम देखते हैं। वो फल को बारम्बार हम observe किए रहते हैं। उसका सर्वेक्षण हमारे पास रहता है, उसके आधार पर फलश्रुति को आगे बदल करके या यथावत फलश्रुति करने की अभ्यास बना के रखे हैं। इसी ढंग से तो ज्योतिष चल रहा है।

प्रश्न : इस बात को बाबा एक ऐतिहासिक उदाहरण से समझेगें। जैसे- Nostradamus ने सन् 1553 में एक किताब लिखी, Hitler के Germany में तानाशाह के रूप में आने की और सारे दुनिया में एक युद्ध का तहलका मचाने की भविष्यवाणी उसने 450 साल पहले कर दी थी। वास्तव में आधा अक्षर की कमी से उसने हिस्टर नाम दिया था, बाद में हिटलर, अडोल्फ़ करके ऐसा नाम हुआ। तो जो आप बोलते हैं, कि एक आदमी को अगर रोका जा सके, दुर्घटनाएँ रूक सकती हैं। हिटलर को सत्ता में आने से रोकने के लिए वहाँ के राष्ट्रपति, वहाँ के जनता, अंतर्राष्ट्रीय, कम्युनिष्ट आंदोलन, Russia, सभी लोगों ने कोशिश की थीं, उसके बावजूद वो आदमी सत्ता में आ गया। और उस समय Germany बहुत कमज़ोर था, first world war के परिणामों के चलते। उसके बावजूद उसने Germany को उस समय का सबसे ताकतवर देश बनाया, दुनिया को रौंद दिया और लगभग 10 करोड़ आदमियों का मौत की घटना घटी। तो ऐसा एक मानवीय प्रयास होते हुए भी, जो घटना अभी घटी नहीं हैं, जिसका कोई संभावना तक नहीं है, 450 साल पहले उसने घोषणा भी कर दी। इस तरह के सैकड़ों उदाहरण हमारे पास हैं। मानवीय प्रयास के बावजूद हिटलर के घटना का रूक जाना संभव नहीं हुआ, भविष्यवाणी घटित हुआ।

उत्तर : इसमें बहुत साधारण बात है, सामान्य बुद्धि से इसका उत्तर निकलती है। पहले से भविष्यवाणी है, इस व्यक्ति नाश करेगा। उसको रोकने की बात आता है। रोकने के लिए जितने प्रकार की प्रवृत्ति होना चाहिए, उसमे कहीं ना कहीं किरकिरा है। वो नहीं रूका, क्योंकि घटना उसका गवाही है, तो घटना घटित हो गई। घटना घटित होने के लिए पहले से जिस व्यक्ति को भविष्य की सुगंध मिल गई या दुर्गंध मिल गई, उन्होंने बता दिया, वो घटित भी हो गई। और इसका मतलब ये नहीं हुआ, सभी भविष्यवाणियाँ फलित होना ही है। ये भी अपन को साथ-साथ में चलना चाहिए। सर्वाधिक जो है, मानव का आज भी, पहले भी शुभ घटना के पक्षधर हैं। ये आप मानिए, मेरी नज़रों में, आदिकाल से भी, शुभ घटना के ही पक्षधर है आदमी जात। तो इसके आधार पर क्या होता है, जितने भी दुर्घटनाएँ predict होते हैं, वो कम हो सकते हैं, अपने आप में। कोई-कोई दुर्घटनाएँ घटित भी होते हैं।

12. ध्वनि और रंग

विडिओ संदर्भ देखें: *video 13, time 36:23-49:46*

प्रश्न : ध्वनि में एक कण कंपन होता है, उसके बाजू में दूसरा कण में कंपन आता है, उसके बीच में जबकि सत्ता है, ये किस विधि से कंपन होता है?

उत्तर : दबाव विधि से। ताप भी दबाव विधि से ही पैर को आगे-आगे रखता है। ध्वनि भी दबाव के आधार पर ही आगे-आगे पैर रखता है।

प्रश्न : एक कण और दूसरे कण के बीच में, इस कण में जो कंपन है, ध्वनि है, वो इस कण तक कैसे पहुँच जा रहा है, बीच में सत्ता है, तो ये कण स्वीकार ले रहा है?

उत्तर : इस कण, उस कण के बीच सत्ता है, इस कण में जो कंपन है, उसको वो स्वीकारा ही है। क्योंकि इसका प्रतिबिम्ब उसका ऊपर है ही है।

प्रश्न : दबाव विधि कैसे, दबाव विधि मानें?

उत्तर : ये जो कंपन होता है, दबाव है। आवेश, वो आवेश जो है ना इसमें पहुँचता है, ये भी अपना वैसे ही पंख हिलाता है तो दूसरे के पास पहुँचता है।

प्रश्न : इसमें पहुँचता है या ये स्वयं उसको स्वीकार लेता है?

उत्तर : स्वीकारने को बैठा ही रहता है, ये पहुँचता भी है, ऐसा योग है ये। तभी तो नृत्य बनता है, ये स्वीकारने वाला, यह पहुँचने वाला, दोनों होने पर नृत्य होता है।

प्रश्न : जैसे एक व्यक्ति छत के ऊपर से धरती पर कूदता है, वो धरती के पास पहुँचता है या धरती उसके पास पहुँचता है?

उत्तर : ठोस-ठोस के साथ, विरल विरल के साथ, तरल तरल के साथ, सहअस्तित्व में होना चाहता है। ये आशय सभी ठोस वस्तु के साथ जुड़ा है। प्राचीन क़ालीन द्रवैय्या है, यथावत है।

प्रश्न : प्रश्न ये है, धरती हमको खींच रही है, इसके कारण हम नीचे जा रहे हैं, या स्वयं कूद के नीचे जाना चाह रहे हैं?

उत्तर : ठोस, ठोस के साथ पहुँचने की सिद्धान्त है ये। इसके खींचने वाला, खिचांने वाला कुछ भी नहीं है।

प्रश्न : छत भी तो ठोस है?

उत्तर : ठोस को रोकने के लिए हम यंत्र बनाए हैं। इसको गिराने के लिए जो ताकत लगी है उसको आप नाप लिया है। इसको आपने atmospheric pressure नाम दिया है। उसको रोकने के लिए कितना क्षेत्रफल में कितना pressure होता है, उसको number बता देता है गणित, 1 से 9 तक की, 9 digit वो बता देता है। बताने के बाद आप सोचते हो उसको रोकने के लिए इससे दुगना बल लगाया जाए, रोक लगाया जाए, तिगुना, चौगुना, दस गुना लगाया जाए, ऐसा आप गणित करते हो। लगा करके उसके अनुसार material को यंत्रित करते हो, ये रुक जाता है।

प्रश्न : प्रकाश से जुड़ा एक चीज़ है रंग। रंग वस्तु रूप में क्या है?

उत्तर : वस्तु के चलते रंग होता है, वस्तु विहीन स्थिति में कोई रंग नहीं। पानी के ऊपर आप सूर्य का प्रतिबिम्ब डालो, उसका अनुबिम्ब होने पर, पानी के अंदर जो chemicals की जो रंग है, वो उसके ऊपर दिखता है।

प्रश्न : मतलब वस्तु में रंग होता है, प्रकाश में रंग नहीं होता?

उत्तर : नहीं होता। अब इसके ऊपर हरा लगा दो हरा दिखता है, पीला लगा दो पीला दिखता है, ये तो आपके सामनें रखा हुआ है।

प्रश्न : जैसे एक कच्चा फल है, हरे रंग का होता हे, उसको रख देते हैं, 2 दिन बाद वो पीला हो जाता है, ये जो पीला हो गया अपने आप, इसमें क्या चीज़ हो गया?

उत्तर : chemicals का परिवर्तन, आप से अभी थोड़ा देर पहली बात हुई थी, रासायनिक परिवर्तन को काल से जोड़ा गया है, इत्यादि।

प्रश्न : विज्ञान के अनुसार सूर्य के प्रकाश में 7 रंग होता हैं?

उत्तर : आप 11 रंग बता लो, हम 16 रंग बता लूँ, प्रकाश में कोई रंग होता नहीं। वस्तु में रासायनिक द्रव्यों के आधार पर, विभिन्न उसमें रंग होता है।

प्रश्न : ये हरा आम है वो पीला हो गया इसका मतलब उसका रासायनिक संरचना बदल गई?

उत्तर : हाँ बदल गई।

प्रश्न : हरी चीज़ पे नीले रंग का प्रकाश डालने से तीसरा रंग बन जाता है।

उत्तर : नीला प्रकाश क्या होता है? इसके ऊपर नीला कपड़ा पहना दिया, स्वाभाविक है।

प्रश्न : वस्तु का रंग तो वोही रहता है या वस्तु का रंग बदल जाता है?

उत्तर : देखो, ये जैसा कहते हैं। एक तरफ ये लाल इसके ऊपर उढ़ाये हैं, इसके ऊपर पीला उढ़ाये हैं, दोनों को एकत्रित करने से तीसरा कुछ दिखता है। इसके ऊपर लाल हटा दो, पीला हटा दो ये दोनों सफेद ही हैं।

प्रश्न : अभी जो चर्चा किए उसमें ये निष्कर्ष निकला कि रंग प्रकाश में नहीं, वस्तु में होता है। वस्तु में किस स्तर पर रंग को हम समझ सकते हैं? परमाणु अंशों के स्तर पर, परमाणु के स्तर पर, अणु के स्तर पर या अणु से रचित पिण्डों के स्तर पर? हमको जो दिखाई देता है आँखों से वो अणु रचित पिण्ड़ ही है। अणु भी आँखों से नहीं दिखता, परमाणु और परमाणु अंशों की बात ही दूर है। रंग तो अणु रचित पिण्ड में दिखता है, उसका जो आधार है, वो परमाणु अंशों में रहता है या उस के बाद?

उत्तर : जैसा आपने अभी बताया कि सोने में पीला होता है, चाँदी सफेद दिखता है। ये मूलतः कहाँ से शुरूआत हुई? परमाणु में निहित अंशों के आधार पर शुरू हुआ। परमाणु को देखने पर ना लाल दिखेगा, ना पीला दिखेगा, कुछ भी नहीं दिखेगा। परमाणु से रचित अणु को देखोगे, इस आँखों से उसमें भी रंग नहीं दिखेगा। उसको बहुत बड़ी भारी सूक्ष्मदर्शी काँच से देखने पर संभव है अणु में दिखता होगा। क्योंकि अणु स्थिर होता है, अणु परमाणु के रूप में गतित स्थिति से भिन्न स्वरूप में दिखता है। संभव है बहुत ही powerful glass में दिख जाए, किन्तु जो सामान्य अपने आँखों में दिखने के लिए, अणु रचित पिण्ड में ही हमको पीला दिखता है, लाल दिखता है, सारे रंग दिखता है।

प्रश्न : अनुभव में देखा तो अंशों में और परमाणु में वो रंग भी दिखता है क्या?

उत्तर : परमाणु में रंग रहता ही है, वो दिखता नहीं हैं।

प्रश्न : आपने तो परमाणु देखा है।

उत्तर : परमाणु में ही रंग का स्वरूप बना ही रहती है, वो दिखने की बात पर अपन बात कर रहे हैं। रहता ही है, परमाणु में रंग नहीं रहेगा तो अणु में काहे को आएगा, अणु में नहीं होगा तो अणु रचित रचना में कैसे आएगा?

प्रश्न : आप बोले आँख से नहीं दिखता सूक्ष्मदर्शी से देखना मुश्किल है, जब अनुभव आपको.. ?

उत्तर : अनुभव की ही बात कह रहा हूँ। परमाणु में रंग रहता ही है। वो रंग को आँखों से देखने के बीच में कितना क्रिया चाहिए, उसके बारे में अभी बात कर रहे हैं। परमाणु से अणु होता है, ये अपने को पता है, अणु से अणु रचित पिण्ड़ होता है, ये भी अपने को पता रहता है। बहुत सूक्ष्मदर्शी काँच से देखने पर अणु में पीलापन दिखेगा, सोने का अणु को देखने से। उसके बाद हमारा आँखों से देखने का अणु रचित पिण्डों में दिखता ही है। वैसे ही चाँदी का, सोने का, और धातुओं का सबका रंग दिखता ही है। वैसे ही लोहे का अणु भी ऐसे ही है। तो ये सभी चीज़ अपने-अपने रंग के रूप में एक स्थिति हुआ, ये परमाणु अंशों के आधार पर रंग जो बनता है।

प्रश्न : जीवन परमाणु किस रंग का होता है?

उत्तर : कुछ भी नहीं होता है।

प्रश्न : सारे परमाणु अंश एक ही जाति के हैं, मतलब उनका रंग तो एक ही हो गया?

उत्तर : परमाणु अंशों का संख्या भेद होने से ये सब चीज़ होता है, ये पता है? परमाणु अंश का एक दूसरे पर पड़ने वाली प्रतिबिम्ब ही है रंग। किसी विधि से प्रतिबिम्ब पड़ने से पीला दिखेगा, किसी विधि से प्रतिबिम्ब पड़ने से लाला दिखेगा, ऐसा बना हुआ है।

प्रश्नः मतलब वस्तु में रंग होते हुए भी, जो रंगों में परिवर्तन होता है, उसका मुख्य कारण प्रतिबिम्बन है। इससे और एक बात है, जैसे silica से या alumina से मिले हुए कई रत्न बनते हैं, मणि जिसको हम कहते हैं। वो पारदर्शी हो जाते हैं? मतलब रंगहीन हो जाते हैं, तो कई रंग रंगों के चीज़ों का आपस में प्रतिबिम्बन से रंगहीन भी हो जाते हैं?

उत्तर : ये क्या हैं, एक दूसरे के रंग को एक प्रकार से हजम कर लेते हैं, उस विधि से है वो। हजम करने का मतलब इस रंग के सामने ये रंग चुप हो जाता है, मौन हो जाता है। उसको कहते हैं, neutralization। इस ढंग से इसका काम बनता है। अलग-अलग देखोगे तो सब रंग दिखता है। जैसा अलग-अलग 4 रंग देखा, उसको चारों को एक जगह में ला दिए ये सब सफेद हो गया।

प्रश्न : वो तो होता ही है, alumina से कुछ रत्न बनते है, alumina का रंग कुछ और है। पूरा crystal formation का मतलब ज्यादातर रंगहीन हो जाना है।

उत्तर : जैसा कोयला, काला दिखता है। कोयला के आगे जो रचना है, वो graphite कहते हैं। वो graphite चमकदार होता है, कोयला चमकदार होता नहीं। graphite से आगे हीरा बनता है, केवल चमकदार रहता है, काला रहता ही नहीं, जबकि वो cent percent carbon कहा जाता है, किसको? हीरा को। उस पर electricity धायें से चलता है। अभी हीरे को पहचानते कैसे हैं? हीरे जैसा काँच को बनाना बहुत सुगम हो गया। इसको अलग कैसे किया जाए? हीरे के टुकड़े को बैठाते हैं, electrical charge करते हैं, नीचे बल्ब जलता है तो हीरा है, नहीं तो काँच का है। इस ढंग से परीक्षण किया जाता है।

13. ज्वार भाटा और विद्युत

विडिओ संदर्भ देखें: *video 14, time 00:00-14:08*

धरती और सूर्य का सम्मुखता, इसकी जो प्रकार, ये कैसे धरती के सामने घूम रहा है? ये धरती के सामने घूमने की जो तरीका है धरती का, ये ऐसा घूमता है, ऐसा सोया हुआ सूर्य के सामने रहता है सदा। ये जिस ओर सरकता है, उसको हम उत्तर कहते हैं।

प्रश्न : जो वर्तुल गति अपन धरती का देखेंगे तो वर्तुल गति का जो direction है, वो north direction है।

उत्तर : पूरा सूर्य के चारों तरफ ऐसा चलता है, जबकि सूर्य के इस ओर आने से भी आगे सरकता है, उसी को उत्तर कह रहे हैं हम, उसके आगे सरक करके यहाँ आता है तभी भी आगे सरकने वाले विधा को हम उत्तर कह रहे हैं, ऐसा बना हुआ है।

प्रश्न : उत्तर और दक्षिण तो धरती पर रहने वाले लोगों के लिए है, ये सत्ता के लिए उत्तर दक्षिण नहीं है, पूर्व और पश्चिम भी हम बोलते हैं सूरज के सापेक्ष और उत्तर और दक्षिण जब बोलते हैं, अभी हम ध्रुव तारा के सापेक्ष बोलते हैं। लेकिन यदि हम गति के रूप में देखेगें, वर्तुल गति में, तो बाबाजी ये समझा रहे हैं कि पृथ्वी का जो गति, जिस दिशा में वर्तुल गति बन रही है उस दिशा को हम north pole कह रहे हैं।

उत्तर : बस ऐसा बनी रहती है। ये चलते-चलते इसका निश्चित सरकने की विधि है, सरकने को भी वर्तुलात्मक गति कहते हैं। वो सरकता हुआ स्थिति में क्या होता है, सिर को ऐसा वैसा करना होता है। ऐसा करने पर क्या होगा, इस ओर दौड़ेगा समुद्र, वैसा कर दिया तो नीचे दौड़ेगा, बस इतना ही बात है। वो कम्पनात्मक गति वश ही ज्वार भाटा है।

प्रश्न : मतलब धरती में कम्पनात्मक गति होती है, इसके कारण ठोस तो हट जाता है, पानी तरल होने के कारण थोड़े देर में हटता है, और हवा और देर में हटती है।

उत्तर : इस ढंग से ज्वार भाटा, उसको अभी बच्चों को ये पढ़ाना चाहते हैं, चन्द्रमा ऊपर खींचता है पानी को।

प्रश्न : वैज्ञानिक लोग बोलते हैं कि चन्द्रमा खींचता है। चंद्रमा और पृथ्वी दोनों अलग-अलग शून्याकर्षण में हैं।

उत्तर : शून्याकर्षण में रहना कहाँ पहचाने हैं?

प्रश्न : वैज्ञानिक लोग बोलते हैं कि दोनों का आकर्षण बल से होता है।

उत्तर : हाँ वोही खींचातानी में हैं, एक को दूसरा खींचता है, ऐसा उनका सोचना है। अपन क्या कहते हैं, दोनों शून्याकर्षण में हैं, दोनों स्वतंत्र अपने ढंग से काम कर रहे हैं, अपने गति से रह रहे हैं, हो रहे हैं, विकसित हो रहे हैं ऐसा हम कह रहे हैं। ये ठीक है, वो ठीक है सोच लो।

प्रश्न : ये पाते हैं कि दिन में रोज ज्वार भाटा होता है और ये पाया गया है कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन ज्वार भाटा बहुत ज्यादा हो जाता है?

उत्तर : हवा के आधार पर ज्वार भाटा है वो हर समय रहता है। हवा धरती की surface में घुम रहा है, ये तो आप को पता है, वो पानी के ऊपर भी बह रहा है, ये भी पता है। समुद्र में जो पानी के ऊपर जो हवा है तटिय स्थल में ही प्रदर्शित हो पाता है, उसको भी हर दिन की ज्वार भाटा हम कहेंगें। लहर होती रहती है। हर 15-15 दिन में ये बढ़ता है, घटता है। उसमें कम्पनात्मक गति हर 15 दिन में एक बार ऊपर नीचे होने वाला होता है, फलस्वरूप ज्यादा दिखता है।

प्रश्न : कंपनात्मक गति रोज नहीं होता है?

उत्तर : जो कम्पनात्मक गति है कुछ नहीं होता है ऐसा नहीं है जितना होता है होता ही रहता है, किन्तु 15 दिन में एक बार जो ज्यादा से ज्यादा होना है, वो हो जाता है। कम्पनात्मक गति तो हर गति में रहता ही है।

प्रश्न : इसका मतलब है कम्पनात्मक गति बदलती रहती है?

उत्तर : हर वस्तु में, हर परमाणु में कंपनात्मक गति है।

प्रश्न : कम्पनात्मक गति तो है लेकिन जितनी कम्पनात्मक गति है, वो वोही रहती है या कम ज्यादा होती रहती है?

उत्तर : कम्पनात्मक गति सदा बना रहता है। धरती का सिर जो है ना, उत्तर की जो ध्रुव है, ऊपर उठना नीचे होना बात होता है। वो भी एक कंपन है, उस समय में ज्वार भाटा अधिक होता है।

प्रश्न : तो वो ज्वार भाटा जो होता है जो गति है ऊपर नीचे होने के आधार पर हो रही है, लेकिन ये रोज ही होनी चाहिए, 15 दिन के बाद?

उत्तर : रोज में जितना कंपन रहता है उसके against में तो हवा ही चल रहा है, उसमें होने वाले ज्वार भाटा होता ही रहता है। जो ज्यादा ज्वार भाटा होता है उसके बारे में बात कर रहे हैं।

प्रश्न : इसका मतलब है हर 15 दिन में कुछ ज्यादा हिलती है?

उत्तर : हाँ हर 15 दिन में।

प्रश्न : पृथ्वी पर यदि किसी वस्तु को तौला जायें, यदि वो 6 किलो मिलता है, तो चन्द्रमा में उसी वस्तु का वजन 1 किलो मिलता है, ऐसा अभी विज्ञानिक मानते हैं। कम मिलता है इतना तो पक्का है।

उत्तर : जितना गुणा कम है, उतना कम मिलेगा। चन्द्रमा जितना बड़ा है, धरती की अपेक्षा में चौगुना होगा। चन्द्रमा के चौगुणा यदि धरती है, वहाँ 1 किलो होगा तो यहाँ 4 किलो होगा। यहाँ 4 किलो होगा तो वहाँ 1 किलो होगा। ये

क्या चीज़ है, बल ये भी बताया था, ठोस ठोस के साथ सहअस्तित्व में होना चाहता है, बीच में आप रोकते हो उसका नाम है बल। ये बताया था। ये बात पूरा हो गया।

प्रश्न : विद्युत क्या है?

उत्तर : चुम्बकीय धारा को विखण्डित करने पर विद्युत कहलाता है।

प्रश्न : जैसे एक वस्तु में विद्युत बह रहा है एक तार में, तो उसको छूने से अपने को झटका भी लगता है और हाथ भी जल जाता है, आग लग जाती है। तो क्या चीज़ बह रहा है उसमें?

उत्तर : उसमें विखण्डित चुम्बकीय धारा बह रहा है।

प्रश्न : वस्तु के रूप में कुछ चीज़ एक जगह से दूसरे जगह तक जा रहा है या नहीं?

उत्तर : वस्तु के रूप में कुछ नहीं है, जो माध्यम है उसमें स्पंदनशीलता बढ़ जाता है। उसका स्वाभाविक स्पंदनशीलता से बहुत अधिक बढ़ जाता है। उसी का स्पंदनशीलता का जो गति है, मनुष्य को झटका लगाता है, जला देता है, ताप देता है, सब कुछ कर देता है। क्योंकि उस गति के साथ हमारा तालमेल नहीं है, अपने गति की ओर ले जाने के लिए वो सब कर देता है तब तक इसका खट कर्म हो जाता है।

प्रश्न : मतलब हर वस्तु में संकुचन, प्रसारण है ही, हर धातु में भी है? तो विद्युत का मतलब उसके संकुचन प्रसारण बहुत ज्यादा बढ़ जाता है।

उत्तर : speed भी बढ़ जाता है, लम्बाई-चैड़ाई भी बढ़ जाता है।

प्रश्न : और घाट जाना भी हो सकता है? संकुचन, प्रसारण बहुत ज्यादा हो जाए बहुत कम हो जाए?

उत्तर : कम होना विद्युत का मतलब नहीं है, बढ़ना ही विद्युत का मतलब है। जो संकुचन प्रसारण रहता है वो एक मिनट में 10 होता रहा होगा तो 10 लाख कर देगा, छुएगा तो आदमी को अजीबो गरीबा नहीं होगा क्या?

प्रश्न : क्या बिना चुम्बक के विद्युत नहीं हो सकता?

उत्तर : हाँ, विद्युत चुम्बकीयता में परिवर्तित हो करके सकल कर्म, कुकर्म, सुकर्म सब कर देता है। शव को भी जला देता है, चूल्हें में आग भी बन जाता हैं, पंखें में दबाव से वो घूम भी देता है।

प्रश्न : तो विद्युत आवेश है, चुम्बक आवेश नहीं है?

उत्तर : चुम्बक आवेश नहीं, वो स्थिति है, विद्युत गति है।

प्रश्न : तो विद्युत आवेश है क्योंकि उसको सामान्य हो ही जाना है, एक दिन।

उत्तर : सामान्य होने के लिए तो चुम्बकीयता में परिवर्तित होता है।

प्रश्न : मतलब विद्युत आवेश है इसलिए वो सामान्य होगा, सामान्य होने के क्रम में एक समय चुम्बक बन जाएगा पूरी तरह, चुंबकीय धरा में परिवर्तित हो जाएगा ?

उत्तर : चुम्बकीयता में परिवर्तित होकरके उसी को हम earth हो गया कहते हैं, सामान्य हो गया कहते हैं, प्रकृति में विलय हो गया कहते हैं।

प्रश्न : अपन धरती में कितना भी voltage तैयार करते हैं, voltage और current वो अपन earth कर देते हैं, तो, धरती उसको पी के खतम कर देती है?

उत्तर : इसीलिए विद्युत को खतम नहीं किया जा सकता, कोयला तो खतम हो जाएगा। विद्युत को यदि हम प्राप्त करते रहे विद्युत खतम नहीं होगा। क्योंकि घूमता ही रहता है।

प्रश्न : विद्युत को earth करा दिया तो उसका आवेश खतम हो गया?

उत्तर : आवेश खतम हो गया, earth से पुनः विद्युत मिलता रहेगा। इंधन विधि को बदलने के बाद भी, अभी जैसा प्रवाह बल से भी विद्युत को प्राप्त किया जा सकता है, विद्युत में कौन सा quality बदलेगा? विद्युत ही होगा। तो ये कोयला से होने वाली दुष्कृत्य बंद हो जाएगी।

प्रश्न : विद्युत आवर्तनशील है, कोयला आवर्तनशील नहीं है।

उत्तर : इतना ही बात है।

प्रश्न : ये जो विद्युत आवेश earth हो जाता है, इसका क्या मतलब है? कहाँ चला गया वो?

उत्तर : हर आवेश सामान्य होना है, ये पता है ना। आवेश कैसा हुआ था? चुम्बकीय धारा को विखण्डित करने से आवेश हुआ। वो आवेश सामान्य हो गया कहाँ? जहाँ चुम्बक ही बन करके सामान्य हो गया। चुम्बकत्व में परिवर्तित हो गया, धारा समाप्त हो गया, चुम्बकीयता रह गया। धरती की जो चुम्बकीयता है, उसी के साथ विलय हो गया। धरती में चुम्बकीय द्रव्य है, उसी की धारा को विखण्डित करने पर विद्युत मिलती है। वो टुकड़े-टुकडे होने पर जो आवेश होता है, उस आवेश को हम विद्युत कह रहे हैं। इसीलिए विद्युत और चुम्बकीय बल इसका नाम है। चुम्बकीयता को विद्युत से अलग नहीं किया जा सकता। अलग हो नहीं सकता।

प्रश्न : एक प्रयोग पूर्वक देखा गया है कि चुम्बक के दो ध्रुवों को रखकर, उसके बीच में किसी coil को यदि हिलायें, तो coil में विद्युत धारा चली जाती है। तो हम जितने शक्ति से उसको हिलाते हैं, क्या उतना ही शक्ति उस आवेश से मिलेगा या उससे कम मिलेगा?

उत्तर : कम।

14. ज्वारभाटा और पूर्णिमा का प्रभाव

विडिओ संदर्भ देखें: *video 14, time 14:09-29:09*

प्रश्न : अभी तक मान्यता है कि ज्वार भाटा चन्द्रमा के आकर्षण के कारण होता है, और ये भी एक मान्यता है कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन ज्वार भाटा बहुत ज्यादा होता है, और तीसरी बात है, पूर्णिमा और अमावास्या के दिन बहुत सारे लोगों में पागलपन का दौरा भी पड़ता है, बहुत सारे लोगों को जो ज्ञान हुआ है, ऐसा माना जाता है, कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन ही होता है। उसका प्रभाव जीवन पर पड़ता है, ऐसा निष्कर्ष निकल रहा है। तो इसके बारे में?

उत्तर : शरीर को जीवन मानते है, तो फर्क पड़ता ही है, एक तो बात उसी में पूरा हो जाता है। जो कुछ भी असर है, ये जितने भी भौतिक रासायनिक प्रक्रिया से, तो शरीर तक ही उसका असर है। यदि जागृत जीवन होता है, यदि शरीर बेकार होता है, तो भी कोई फर्क नहीं, कार हो गया तो भी फर्क नहीं। जागृत नहीं है, शरीर के विकार के साथ जीवन भी विकृत हो जाता है, विकृती की पीड़ा को भोगता है, यही देखा गया है।

ज्वार भाटा के बारे में पहले हो चुका है, ये धरती की चाल के आधार पर, धरती की कंपन के आधार पर, ज्वार भाटा होता है। और जो बात आप कहते हैं रोग की बारे में जो ज्ञान की बारे में, हर दिन ही ज्ञान हुआ है, किसी ना किसी को, हर दिन ही कोई ना कोई पागल हुए हैं, हर दिन ही कोई ना कोई पागल आदमी अच्छा भी हुआ है, कोई ना कोई आदमी जो अच्छा आदमी मानते रहे वो कोई ना कोई भद्द काम किया ही हर दिन, हर तिथि में। अब किसको हम पकड़ के रोवें भाई!

प्रश्न : पूरा विश्व का जो survey है ना उसमें सबसे ज्यादा पागल पूर्णिमा तिथि के आस पास एक दो दिन के अंतर्गत हुए हैं, क्योंकि पहले हम लोग जो मानते थे कि पानी को आकर्षित करता है चन्द्रमा, और वैसे ही 80% पानी आदमी के शरीर में है, यहाँ तक की जो दिमाग में grey matter है वो भी तरल है, तो चन्द्रमा का प्रभाव उसके ऊपर भी पड़ता है। "चंद्रमा मनसो जातः" मंत्र शास्त्र ज्ञान भी है और विज्ञानिक, ऐसा मान्यता है। तो उसके तहत बहुत जोर से जो उद्वेलन होता है उसको जो बर्दस्त नहीं कर सका वो पागल हो जाता है। अच्छा world survey ग्रुप में परिणाम भी ऐसा आया है, कोई ना कोई दिन पागल होते हैं ऐसा मत बोलिए, इस particular point के ऊपर बोलिए।

उत्तर : वो ही बात करें, एक तो generalize किया इसको, particular आप जो कह रहे हैं उसी को मान लेते हैं।

प्रश्न : और सबसे ज्यादा ज्ञान भी जो अभी record मिलता है, सबसे ज्यादा ज्ञान भी पूर्णिमा तिथि और अमावस्या तिथि के आस पास लोगों को हुआ है।

उत्तर : अच्छा, होगा, होगा ऐसा मान लेते हैं हम, हमको इसमे कोई तकलीफ नहीं है, मानिये जैसा कोई जगह में ज्यादा accident हो गया ये भी कहते हैं, कोई जगह में नदी में, इसी जगह में ज्यादा लोग डूबे, ये भी कहते हैं, कोई

झाड़ के ऊपर से यही झाड़ के ऊपर से ज्यादा लोग गिरे, ये भी कहते हैं, ये सब चीज़ हम सुन कर आयें हैं। इसमें कोई शंका करने की जरूरत नहीं है, आप जो सुने हो में भी सुना हूँ, हो गया। हुआ भी होगा, शरीर को जीवन मानते तक ये सब संभव है। शरीर के अनुसार पागल होने वाले आदमीयों को कौन दिन पागल ना हो, हर दिन हो सकता है, हो सकता है ऐसे दिन में ज्यादा लोग हो गये, क्या बुरा हुआ, हो जाए।

प्रश्न : उसका कारण क्या है?

उत्तर : वोही शरीर को जीवन मानना।

प्रश्न : शरीर को जीवन तो हमेशा माने रहता है, उसी दिन ही ज्यादा असर क्यूँ हुआ?

उत्तर : अमावस्या और पूर्णिमा के दिन ज्यादा कामावेश हो जाए, भोगावेश हो जाए, लाभावेश हो जाए और कोई आवेश हो जाए, हो जाए, क्या बुरा हुआ? कोई ना कोई आवेश के बिना आदमी पागल नहीं होता है ये सही है।

प्रश्न : उस दिन, पूर्णिमा दिन सबसे ज्यादा आवेश क्यों हुआ?

उत्तर : आवेश इसलिए होगा मनुष्य जो है ना उन दिनों को अनुकूल माना होगा। पूर्णिमा अमावस्या या और कोई संधि कालों में मनुष्य को इस प्रकार के संवेदनशील आवेश अधिक होता होगा, इसलिए आदमी पागल हो जाता है, रोगी हो जाता है।

प्रश्न : होगा की भाषा में आप मत बोलिए, होता है, क्यों होता है उसको बताइए?

उत्तर : आवेश से होता है, ये बता तो दिया।

प्रश्न : आवेश कैसे पैदा होता है?

उत्तर : आवेश इन्हीं तीन, संवेदनशीलता के आधार पर।

प्रश्न : अभी तक जो मान्यता रही है ना, चंद्रमा की वजह से आदमी की संवेदनशीलता बढ़ जाती है?

उत्तर : ठीक है दद्दा, चंद्रमा जो लफंगा ग्रह है, पहले से हमारा इसमे लिखा ही है। ये लिखा हुआ है भाई – lunatic। ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को कोई संयतशील ग्रह नहीं माने हैं, और चन्द्रमा और शुक्र ये दोनों को अय्याश ही माने हैं। किताबों में लिखा है, गुरु को व्यभिचारी ग्रह। गुरुजी को, गुरु महराज जी को, लिखा नहीं है, चंद्रमा के यहाँ जा करके व्यभिचार किया है, लिखा है कथा, अब उसके बाद क्या करेंगे हम। इन्द्र तो हर जगह में व्यभिचार किया है, उसका पूजा करते ही हैं, आदमी ऐसा चाहता होगा, इसीलिए ना पूजा करता होगा।

प्रश्न : नहीं उसको थोड़ा अलग करना पड़ेगा बाबा, गुरु नाम का एक व्यक्ति जो देवताओं के गुरु थे अलग हैं, और गुरु नाम का एक ग्रह, दोनों को जोड़ के अपन क्यों?

उत्तर : ठीक है मान लेते हैं, ग्रह होगा उसका कोई व्यभिचार नहीं है, कोई अत्याचार नहीं है, वो जैसा पहले था। जैसा भैंस पूर्व काल में जैसा था, वैसा ही रहता है, तुम horn बजते रहो वैसे ही रहता है। वैसे ही चन्द्रमा भी है, गुरु भी है, ग्रह के रूप में।

प्रश्न : अपने यहाँ जो चाचा है ना, हर पूर्णिमा में पागल होता है, हर पूर्णिमा के समय आता है ना तो अपने यहाँ चाचा पागल होता है?

उत्तर : ठीक है ना दद्दा, मान लिए ना भाई, वो तो बात सब मान लिए, अब क्या चाहते हो?

प्रश्न : कारण?

उत्तर : कारण यही है, ऐसे समय में ज्यादा आदमी आवेशित होता होगा पागल होता है। आवेश ही ना होता है?

प्रश्न : बाबा आवेश की प्रेरणा है या ये आवेश का जो कारण है, ये चंद्रमा है क्या?

उत्तर : वो चंद्रमा कोई अकेले ने, बता तो दिया, हमारा जो भैंस जैसा आदि काल में चाल में था वो ही चाल में चंद्रमा है। आज एक ग्रह है।

प्रश्न : बाबा आवेश तो जीवन में होता है?

उत्तर : आवेश जीवन में हो, आवेश के बारे में, भ्रमवश आवेश।

प्रश्न : जी बाबा, तो ये पूर्णिमा और अमावास्या का इस आवेश से क्या कोई संबंध होता है?

उत्तर : हमको तो कोई संबंध नहीं दिखता।

प्रश्न : पागलपन में अपने माँ बाप को भी मार डाला?

उत्तर : ये तो बात हो गई है ना दद्दा, पागलपन का मतलब सब जानित हीं, ऐसा मान के चला।

प्रश्न : ये गाँजा पीने की वजह से हुआ होगा?

उत्तर : गांजा पिये, दारू पीवे, अफीम पीवे, चरस पीवे, कोई भी चीज़ खाए पिये, आवेशित हो गये, पागल हो गये, मर गये अब क्या करोगे तुम। अब मरने वालों के संख्या को आप खोजोगे कोई ना कोई एक दिन ज्यादा ही मरते हैं, आप ये मानिये।

प्रश्न : अभी जो survey हुआ है दुर्घटनाओं का, उसमे जो दिशा शूल वगैरह जिसको हम ज्योतिष में खराब योग मानते हैं ना, उस दिन सर्वाधिक दुर्घटनाएँ हुई हैं ऐसा भी survey report में है?

उत्तर : ये सब जो है ना कुनबा जोड़ने की बात है। कोई भी घटना हुआ हम तो इसे वस्तु से जोड़ेंगे, दिशा से जोड़ेंगे, जोगनी से जोड़ेंगे, नक्षत्र से जोड़ेंगे, करण से जोड़ेंगे, सबसे जोड़ लेगें हम, हम तो चतुर आदमी हैं ना भाई, हम को कौन रोकेगा। हमारा मन की पकौड़ी को हम कैसा खुबसूरत में रखना है, हम सब जानते हैं। हम समझता हूँ ऐसा कोई आदमी खामी नहीं है, ये इसके generalize करने पर यही हमको दिखता है, आदमी जो है ना अपने भ्रमवश संवेदनशील उछालों में आ कर आदमी पागल होता है, और कोई ना कोई आशा बड़ी निराशा में परिवर्तित होने पर पागल होता है, तीसरा कोई ना कोई नशा पदार्थों को सेवन करके, आदमी पागल हो जाता है। कोई ना कोई घटती ही है, आदमी पागल हो जाता है, आदमी पागल होने के बाद जितना नुकसान पहुँचा सकता है, पहुँचाता भी है। उसके बाद बाकी लोग सब लोग मिलकर के उनका नुकसान पहुँचा देते हैं। इतना ही तो हुआ है। इसमें ना चन्द्रमा का ना वृहस्पति का दद्दा, वो भैंस जैसे है, उसमें कोई भी किसी को पागल बनाने का काम नहीं है। हम आपको दूसरे बात बताते हैं, इस धरती के लिए सभी ब्रह्मांडीय किरण अनुकूल होने के बाद, ये धरती विकसित हुआ है। उसके बाद हम लोग बात करते हैं तो हम क्या कर डालूँ बताओ?

प्रश्न : तो बाबा इस बात को स्वीकारनें के बाद, ज्योतिष के द्वारा जो अपन अशुभ प्रभावों की जो गणना करते हैं वो पूरा ध्वस्त हो जाता है?

उत्तर : वो पुनः विचार करने की मुद्दा है, लाज बचाना होगा तो पुनर्विचार करना पड़ेगा। यदि लाज बचाना नहीं है तो अपन ऐसे ही बताते ही रहेंगे।

प्रश्न : पूरा हिल जाएगा ना बाबा ?

उत्तर : हिलना क्या है, देखो ग्रहों का प्रभाव है, इस बात तय है। धरती का भी प्रभाव है दूसरे ग्रहों के ऊपर, और ग्रहों का प्रभाव धरती पर भी है, इसको आप एक ध्रुवाँक बनाइये। परस्पर ग्रहों का प्रभाव इस धरती में ये गवाहित हो चुकी है, अनुकूल है।

प्रश्न : अनुकूलता का परिभाषा?

उत्तर : अनुकूलता का परिभाषा ये है, यहाँ विकास हो चुकी है। अनुकूल नहीं होता तो बिलकुल इसमें कोई विकास ही नहीं होना था। ये बात पूरा होता है, यहाँ एक त्रिताल टूटती है। अब इसको ध्रुवाँक मनाते हैं आप, यदि इसको नहीं मनाना हो तो अपन मनमानी करवे करेंगे। इसको ध्रुव के रूप में स्वीकार करते हैं, जो ज्योतिषी कि जितने भी पहल है, सोचने की, समझाने की और निर्णय लेने की, जो तरीके हम अभी तक अपनाये हैं, उसको पुर्नविचार करना चाहिए। मेरा request ऐसा है। यदि नहीं करना हो तो उदारता है।

ये क्या बताया, ब्रह्मांडीय किरण इस धरती के लिए अनुकूल है। आदमी क्यों पागल होता है उसको खोजिये आपको मिलेगा, संवेदनशीलता की उछाल से, नशाखोरी से, बददिमाग से, बदकर्मों में ज्यादा से ज्यादा सफल होने से आदमी पागल होता है, ये तो सब देखा हुआ बात है। ज्योतिष में उसको बताएंगे नहीं। इसको कोन ज्योतिषी बताया है, कोई नहीं बताया है।

प्रश्न : नहीं ज्योतिष में ऐसा संकेत तो देते हैं बाबा कि एक विशेष ग्रह के प्रभाव के कारण इसकी मानसिकता के झुकाव का जो ज्यादा दबाव है ये इस दिशा में है, मानो क्रोध की दिशा में, काम की दिशा में, लालच की दिशा में जाएगा या ज्ञान की तरफ जाएगा, विद्या अध्ययन की तरफ जाएगा, इतना तो लोग बताते हैं पर उसके बाद फिर उसके बाद वाली घटना को आप बता रहे हैं।

उत्तर : ठीक है, हम इसमें नहीं कह रहे हैं, ये सब हम नहीं बताते हैं नहीं कह रहे हैं। अभी हमको ये ही पता नहीं है विद्या क्या है, अध्ययन क्या है, ज्ञान क्या है, ये सब भाषा को हम प्रयोग कर डाले हैं। माने अपन खोखले कहाँ हैं, हमको खुद को पता नहीं है ज्ञान क्या है, विद्या क्या है ये पता नहीं है, हम इस ओर अपन prediction करते हैं। अच्छा इसी को पहचानने की जरूरत है, क्या चीज़ कम होने से परंपरा में इस प्रकार की करतूत होने लगी। उसके बारे में हम बताया अभी वस्तु के बारे में बताया आदमी को समझदार हो करके जीने पर हर जगह में काफी अच्छे ढंग से जी सकता है। उसी प्रकार अपन कोई common rod, हर जगह में कोई common rod को, common field को पहचानने की आवश्यकता है। उसको पहचाने बिना आदमी आदमी में एकता को पहचानना बहुत मुश्किल है। एकता पहचानते नहीं हैं तो फिर बाद में ज्योतिष क्या है? कोई एकता का सूत्र मनुष्य में हो, उसके आधार पर सारा ज्योतिष को launch कराया जाए, काम करेगा, हमारा सोचना ऐसा है।

प्रश्न : एकता के सूत्र से आपका क्या आशय है?

उत्तर : एकता का सूत्र का मतलब ये है बाबा, प्रत्येक इकाई अपने त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, एकता की सूत्र यहाँ इस ढ़ंग से आता है।

15. पूर्णिमा - अमावस्या का प्रभाव

विडिओ संदर्भ देखें: *video 14, time 29:10-44:00*

प्रश्न : जो ज्ञान हुआ है लोगों को ऐसा माना जाता है पूर्णिमा के दिन ही हुआ है, तो आपके साथ भी ऐसा संयोग हुआ है। इसका क्या मतलब है, क्या कारण है ?

उत्तर : कोई ना कोई दिन तो ज्ञान होना ही है, यदि ज्ञान होता है। पूर्णिमा के दिन ज्ञान हुआ को हम बहुत कुछ आँकलित कर लिए है,या अमावस्या, कुछ भी हो सकता है। हम समझते हैं पूर्णिमा के दिन ज्ञान हुआ बहुत सारे लोगों को, जैसा कि दत्तात्रेय जी के बारे में बात करते हैं, ठीक है ना। अष्टमी के दिन बहुत सारे दुष्टों का संहार हुआ, ऐसा भी बताते हैं। ये सभी बातों पर हम सोचने पर हमको कोई तकलीफ नहीं है। आज आदमी के लिए कैसा ज्योतिषी को launch कराया जाए। ज्योतिषी के हर पहलुओं से, मानव को राहत मिलने वाली स्थिति को, उसका विरोध को शमन करने वाली विधि को, प्राप्त करने के लिए कैसा सोचा जाए, ऐसा हमारा सूझ बूझ है। उसमे क्या हो गया, हम इसमे समय इसलिए नहीं दे पा रहा हूँ, हम इसमे अच्छी तरह से फस गया हूँ। देखते नहीं हो, ये सब राहु-केतू जो है पकड़े,बत्तिशी बाहर करे, यही सोचते है।

प्रश्न : बाबाजी हमारे जो राहु-केतु फसे हुए हैं, वो कैसे बाहर निकलेंगें?

उत्तर : उसके लिए हमारे पास दवाई है। प्यार से समझदार हो जाओ, सब राहुकेतू सीधा हो जाएंगे।

प्रश्न : ये बात तो स्पष्ट होती है कि पूर्णिमा और अमावास्या को जो भी मानसिकता, जिस व्यक्ति की रहती है, उछाल खाएगा, जिस आदमी को गलत मानसिकता है, पागलपन के तरफ चला गया। जिस आदमी को सही मानसिकता है, ज्ञान के तरफ चला गया।

उत्तर : ऐसा भी एक आँकलन बनाया जा सकता है।

प्रश्न : तो इस तरह की अवसरों का यदि सुस्पष्ट अध्ययन हमारे पास हैं, तो जागृति में सहायक हो सकता हैं।

वोही मानव मे introduce करने की बात है। उस अर्थ में उसका वस्तु के रूप में क्या स्पष्टता हैं, ऐसा उसका आशय है अब आप उसको specific करने की बजाय generalize कर देते हैं। (तो generalize ना हो?) generalize हो लेकिन उसका कारण बताइये?

उत्तर : मान लेते है। अन्ततोगत्वा आदमी समझदर होना ही पडेगा ना। आप ये मानो जो, ज्ञानी ही ना होना है, सभी ज्ञानी ही तो होना है? ज्ञानी होने को generalize किया जाए। क्या बुरा है इसमे? हर आदमी पूर्णिमा के दिन ज्ञानी होता रहे, आप को क्या तकलीफ है, मुझको क्या तकलीफ है! आप बताओ अभी अपन पागल होना नहीं चाहते हैं, बात सही है ना? ज्ञानी होना चाहते हैं, बात ठीक है ना? अब ज्ञानी होने के लिए कार्यक्रम को generalize किया जाए।

प्रश्न : बाबा specific question इसमे ये बनाता है कि अमावस्या और पूर्णिमा के दिन मानसिकता उछाल खाती है उसका कारण क्या है?

उत्तर : उछाल खाने का कारण यही है पहले से उसका foundation बना रहता है 15 दिन। (15 दिन क्यों 16 दिन भी हो सकता है बाबा?) ठीक है 16 दिन मे भी हो सकता है मान लेते हैं, आस पास ये भी कह रहे हैं महाराज, हम उसको उसको नहीं कह रहे हैं actuality, वो meredian line बना नहीं रहे हैं।

प्रश्न : जैसा ज्वार भाटा धरती के कंपनात्मक गति के कारण होता है, क्या धरती की कंपनात्मक गति मानव में किस तरह से प्रभावित हो रही है, क्योंकि मानव में कंपनात्मक गति जो जीवन परमाणु में है, धरती की कंपनात्मक गति और मानव की कंपनात्मक गति का कोई link है क्या?

उत्तर : वो link की बारे मे अस्तित्व में सम्पूर्णता से एक और, एक से सम्पूर्ण जुड़ा ही है। इस ढंग की इसका संबंध बना हुआ है। (सभी एक दूसरे को प्रभावित कर रहे है।) एक दूसरे को प्रभावित ना करें, ऐसा होता ही नहीं है।

प्रश्न : इसीलिए पृथ्वी का जो विशेष कंपन है, मानव के कंपन को प्रभावित करता है?

उत्तर : करता ही होगा। क्या आपत्ति हुई? जब तक आदमी शरीर को जीवन समझता रहता है, तब तक जीवन प्रभावित होता रहता है। जब जीवन ज्ञान हो जाता है, शरीर प्रभावित रहता है जीवन प्रभावित नहीं रहता है। बात इतनी ही है।

प्रश्न : तो जो बाबा ये जितनी भी घटनाएँ हुए और जिसके साथ भी हुए जब मानव जीवन को शरीर मान रहा होता है?

उत्तर : इतना ही बात है। इसीलिए (देखो बाबा ऐसा मानने के बाद एक बहोत बड़ा सवाल खड़ा होता है कि ज्ञान के संदर्भ मे शरीर को तो कोई ज्ञान होगा नहीं, जीवन को ही जीवन ज्ञान होता है) ऐसी ही मान्यता है। (तो सर्वोच्च अवस्था मे जीवन में तिथि का नियम उसके ऊपर लागू हो रहा है, मतलब वो तिथि वाला जैसे पूर्णिमा की तिथि को ज्ञान होता है। शरीर भाव को लँघ के जीवन भाव मे चला गया वो सर्वोछ स्थिति हो गई।) ठीक है, सवाल के बारे मे देखो बाबा, ज्ञान तो कोई ना कोई दिन समाधि होना ही है। समाधि को ही हम ज्ञान कहेंगें। कोई ना कोई एक दिन को हम समाधी का दिन कहते हैं। तो उसके पीछे ये भी लगा रहता है, जैसा अपन छपवाते हैं, 14 जनवरी शरद पूर्णिमा और कोई ऐसा तिथि देते हैं, उसके पीछे में क्या चीज़ है? इसको मंगलमय दिन हम स्वीकारे रहते हैं। ये भी इसके पीछे continue कर रहा है, run कर रहा है। ये भी norm जो है काम कर ही रहा है। और घटना भी होती ही है। ये तो हमारा भी सोचना ऐसा है, पूर्णिमा के दिन आदमी ज्यादा प्रसन्न होने का तिथि बनाता है।

अच्छा मेरा भी अनुभव ऐसा ही है, जो इसके पहले जो कविताएँ ज्यादा से ज्यादा लिखा है, पूर्णिमा का दिन बहुत ज़्यादा कविताएँ लिखा है। ये भी बात आता है। ये सब जो है ना मनुष्य की खिलने की कारण है। वो उसका कारण में यही है, वो सुखद प्रकाशी हो सकता है, इसके इलावा कुछ हो नहीं सकती। और कोई चीज़ हमको मिल रहा है, ऐसा हमको नहीं लगता। इसको आँकलित करना, ध्रुविकरण करना, यही दिन ज्ञान होता है उसको पता लगाना, वो

random program नहीं है, ये detail program है। अभी तक हम सोचते हैं ऐसा ठीक है। उसमे हमको कोई हस्तक्षेप नहीं है। इसकी जो है ना, इस प्रकार की सोचते हैं, पागल होने की भाग है, वो आप हम को स्वीकार नहीं है और ज्ञानी होने कि रास्ता को wind-up किया जाए।

(ज्ञानी होने के लिए जितना करना चाहिए वो तो अपनी-अपनी समझदारी कि स्थिति से कर ही रहे हैं, उसमे कोई दो मत नहीं है। इन चीज़ो का यदि सहयोग मिल जाए?)

मिल जाए क्या होता है? सहयोग मिलता ही है बता रहे हैं। पुनः वोही बात, उसके लिए भैंस बाँधोगे, बकरी बाँधोगे, वो तो पूर्णिमा होता ही है, अमावस्या होता ही है।

(बाबा कोई मणि पहन लें ?)

हमारे अनुसार कोई मणि का प्रभाव नहीं है।

(बाबा आप पूरे रत्न विद्या को धो देंगे बाबा, ज्योतिषियों का क्या होगा?)

बताइए महाराज जी, हो तब ना भई! तो हम साधना करते रहे, ठीक है? वो एक रत्न व्यापारी आया Bangalore से, संयोग से हमारे पिताजी के मित्र निकल गया। अच्छा, उसका एक रत्न, माने हीरा, 6 महीना पहले गुम गया था, ठीक है? तो वो आया जब हमको रत्न दिखाने के लिए, अपना पेटी खोला, उसी पेटी में एक कोने में चपका रहा, वो मणि। वो उसको मिल गया, बेहद खुश हो गया - यहाँ आ गए मणि मिल गया, आपको बता रहे हैं, इसमें हमारा क्या चीज़ है? यदि वो आदमी गाता है, उनका बुद्धिहीनता के अलावा क्या चीज़ हो गया इसमे?

(वो तो परिणाम के आधार पर गाता है बाबा)

(उन्ही का चीज़ उनको मिलना, उसी दिन क्यों मिला, दो दिन पहले मिल जाता?)

ठीक है ना दद्दा, किन्तु उस दिन मिलने से क्या तकलीफ हो गया? (खुशहाली हो गई, आपके संगत मे आने से खुशहाली हो गई) उस दिन उन्होंने सभी रत्नों का दर्शन कराया। हम स्वप्न मे भी नहीं सोचते रहे सभी मणियों को ला करके, अमरकंटक में आ करके हमारे पास बैठ करके।

(बाबा एक सूत्र है पतंजलि ज्ञानसूत्र) हाँ वो लिखा है ना "आस्थेय प्रतिशठायणं, सर्व रत्न प्रस्थानम"। (उसी दिन हो गई) बस बस बढ़िया हो गई। (इसका आशय क्या है, तो जो व्यक्ति चोरी नहीं करता है, उसके सामने सभी रत्न उपस्थित हो जाते हैं) छप्पर फाड़ के, उसका ये उदाहरण है। वो एक दिन रहा, दो दिन रहा हमारे साथ, थोड़ा सा हमारा साधना इसके बारे में सत्संग होता रहा। तो वो जा करके हमारे साधना में मदद हो, ऐसा रत्नों को भेजा, एक अंगूठी बना करके। चाँदी की अंगूठी मे एक नीलम रखा, एक पन्ना रखा, एक हीरा रखा - 3 मणि को एक जगह में करके एक अंगूठी बनवा करके भेजा। उन्होंने बोला था, इसको अमुक दिन पहन लेना। पहन लिया और दो दिन, तीन दिन हो गया, वो तीनों मणि, हम स्नान करते रहे कुंड में, उसमें वो गिर गया। तीनों, एक ही दिन, स्नान करत रहे,वो तीनों कुंड मे समा गए। तो हम घर आया, बताए, ठीक है, तो कैसे इस प्रकार से नर्मदा जी मे अर्पित हो गए। उसका

कल्याण हो,(भेजा हुआ आदमी) का कल्याण हो, ऐसा मैंने आशीष दिया। खतम हो गई बात। उसके बाद हमको कुछ लोग मंत्रणा देने लगे, पुनः लिखो उसको।

ये हमारा काम नहीं, वो जिस काम के लिए भेजा था वो काम पूरा हो गया, समाप्त हो गया, खतम हो गया। तो अब मणि के बारे मे हम क्या कर डालूँ? वो भेजा तो हम पहन नहीं पाए, थोड़े ही दिन मे वो निकल गया। अब मणि के बारे में असर हम क्या बताऊँ? अभी संसार में हम सुनते हैं, क्या सुनते हैं? वो पहना ये पहना, हमको वो हुआ, ये नहीं हुआ। कोई - कोई कहता है हमको कुछ नहीं हुआ, पहले जैसे ही है। कुछ लोग कहते भी रहे, इसको पहना, वहाँ जाते रहे, गाड़ी बड़ी slip हो गई बाल-बाल बच गए। ऐसा भी कहते हैं। ये सभी चीज़ सुनने में आता है, इसके लिए हम क्या कर डालूँ! क्या चीज़ को हम सही मानूँ भाई, जो मणि नहीं पहनते हैं वो भी बाल-बाल बचते हैं। ये सभी बाते संसार मे चल रही है। हम यदि निर्धारण सिद्धांत के रूप मे, प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपने को शायद इन सभी विधा में, बहुत सारा अपने को अर्पित करने की जरूरत है। परीक्षण निरीक्षण करने की आवश्यकता है, प्रयोग करने की आवश्यकता है, data निकालने की आवश्यकता है। ऐसा मेरा सोचना है।

तो इसी तहत मे अभी अंतिम परिणाम क्या हुआ प्रसंग आयी थी, अमावास्या पूर्णिमा के प्रकिया में, वो इनमें पागल होने वाला अपने को स्वीकार नहीं है, ज्ञानी होने वाला स्वीकार है। ज्ञानी होने के लिए सर्वाधिक लोगों के सामने क्या उपक्रम किया जाए, उसको चिंतन किया जाए, सोचा जाए, समझा जाए, उसमे अपने को लगाया जाए। यही सहायता हो सकता है। दूसरा क्या सहायता करे? आप ही के presentation के अनुसार हमको क्या करना चाहिए वो बात निकाल करके आई, ठीक है ना? ये आगे चलते हैं।

प्रश्न : बाबा pyramid के बारे में माना जाता है, उसमें बैठने पर शरीर स्वस्थ रहता है, संयम वाली प्रवृत्ति भी बनती है, एकाग्रता बढ़ता है?

उत्तर : फिर तो एक एक pyramid बनाया जाये, उसके अंदर बैठा दिया जाए। इसमें कुछ सही नहीं है। pyramid नहीं, क़ब्रिस्तान मे बैठ जाओ तो भी उतना हम सोचते रहते हैं उतना ही हाल। वो pyramid भी वोही क़ब्रिस्तान ही तो है। तो हमारा कहना है, मनुष्य अपने में जैसा रहता है, उससे ना तो कोई अधिक होता है, ना कम होता है। इसमें हो जाता है तो ज्ञान ही हो जाता सबको, एक-एक ठो क़ब्रिस्तान बनाओ, या नाहीं तो pyramid बनाओ, उसके अंदर बैठा दिया जाए, सब ज्ञानी हो जाए। क्या बुरा हुआ! ये सब हमारा परिकल्पना की हविस है महाराज जी।

16. मध्यस्थ दर्शन एवं चिकित्सा विज्ञान

विडिओ संदर्भ देखें: *video 3, time 1:04:34-1:15:18*

प्रश्न : प्रचलित जो चिकित्सा विज्ञान है और आप जिस तरह चिकित्सा विज्ञान को प्रस्तुत करते हैं, उसकी थोड़ी सी व्याख्या कर दीजिए।

उत्तर :जहाँ तक चिकित्सा विज्ञान शरीर ज्ञान की बात है, विज्ञानी शरीर को पहचाने होंगे, मेरे विचार से। मेधस तंत्र से लेकर फेफड़े तंत्र तक। ठीक है ना? फेंफड़े तंत्र से लेकर वृक्क तंत्र तक, जितने भी तंत्रणाएँ हैं, इन सभी तंत्रों को जैसा भी अभी पढ़ाते हैं शरीर के सम्बन्ध में, शरीर शास्त्र के सम्बन्ध में पढ़ाते हैं, संभव है उसको जीव शास्त्र भी मान लेते हैं या क्या-क्या तो कहते हैं, हम नहीं जानते हैं। उसको मनुष्य शास्त्र भी मानते होंगे एक जगह में, आपके अनुसार। आपके अनुसार माने, प्रचलित विज्ञान के अनुसार। मेरे अनुसार माने मध्यस्थ दर्शन के अनुसार। ऐसा अपन पहले से एक सुगम परिस्थिति को बना लेते हैं। उस आधार पर क्या होती है? प्राण कोशाओं में मनुष्य को खोजने की कार्यक्रम चल रही है। ये बात स्पष्ट किया आपने।ठीक है? वो जो हमारे अध्यात्मवादी थे, आत्मा परमात्मा को ले करके और जीवन को बताना चाहता रहा। वो भी fail हुए, ये भी fail हुए। वो जैसा fail हुए, उससे अच्छा ये fail हुए। ये जितने अच्छा fail हुए, उससे अच्छा वो fail हुए। दोनों का बराबरी है।

इसमें कोई ज्यादा बत्तीस से चौंतीस दांत हो गया, ऐसा नहीं है। बत्तीस है दोनों का। दोनों का बत्तीसी बाहर है। जीवन का व्याख्या ना तो अध्यात्म विधि से हो पायी, ना भौतिकवादी विधि से हो पायी। यही तो रिक्तता है, मेरे अनुसार। यदि कोई भी एक विधि से जीवन का व्याख्या हो जाती, जीवन का स्वरुप समझ में आ जाती, समझाने की विधि तैयार हो जाती, उसके बाद हम जहाँ, जिस दीन-हीन स्थिति में पहुँच रहे हैं, दुर्गति में पहुँच रहै हैं, अनिश्चित अनिष्ट[2] घटना के कवलित[3] होने की जगह में जा रहे हैं - यहाँ हम नहीं पहुँचते। इसके बदले में और ही कहीं पहुँचते। अभी हम पहुँच चुके हैं। ठीक है? तो उसका मूल ध्रुव क्या है? धरती बीमार होना। धरती बीमार होने के बाद आप क्या कर लोगे? विज्ञान क्या करेगा, ज्ञानी क्या करेगा, मध्यस्थ दर्शन क्या करेगा? ठीक है? धरती बीमार होने के बाद कौन repairing करेगा? इतना आसान game नहीं है। हाँ, ये मध्यस्थ दर्शन इस बात का तो अपना दावा ले करके खड़ा है, तो मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मनुष्य यदि अपने को व्याख्या कर लेता है, व्याख्या करने में समर्थ हो जाता है शिक्षा विधि से, उस स्थिति में जिस तरीके से, मानवीयता पूर्ण विधि से जीना बनता है, उसमें धरती को घायल करने वाला कार्य तो बंद हो जायेगी।ये बात की सच्चाई है।उतने की तो दवाई ले करके चला। और रह गया वो घायल हुआ भाग भरना - वो धरती भरेगी, उसको दर्शन तो भरेगा नहीं।

---

[2] अनिष्ट : अवांछित, अशुभ

[3] कवलित : खाया, चबाया, निगला हुआ, प्राप्त हुआ

प्रश्न : प्रचलित चिकित्सा विज्ञान काफ़ी हद तक शारीरगत समस्याओं का निराकरण कर चुका है। इस संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन कहाँ fit बैठता है?

उत्तर : शरीर शरीर ही है, जीवन जीवन ही है, अस्तित्व अस्तिव ही है। ये तीन मुद्दा समझ में आता है? इस तीनों के बीच में है – विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम,जागृति। कितना मुद्दा हुआ?अस्तित्व है ही, उसको आप नहीं बनाओगे, मैं नहीं बनाऊँगा, हमारा दर्शन नहीं बनाएगा। दर्शन वोही है जो है, उसका हम दर्शन किया है। जो नहीं है, उसका हमने दर्शन नहीं किया है। ठीक हो गया? जो नहीं है उसको आपका दर्शन बताता है, भौतिक दर्शन। ठीक है? आप बोलते हो नहीं था, उसको हम करते हैं। हम कहते हैं – जो थी, उसी को हम करते हैं। दोनों में अंतर इतने ही है। नहीं है, उसको आप कर ही नहीं सकते। ना हम कर सकते हैं। कितना एक ताल ठोको कार्यक्रम है ये? सोचने की बात है कि नहीं है? तो इसमें जो है आगे चल करके आपको जब जरुरत होगी, तब हम सोचेंगे। अभी जहाँ तक शरीर ज्ञान के बारे में हमारा सहमति यही है, अभी तक, शरीर को विज्ञानी भी काफी अच्छी ढंग से समझे। इसमें कोई शंका नहीं। इसके पहले, विज्ञान के पहले जो आयुर्वेदविद्, जो शरीर को समझे थे, उससे भी सुस्पष्ट रूप में कई चीज़ को समझे हैं।

इसमें हमारा सहमति है। ठीक है? जहाँ तक machine से और समझ में आता है, वो सभी चीज़ समझे हैं। ठीक है? Machine से जो समझ में नहीं आता है, उसको ये समझते नहीं हैं। ठीक बात हो गई? दूसरा बात ये है रोग के बारे मे ये बात है ये जो हम जो विश्लेषण करते है ,संश्लेषण करते हैं उसमें जो शरीर गत जो मैंने कोषाएं हैं उससे भिन्न जो मिलते कोषाएं मिलते है उसको आक्रामक संक्रामक कोषाएं मानते हैं उसको उन के भाषा में कहते हैं virus हर रोग का कोई virus होता है उसमें वो विश्वास रखते हैं। antibiotic का क्या मतलब होता है? प्राणकोशाओं का विरोधी, यही बनता है। उसके लिए हिन्दीकरण किया है प्राण रक्षक। ये अच्छे आदमियों का काम है कि नहीं है। मैं आपको एक sense बताया एक शब्द की तर्जुमा की बात किया। हम कितने अच्छे आदमी हैं? उसको प्राणरक्षक दवाई प्रयोग किया है, हिन्दी में। उसमे लिखे हैं प्राण नाशक दवाई, वो लिखा है, उसमे लिखा है जो, antibiotic का जो sense होता है, प्राणनाशक दवाई है। हम क्या कहते हैं प्राणरक्षक दवाई। दोनों कितना समीचीन है रे सोच लो, हम कितने अच्छे आदमी हैं? एक बात आपको इंगित करना चाहा।

इनके प्रयोंगों में देखी गई कि जो बैक्टीरिया मिलती है उसके उपर जो दवाइयाँ डालते हैं जिससे वो मर जाता है, उसको उस रोग के लिए recommend करते हैं। साथ में ये लिखे रहते हैं इसको ज़्यादा प्रयोग नहीं करना ज़्यादा प्रयोग करने से बहुत हानि पहुँचाता है। यह भी लिखे रहते हैं। होता क्या है,क्रिया क्या होता है भई ?ये जो प्राणनाशक कीट रहता है, माने जो स्वस्थ प्राणकोशाओं को हलाकान करने वाले सूत्र रहते हैं, एक को मारते तक में हज़ार स्वस्थ कोशाओं को भी मारा रहते है ये ही antibiotic। इसका प्रमाण कैसे मिलता है भाई, इसको हमने देखा– निमोनिया और दूसरा क्या है वो? Typhoid नाम का एक ज्वर होता है जिस में आंतो में ज्वर होता है, उसमे आंतों में छोटी–छोटी छाली हो जाती हैं उसके बाद ज्वर पैदा होता है वो दीर्घकालीन, ज़्यादा दिन रहने वाली ज्वर मानते हैं। उसके लिए अलग चिकित्साएँ लिखी हुई हैं। उसके लिए antibiotic प्रयोग किया जाता है। प्रयोग करने के बाद वो आदमी जो एक प्रकार से अधमरा जैसा ही होता है। ठीक हो गए? ये देखा गया। उसको हम आयुर्वेद औषधियों से भी चिकित्सा देते हैं। ठीक है? जबकि रोग का तो कहीं ना कहीं एकदम स्वस्थ जैसा तो होता नहीं है, किन्तु उससे बहुत

ज्यादा स्वस्थ दिखते हैं। इसको हम लोगों ने बीस जगह में प्रयोग करके देखा है। इसको क्या करोगे? क्या है वो? ये भी ऐसा नहीं है कि patent और तुम नहीं जानते हो, property right – ये सब चीज़ कुछ भी नहीं है उसमें। साधारण रूप में जो चीज़ें हैं, जो उसका कषाय बनाते हैं। कषाय बना करके, उसी के अन्दर गुड़ को डाल करके वो कषाय को पिलाते रहते हैं केवल। पिलाते पिलाते पिलाते 20 बार पिलाते तक में एक शौच होता है, उसके बाद ज्वर उतर जाता है। वो काढ़ा को पिलाते रहते हैं 3 दिन तक। उस बीच में पथ्य परहेज बताते हैं, वो ठीक हो जाता है। इसको क्या किया जाए? मुकदमा चलाया जाए?

प्रश्नः तो बाबा इससे ये समझ मे आया की शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए वर्तमान में आयुर्वेदिक system ज्यादा अच्छा है, जैसे एलोपैथी है या होम्योपैथी है इनके comparison में?

उत्तर : हमारा कहना ये है – हम यदि ऐसा conclusion निकाल लिए हैं, तब तो उसके अलग talks होते हैं। तो कैसे शरीर को भावी रोगों, भविष्य में होने वाले रोगों से बचाया जा सकता है – एक विधि वो बनता है। रोग आ ही गया है, उसको तत्काल कैसे शमन किया जाए, रोग असाध्य रूप धारण कर लिया जाए, उस स्थिति में हमको क्या –क्या करना चाहिए। उस ढंग से तीन चरण में इसके बारे में एक अच्छी पैठ पैदा किया जा सकता है। ठीक है? और इसके लिए अलग से ही एक meeting होगा आप हमारे बीच में, इसको फैसला किया जा सकता है। ठीक है ये?

17. Darwin का विकासवाद

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 17:28-22:40*

प्रश्न : Darwin का विकास वाद?

उत्तर : Darwin का विकास पूरा का पूरा शरीर से संबंधित है। शरीर को वो विकास मानते हैं। शरीर को ही यदि विकास मानते हैं, अच्छा रचना तक यदि उसको सीमित रखा जाए, वहाँ तक तो ठीक है। उसी में मानव यही है, ये कहने जाते हैं, ये तो भ्रमित परंपरा की ही काम है। शरीर को जीवन मानने की क्रम में ही है ये। अभी तक आदमी जात शरीर को ही जीवन मान करके तो चल ही रहा है। जीवन ज्ञान से इसका परिहार्य है। जीवन ज्ञान के बाद ही शरीर और जीवन का निश्चित कार्य, नियत कार्य, नियति क्रम कार्य अपने को बोध हो पाता है। उसके पहले तो होने वाला नहीं है ये।

प्रश्न : ये जो माना जाता है, मनुष्य बंदर से पैदा हुआ है?

उत्तर : इसके बारे में ये सोचा जा सकता है, ये बात सही है, ये बात को सही ढंग से सोच जा सकता है। प्राणकोषाओं में प्राणसूत्र में जो रचना विधियाँ बदलती आती हैं, स्वयं स्फूर्त विधि से, रासायनिक उर्मि के आधार पर, उसी आधार पर मनुष्य रचना का भी उभर के आ गया। उसमें ये ज़िद करना बेकार है, बंदर की पेट से ही आदमी आया। बंदर ही परिवर्तित हो करके आदमी बन गया। दो प्रकार की सूझबूझ है ये। बंदर के पेट से आदमी पैदा हुआ, दूसरा बंदर ही बदल बदल करके धीरे धीरे आदमी हो गया। ये दो प्रकार की सूझ है। तो इसमें बंदर की पेट से आदमी आया वो ज्यादा युक्ति संगत है। क्योंकि रचना विधि जब बदलती है, भिन्न प्रकार की रचना होती ही है।

क्योंकि इतना लाखों प्रकार की प्रजातियाँ रचना विधि बदल करके तो रचना हुई है। उसी क्रम में मानव शरीर रचना भी चाहे गाय का पेट में हो, चाहे मछली की पेट में हो, चाहे सिंह के पेट में हो, चाहे बंदर के पेट में हो, किसी ना किसी जानवर का पेट से ही मानव प्रजाति शुरूआत किया है। ये इसको मान सकते हैं, इसमे किसी को कोई तकलीफ भी नहीं है। वो प्रजाति होने के बाद उस प्रजाति का परंपरा होना शुरू हो जाता है। जैसा एक प्रजाति की धान आदमी ने प्राप्त कर लिया, दूसरा प्रजाति का धान प्राप्त कर लिया, वो परंपरा बन गया है कि नहीं है? इसी भांति मानव भी अपने प्रजाति में एक परंपरा बनने की पहले, किसी ना किसी जीव जानवरों के पेट से, ये इस प्रजाति की शरीर रचना हो चुकी। उसके बाद ये अपने स्वतंत्र परंपरा बनते आए।

प्रश्न : बाबा अभी जैसे कहते हैं कि बंदर की एक प्रजाति हुई जिन्होंने अपने पूँछ का उपयोग नहीं किया, तो अगले पीढ़ी में पूँछ और छोटी हो गई, उससे अगली पीढ़ी में और छोटी हो गई। इस प्रकार से कई पीढ़ी में पूँछ बंद हो गई?

उत्तर : वोही तो बातया ना, बंदर धीरे-धीरे आदमी हुआ, उसको बताने की क्रम में है ये। तर्क से तो कुछ लाभ होता नहीं है, किन्तु मानव का अवतरण हुआ है ये सच्चाई है। मानव प्रजाति की शरीर रचना का एक प्रजनन विधि बन चुकी है, ये भी पता है। ये भी पता है गर्भाशय में ही मानव शरीर रचना का भी संभावना और तरीका बनी हुई है। यहाँ

तक सर्व मानव को विदित है। तो ये जो परंपरा बनने के बाद, पीछे जहाँ से शुरुआत होता है, जैसा कुम्हड़ा से तोरई पैदा हुआ, तोरई से कुम्हड़ा पैदा हुआ, इस प्रकार की हम तर्क में जाते है। उससे फायदा होता नहीं, ये बात सही है, एक के बाद एक हुआ है। इतने को स्वीकारने मात्र से ही, अपने को शुरुआत का जो एक कौतूहल होता है, उसका उत्तर पूरा हो जाता है।

प्रश्न : जीवन के प्रकाशन के क्रम में शरीर रचना है, धीरे-धीरे जीवन के प्रकाशन के आवश्यकता अनुसार धीरे-धीरे बदल के इस shape में आया, ऐसा कहना ज्यादा तर्कसंगत लगता है।

उत्तर : जीवन ही तो आवश्यकता को भोगता है, आवश्यकता जीव शरीर से ही शुरू हुई। अनेक जीव शरीर कैसा बना है? आवश्यकता के आधार पर तो हुआ ही है। अनेक प्रजाति की जीव शरीरें बन चुकी, उसमें जीवन की तृप्ति हो नहीं पाया और मनुष्य शरीर रचना हो चुकी, इसमें तृप्ति की स्थली को खोजता आया है, अभी तक पाया नहीं है, बात इतना ही है। उसको पाने की काम में अपन काम करें, वो ज्यादा लाभदायी है।

18. देसी गाय और संकर गाय

विडिओ संदर्भ देखें: *video 15, time 21:45-30:51*

प्रश्न : जीवावास्था से संबंधित कुछ जिज्ञासाएँ हैं, उसमें से देशी गाय, जर्सी गाय, का तुलनात्मक अध्ययन विस्तार से समझाइये?

उत्तर : ये संकर प्रणाली और स्वाभाविक रूप में वंश की बात है ये। किसी जीवों के साथ, अन्य जीवों को लेकर, संकरता को उत्पन्न करने की विधि से, जर्सी गाय के बारे में अभी सोचा जा रहा है, सोचा गया और जर्सी गाय को तैयार भी किया गया, तैयार करके लोगों को दिए भी हैं, किन्तु संकर जाति में ये देखा गया, वंश स्थिर नहीं हो पाता है। संकर तो कर देते हैं, किन्तु संकरता की स्थिरता अस्तित्व में नहीं होता है। शनैः-शनैः संकरता का क्षरण होते होते, वो पुनः जहाँ पहुँचना था, पहले किया था स्थिति था या उससे बदतर स्थिति है, वहाँ पहुँच करके अन्त हो जाता है। ये संकर प्रणाली स्वयं मनुष्य का एक अपराधिक मानसिकता है। संकर प्रणाली का सोच मानव परंपरा के लिए एक आपराधिक मानसिकता का द्योतक है। अपराध को सोचे बिना संकरता को सोचा नहीं जा सकता। इसको बारम्बार ये प्रकृति इस प्रकार से बताया है, संकरता तब तक वास्तविक नहीं हो सकता, वास्तविकता के सूत्र से जुड़ा हुआ संकरता ना हो। उसी को उन्नत माना जाए।

वंश का उन्नति या बीज का उन्नति तभी माना जाए, जब तक वो वंश और बीज परंपरा ना बन जाए। परंपरा जब तक नहीं बन सकती है, तब तक वो अपने आप में क्षरण होना पाया जाता है। अर्थात प्रकृति के लिए अस्विकृत होने का विधि ये स्पष्ट होती है। प्रकृति जब अस्वीकार करता है, उसको हम प्रस्तुत करते हैं, हम न्यायिक कब हुए? प्रकृति विरोधी जितने भी हम सुझबूझ तैयार करते हैं, अपने अनुसार बहुत बड़े भारी तीर मारे, ऐसे ही ना सोचते हैं, किन्तु वो तीरमारी कहाँ पहुँचा? वो क्या प्रकृति स्वीकारी? नहीं स्वीकारता है तो हम कहाँ न्यायिक हुए? न्यायिक नहीं हुए तो हम कहाँ, समाज के लिए, मानव के लिए उपयोगी कब बने? माने प्रकृति विरोधी हो करके हम मानव का उपकार करते हैं, ऐसा सोच के बहुत कुछ काम कर गए। इसीलिए प्रकृति के साथ अपराध करना, ये भी घोषणा करना, झूठी घोषणाएँ, हम मानव का उपकार कर रहे हैं। अभागा मानव ये भी सोचता रहा, बहुत सारा, ये बड़ा उपकार हो रहा है, जर्सी गाय आने से कई लोग ऐसा सोचे अवश्य हैं, ये बड़ा उपकार हुआ, ऐसा भी सोच गया, जबकी प्रकृति विरोधी है।

प्रश्न : प्रकृति विरोधी का आधार कैसे स्पष्ट होता है?

उत्तर : प्रकृति कहाँ स्वीकारा संकरता को? वंश परंपरा स्थिर नहीं हुआ। वंश परंपरा जब स्थिर नहीं होता है, तो प्रकृति कहाँ स्वीकारता है? बीज का परंपरा यदि स्वीकार नहीं होता है तो उन्नत बीज होने का कहाँ प्रमाण है? बीज को हम डालते हैं, और उससे जो दाना होता है, वो बीजा नहीं बनता है तो प्रकृति कहाँ स्वीकारा है। जो संकरता को हम तैयार करते हैं क्योंकि हम ज्ञानवस्था का इकाई हैं, अपराध भी कर सकते हैं, न्याय भी कर सकते हैं, इस अवसर को हम दुरूपयोग करते हैं, ठीक है दुरूपयोग किया, वो प्रकृति स्वयं उसको लात मार के अलग करता है, उसके बाद

भी हम जूझे रहते हैं, हम कितना अपराधी हैं, एक सोचने की मुद्दा है। ये सोच सकते हैं? कितना भयंकर अपराध के लिए हम तुल गए हैं। ये भी साथ-साथ सोचा जाता है, अपराध से, अपराध विधि से, अपराध की सोच से, अपराध प्रवृति से, आदमी सुखी नहीं हो सकता। यद्यपि न्याय अभी आदमी की समझ में नहीं आया, ये भी सच्चाई है। मेंने इसको अच्छी तरह से आजमाया है, supreme court के जो प्रधान judges होते हैं, उनके साथ 3-3 लोगों से हम बात किये। supreme court को न्याय की पता नहीं। न्याय supreme court नहीं जानता है, किन्तु न्यायालय लिखा रहता है।

उच्च न्यायालय, उच्चतम न्यायालय, न्यायालय ऐसा लिखे रहते हैं। मैंने उनसे पूछा न्यायालय काहे को लिखते हो? बोले लिखने की क्या है? "शिव भोजनालय" शिव कहाँ रहता है वहाँ? ऐसा बोलते हैं वो। फिर मैं पूछा कि न्याय मूर्ति काहे को कहलाते हो? वो बोलेःहमारे यहाँ तो परंपरा है, दरिद्र आदमी का कुबेर नाम होता ही है, ऐसा वो बोलते हैं। तो ये नाम के पास आप मत जाइये, संबोधन के पास मत जाइये, supreme court में कोई न्याय का रूप रेखा हम यदि दावा करें, supreme court दावा करें कि हम न्याय जानता हूँ, नहीं, वो चीज़ नहीं, धरती में जितने भी supreme court हैं किसी के पास न्याय का स्वरूप नहीं है। इसके बावजूद न्याय विरोधी कार्य से आदमी सुखी नहीं हो सकता है, इसकी घंटी, घर-घर में, जन-जन में बजाई जाती है। इसीलिए प्रकृति विरोधी कार्य करके हम सफल होने की सोचना, एक शेखचिल्ली की बात है, ऐसे काम को करना नहीं चाहिए। ऐसा मेरा सोचना है।

प्रश्न : जर्सी गाय का वंश परंपरा स्थिर नहीं होने के कारण, उसका दूध पे क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : दूध के साथ ये कुप्रभाव पड़ता है, जब वंश ही स्थिर नहीं है, उनका रसों का संतुलन तो हो ही नहीं सकता, उस परंपरा का। रस ही जब संतुलित नहीं है, असंतुलित रस परंपरा में बनी हुई दूध से, आदमी कैसा ठीक होगा? यदि आदमी पीता भी है वो ठीक आदमी कैसा होगा? जितना इस प्रकार की असंतुलित, प्रकृति विरोधी रसों से यदि हम आदमी पलना चाहते हैं, उतना ही अपराधिक प्रवृत्ति में ही वो जाएगा, उससे कम तो होगा नहीं। जब कि अपराध अभी ठीक से अपने को समझ में नहीं आया है, क्योंकि अभी कितने भी अपराध संहिता लिखा गया है, जो प्रकार लिखा गया है, वो भी कभी-कभी ऐसा लगता है, ये पूरा लिखा नहीं गया है। नया-नया प्रकार के अपराध निकल जाते हैं। इस प्रकार से आदमी अपराध को शोध करने में और नया अपराध करने में प्रवृत्त हो सकता है, न्याय तो होना नहीं है।

इसीलिए प्रकृति सहज विधि से मानव का अवस्थिति इस धरती पर हुई है, संकर विधि से ये आया नहीं है। कैसा आया है? प्रकृति सहज विधि से इस धरती पर मानव का अवतरण है। जो प्रकृति विरोधी विधि से मानव का अवतरण नहीं है, प्रकृति विरोधी विधि से कोई भी द्रव्य को कोई भी वस्तु को मानव सेवन करेगा, अपराध करेगा की न्याय करेगा? न्याय की भले अभी पता नहीं है, आगे पता लग जाए, ये आशा तो है ही। उसके योग्य होने के लिए कहीं ना कहीं, प्रकृति सहज विधि से हमको चलने की आवश्यकता है। प्रकृति विरोधी विधि हमारे लिए कल्याणकारी नहीं है।

19. गाय का दूध और यांत्रिक शक्ति

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 00:00-01:21*

प्रश्न : मनुष्य गायों का दूध पीता है, तो इसमें कभी-कभी वो सुई लगा के ज्यादा दूध बढ़ाता है।

उत्तर : वो गलत है, वो गलत हो गया।

प्रश्न : और दूसरा वैसे भी गाय दुह लेते हैं, तो क्या वो गाय का शोषण करते है। मनुष्य जो दूध पीता है गाय का, गाय का शोषण करता है क्या?

उत्तर : वो बात को हमको अच्छी तरीके से समझने की बात है, अभी हम लोग जो समझते हैं, मैं स्वयं, गाय को हम जितना सेवा करते हैं, उसके प्रतिफलन में हम दूध पाते हैं, उससे ज्यादा मिलता नहीं। एक दूसरे तरफ से मानव संवेदना के साथ सोचने पर, गाय में जो दूध होता है, गाय की बच्चे के लिए होता है, ठीक है, तो हम जितना ज्यादा खुशामद करते हैं, उतना ज्यादा दूध होता है, तो यदि वो सारे दूध पीला दें बच्चे को, बच्चे मर जाते हैं। ठीक है। तो ये दोनो घटनाओं को देखा गया है। ये भी नहीं है, कि ये देखे नहीं हैं, ये सब हमारा देखी हुई बात है ये। उस स्थिति में हम क्या निर्णय लें? निर्णय लेने का यही निकलता है, हम जितना खुशामद करते हैं, उतना दूध लो, गाय की बच्चे का proportion बराबर बच्चे को ही दिया जाए, यही निर्णय लेना है। बच्चे मर गये उसके बाद जो दूध लेने वाली कार्यक्रम गलत।

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 01:21-06:06*

प्रश्न : टिकाऊ खेती की बात को ध्यान में रखते हुए tractor का उपयोग आज जिस तरह से अनिवार्य हो गया है, और यदि tractor का उपयोग करते हैं, तो बैल का क्या होगा, क्योंकि हमने गौशाला बनाई है?

उत्तर : ये भी एक consider करने की योग्य मुद्दा है, अच्छी तरह से सोचना चाहिए। हमारा देश में हम समझता हूँ, tractor की आवश्यकता बहुत कम है। हमारे पास इतने बड़े-बड़े जमीन ही नहीं है, छोटे-छोटे जमीन हो चुका है, कल एक लंगोटी जैसे जमीन हो जाएगी आदमी के पास। थोड़े ही वर्ष में, इतने-इतने जमीन रहेगा आदमी के पास, ऐसा हो जाएगी। tractor ही नहीं घूमेगा। आप देखते भी जाइएगा, ये सब वो दिन आने ही वाला है। तो इस विधि से हम सोचते हैं तो, बैल की chances ज्यादा है।

दूसरा ओर, ये यंत्र क्या गलत है या सही है, ये दूसरी बात है। यंत्रो को बनाना, वहीं से शुरू हुआ है, मनुष्य के ऊपर विश्वास घटने के बाद। मनुष्य काम नहीं करेगा, मनुष्य काम करने में अलाली करता है, इसीलिए यंत्र से काम लिया जाए, यही इसका मूल मंत्र है। ये समझ मे आता है? आता है? बस हो गया खतम हो गया, हम कितना अच्छा सोचे हैं। यही पूरा कर देता है, सारे न्याय का। यदि हम आदमी जात को समझदार बनाते हैं, उस स्थिति में कोई भी ऐसा

व्यक्ति बेवकूफ नहीं होगा, काम को चोरी करें। अभी कोई ऐसा आदमी नहीं है,100 मे सती को छोड़कर के, बाकी सब काम करने मे चोरी ही करता है। ये दोनों के अंतर क्या है? समझदार परंपरा और नासमझ परंपरा की इतना ही अंतर है। समझदार परंपरा में अपने काम करने के लिए दूसरे को बोलना नहीं पड़ता है, नासमझ परंपरा में बैल जैसा कोंचते रहा तबहु ना करें। हाँ, ये सब देखे गए है भाई। अब क्या किया जाय! अब आदमी नहीं काम करेगा, इसको स्वीकारते हुए यंत्रों को बनाया गया है। जोतने की काम भी वहीं से है, कातने की काम भी वहीं से है, बुनने की काम भी वहीं से है, अब घड़ा बनाने को भी मशीन बनाएगें ऐसा कहत रहे भाई, वहाँ polytechnic में, ऐसा नहीं कहते थे? घड़ा बनाने का मशीन बनाएंगे। ये सब ऐसा कहते ही हैं। अब steel का बर्तन बनाने का machine तो बहुत सारा बना ही चुके हैं।

अब क्या करोगे! आदमी करता ही नहीं तो क्या करते? व्यापार विधि से कोई चीज़ रुक नहीं सकता, production ज्यादा चाहिए। अब क्या हो गया, जो production ज्यादा होता है, आदमी कम करता है काम। ठीक है, production ज्यादा है, आदमी को सब चीज़ चाहिए, पहले चार चीज़ से आदमी जीता रहा, अभी 400 चीज़ चाहिए, आदमी काम नहीं करता है। इसमें परेशानियाँ होगा कि नहीं होगा भाई। ये आप स्वयं गणित लगा लीजिए। आदमी काम करना नहीं है, उत्पादन के साथ जुड़ना नहीं है, हाथ गंदा करना नहीं है, पैर गंदा करना नहीं है, और उसके बाद आवश्यकता जो है ना पहले 4 से हम जीते रहे 60 बरस पहले, आज के date में 400 चाहिए, अब क्या किया जाए? हम अच्छे ढंग से सोच कर के ये 400 चीज़ को ला पायेंगे, सही चीज़ सोच कर के क्या हम ये 400 चीज़ लायेंगें, गलत चीज़ सोचकर हम ला पायेंगे? सोच लीजिए आप। माने यंत्र वहाँ से शुरू हुआ है, मनुष्य से अविश्वास होने के बाद। शुरुवात ही वहाँ से है। अब युद्ध भी कहाँ से शुरू हुआ, मनुष्य के साथ मनुष्य का अविश्वास। मनुष्य के साथ, मनुष्य का विश्वास की दिन को पैदा ही नहीं कर पाए हैं, अभी तक, जंगल युग से आज तक, दुर्घटना, यहाँ है। ठीक है।

20. गोमूत्र औषधि

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 15:22-17:27*

प्रश्न : गोमूत्र गोबर से कुछ कीटनाशक बनाए गए हैं, आपकी जानकारी में इस तरह के जो चीज़ें हैं, उसको बता दीजिए?

उत्तर : गोमूत्र के साथ बहुत अच्छी बन सकता है वो। जो गंधक होता है, गंधक को गोमूत्र में घोल दो, 10 लीटर गोमूत्र में 10 ग्राम, 5 ग्राम गंधक को घोल करके यदि उसको डाला जाए बहुत सारे भुनगीं, कीड़े सब ठीक हो जाते हैं। सबसे अच्छा है गोमूत्र को फसल के लिए डालें पानी के साथ और गंधक का धुआँ दे करके कीट नाशक प्रयोगों को करते रहें, धुआँ से, धूम्र चिकित्सा। नीम का बीजा, खली, पत्ता ये सब चीज़ की धुआँ से काफ़ी कीड़ा, पतंग दूर भाग जाते हैं। उसको किया जा सकता है। जैसे वनतुलसी होता है, वनतुलसी का धुआँ से भी कीड़ा, पतंग दूर होते हैं। अजवाइन का धुएं से लत्तर जाति के जितने भी फसल नहीं हो पाते है, पत्ते सड़ जाता है, खीरा में, तरोई में, लौकी में, उसमें अजवाइन का धुआँ देने से लाभ होता है, ये सब देखा है। इसको कोई भी करके देख सकता है।

21. Cloning एवं संतान उत्पत्ति

विडिओ संदर्भ देखें: *video 16, time 06:06-15:22*

प्रश्न : Cloning प्रक्रिया क्या व्यवस्था से जुड़ा हुआ हैं या अव्यवस्था से?

उत्तर : अव्यवस्था से। एक तरफ हम हल्ला करते हैं, जनसंख्या बढ़ गया। ये आवाज़ हर दिन radio से, मध्यमों से सुनते है की नहीं? और उसके बाद cloning वाले क्या कहते हैं? अपना प्रतिरूप को हजार बना लो, करोड़ बना लो, पैसा भर दे दो। आप ही के जैसा आदमी को आपके 1 inch चमड़े से यदि एक करोड़ आदमी बना दें, उतना पैसा देना पड़ेगा, वो बना के दे देंगे, ऐसा दावा करते हैं। वो दावा कहाँ तक सही है, उसके बारे में ये था- पहले हमारा जैसा ही काम करने वाला होगा। अभी वो आप ही के जैसा काम करेगा। ऐसा कहना बंद कर दिया, किन्तु इससे हजार आदमी बनाएंगे, 10 हजार आदमी बनाएंगे, ये तो कहते हैं। यदि ऐसा बनने लग जाये, तो कहाँ रखोगे आदमी को? अभी ही रखने के लिए जगह नहीं है। अभी परम्परा में, एक दो पुश्त में, आदमी के पास गजिया भर की जमीन रह जाएगी, ये जगह में आ ही रहे हैं, अब ये हज़ार आदमी, यही आदमी, इनके पास में जो जमीन है, वो पैदा करके कितने में रखेगा? हमारे पास 2 एकड़ जमीन है, हम ही 1 करोड़ आदमी चाहते हैं, हम बना करके कहाँ रखें। ये अप्राकृतिक, मानवीय परंपरा के लिए अपराधिक है।

प्रश्न : मानव के clone की बात नहीं, जीवों के clone की बात करें तो?

उत्तर : जीवों का clone क्या है? मांसाहार करने के लिए clone, और किस बात के लिए clone? अपराध को छोड़ करके आप clone को शुरू ही नहीं कर सकते। आपके पास ऐसा कोई जुगाड़ नहीं है।बोल रहे है अभी संभावना की बात नहीं है , अभी clone की यहां तक सार्थक माना गया है, भ्रूण बना करके पुनः गर्भाशय में रख करके ही जानवरों का बच्चा प्राप्त किए हैं, ऐसा सुनते हैं। जैसा आपका ये tissue culture के अनुसार जो laboratory में छोटे-छोटे पौधे प्राप्त करते हैं, ऐसा बच्चों को पाने की जगह आना है cloning में। एक-एक डिबिया में एक-एक बच्चा, करोड़ डिबिया मे करोड़ बच्चा। कल्पना तो यही कर रखा है, इस विधि से कहाँ ले जा करके रखें सबको, क्या करें ? ये अप्राकृतिक सोच सब अंततोगत्वा शेखचिल्ली विधि है। स्वयं का काल, स्वयं का मृत्यु, स्वयं का परेशानी, स्वयं के गले को फांसी। इसके अलावा कुछ नहीं। अभी अप्राकृतिक खेती करके अपने

गले में फांसी हुआ कि नहीं हुआ? रसायन खाद डाल-डाल करके जमीन बंजर हुआ कि नहीं? ये सब चीज़ें हम अपने ही हाथ से, सम्मोहन विधि से, अपने ही स्वीकृति विधि से गले को फांसी लगा चुके हैं। इससे छूटना ही अभी बहुत कठिन है। उसके बाद ये नया फाँसी हैं, cloning वाला जो बात है, ज्यादा परेशानी मोल लेने की एक अच्छा जुगाड़ है।

प्रश्न : कोई मनुष्य यदि पुत्र से वंचित है, उसको कलंकित माना जाता है?

उत्तर : ये बात एक सोचने की तरीका है। कई जानवर संतान नहीं देते हैं, वो जानवर नहीं है, ऐसा नहीं कहते हैं। इसी प्रकार से मनुष्य को किसी के यदि संतान नहीं होता है, निश्चित कारणों से, वो मनुष्य नहीं हैं, ऐसा बात तो होता नहीं। पहला गुरु मंत्र तो यही है।

उसके बाद आता है, संतान का बहुत अपेक्षा है, समझ लो। संसार में बहुत सारा संतान ऐसा है, जो पाल नहीं पाते हैं, ऐसे को ला करके पाल लो। संतान आपका बना लो, खुशहाली मना लो। पहले भी दत्तक पुत्र दत्तक संतान के बारे में बात हुई है। उस विधि से अपने भाई, परिवार, किसी भी गोत्र से ला करके पाल सकते हैं। कुछ नहीं होता है तो बहुत सारा अस्पताल रखी हुए है, आवारा बच्चों को वहां रखे रहते हैं, वहां से ला ले और पाल लो। किसी से भी मन नहीं भरा तो ये क्या test tube baby program है। Test tube baby कार्यक्रम, मानवता के लिए बहुत सटीक उपयोगी तो नहीं है। उसमें भी कहीं ना कहीं प्रच्छन रूप में संकरता हो गया है मानते हैं। उसमें ये मानते हैं, नारियों में दोष नहीं रहता है, नर में ही दोष रहता है। उसको lab में देखने की व्यवस्था है, शुक्र कीट यदि जीवित कीट नहीं हैं, ऐसे जो परिवार है, उनके नारियों में कोई ना कोई विधि से इसको स्थापित करने का व्यवस्था करते है। वो भी एक संकरता की ही कार्यक्रम है। वो अवैध हो चुका है। छिपे चोरी में इस प्रकार की कार्यक्रम को करते है। उसमें बहुत पैसा पैदा करते हैं, एक आदमी का कम से कम एक-एक लाख रूपया खर्च करा देते हैं। सबसे अच्छा आलीशान वही है, यदि आपका मन भरता है, तो अपना जात,पाट,नात, गोत्र से कोई लड़के को ले लें, वो नहीं तो अस्पताल में आवारा बच्चें हर दिन मिलते हैं।

प्रश्न : अभी तो अव्यवस्था है इसलिए आवारा बच्चें मिल जाएंगे। जब व्यवस्था हो जाएगी तब तो आवारा बच्चें मिलेंगे नहीं?

उत्तर : व्यवस्था होने के उपरांत मनुष्य में ऐसा कोई अव्यवस्था का बात भी नही आता है। डिम्ब कीट अथवा शुक्र कीट विकृत होने, अथवा नहीं होने, मृत होने, इस प्रकार की जो प्रक्रिया होता है, मनुष्य की रहन सहन की कहीं ना कहीं गलतियां हैं। उसको अलग से अध्ययन किया जा सकता है, किन-किन कारणों से ये बात हो सकता है, आयुर्वेद में काफी चीजें कही गई हैं, इन लोग भी कहते होंगे,हम ऐसे ही विश्वास करता हूँ । उससे बचा जा सकता है, सही ढंग से जिया जा सकता है, इच्छा अनुसार संतान को पैदा किया जा सकता है। इच्छा नहीं तो सीमित संतान के साथ जिया जा सकता है, आवश्यकता पड़ने पर जनसंख्या को घटाया, बढ़ाया जा सकता है, ये सब आदमी की स्वतंत्रता का काम है। आदमी इस बात में स्वतंत्र है। इसमें भगवान देने की, नहीं देने की कोई परेशानी नहीं है, भगवान के पास इस प्रकार की कोई भी दफ्तर नहीं है।

22. टिकाऊ खेती

विडिओ संदर्भ देखें: *video 15, time 30:51-55:06*

संकर जीवों के बारे में बहुत ज्यादा व्यापार फंसा या नहीं फंसा हम नहीं जानते हैं, किन्तु संकर बीज तो बिल्कुल व्यापार के चुंगल में,नाखून में पकड़ में आ गई।संकर बीजों को करने में जो सफलता मिली है, इससे क्या हो गया ?देश की धरती की, किसानों के पास जितने भी बीज थी, वो सब गायब होने लगी। हर वर्ष दो-दो सौ, एक-एक सौ प्रकार की बीज गायब होते जा रहा है। कितना ? सौ-सौ, दो-दो सौ प्रकार के बीज किसानों के पास से समाप्त होता जा रहा है, पूरा देश धरती में। ये कुछ दिनों बाद किसानों के पास एक भी प्रकृति सहज बीज ही नहीं रहेगा, और उसके बाद समुद्र के उस पार से बीजा मँगवाइए, बीजा देना बंद हो गया आपका कृषि बंद हो गया। खतम हो गया। उसके बाद बचता क्या चीज़ है, सूअर बचता है मछली बचता है उसको खाइए। उसी को खाइए उसी को पालिए। उस जगह में आदमी जा रहा है।

ये कुल मिला करके मानव को व्यापार कितना अच्छे ढंग से धोखा कर सकता है, दगा कर सकता है, उसका एक बहुत अच्छी उदाहरण आ रहा है, धीरे-धीरे चलते-चलते। किसानों के दरवाजा तक तो आ चुकी है, दगाबाजी, धोखाबाजी ये किसानों के दरवाजा तक आ चुका, अब वो कितना देर में ग्रसित कर लेगा, 1 वर्ष, 2 वर्ष, 4 वर्ष, 10 वर्ष ये चल सकता है, किन्तु आ चुकी है। अच्छा इसके साथ ये भी सच्चाई है, इसको जागृत करने के लिए अपने पास सही तौर, तरीका भी अभी स्थापित नहीं हुई है। कोई सटीकता से इसमें जागृत कर सके, इसमें जागृति विधि से उनमें एक स्वावलम्बन की रास्ता मिल सके, उस प्रकार से जागृत करने का कोई तौर तरीका भी कभी स्थापित नहीं हुई है। आरोप, पत्यारोप तो चालू है, किन्तु आरोप, प्रत्यारोप से कोई फायदा नहीं है। वो सुविधा के वशीभूत हर किसान भी है, हर मजदूर भी है, हर विद्वान भी है, हर बेवकूफ भी है, हर नेता भी है, सभी कोई सुविधा के वशीभूत ही हैं।

वो सुविधा के वशीभूत होने का फलस्वरूप ये सारे बीज किसानों के हाथों से खसकती चली जा रही है। कई सैंकड़ों प्रकार की धान का किस्म हमारे देश से उठ चुकी, अब वो नहीं है। अभी कम से कम 60 वर्ष का तो हमारे पास ध्यान है, तो ये 60 वर्ष की पहले, हम जितना प्रकार की धानों को देखा था, हमारे आँखो में उसमें से कम से कम 60-70 प्रकार की तो हम जानता हूँ, वो धान अब नहीं हैं, वो अनाज अब नहीं हैं, वो बीज ही नहीं हैं। वो बीज को, कब कितने बरसों में, कितने प्रयासों में, कितने परिश्रम से आदमी प्राप्त किया था, इसको कौन आँकलित करने जाता है, इसको कौन इतिहास लिखने जाता है, कौन बताने जाता है, किसको उतना फुरसत है, किसके पास उतना साधन है जिससे कि हम ये सब कर दूँ। इस प्रकार के हम फंसे हैं, बुरी ढंग से फंसे तो हैं, इसमें 2 राय नहीं है। विज्ञान की नाम से, विज्ञान के प्रति समर्पण है,जो कुछ भी वो समर्पण के पीछे बड़ी दगाबाजी है, ये बात सच्चाई है। इसमें 2 राय नहीं। बाकि जो कितने दिन में सबका गला कटेगा या किसी एक का बचेगा सबका कटेगा, वो आगे भविष्य बताएगा, किन्तु दगाबाजी तो सही है। उसका असर होना 1 वर्ष में हो जाए, 4 वर्ष में हो जाए, 3 वर्ष में हो जाए, यदि हम चेतेंगे नहीं, इसको रोकने की अपने पास कोई माद्दा नहीं है, तब तो आहत होके ही रहेगा।

संकरता जो है, उन्नत बीज विधि भी, ये संकर विधि है, बीज में उन्नत बीज प्रक्रिया होता है। "बीज गुणन प्रक्रिया" बीजों में बहुत ज्यादा गुण परिवर्तन करने वाली प्रक्रिया है, वो भी एक संकरता ही है। जैसा टोमेटो को तैयार किया गया, संकर विधि तो है ही ये।

संकर विधि के लिए आपको बताया, इसमें जो रस होता है, प्राकृतिक रूप में सप्तधातुओं के रुप में परिणत होने के लिए प्रकृति जो प्रयुक्त किया है, जिसमें मानव शरीर रचना में, सातों धातुओं का, चौबीस प्रकार की रसों का जो नियोजन किया है, इन चौबीस प्रकार की रसों का जो एक प्राकृतिक स्वरूप, ये सप्त धातुओं को प्रमाणित करने में सार्थक रहे हैं। जिससे ये मानव का शरीर रचना, जो जीवन अपने जागृति को प्रमाणित करने योग्य बनाने में सार्थक रहा, अभी हम कुछ भी इसमें विकृति करते हैं, ये जागृति के लिए योग्य रहगा, नहीं रहेगा आगे अपन सोचने की बात है।और मानव के साथ भी कुछ ऐसे खिलवाड़ करने के बारे में जा रहे हैं।कल वो संकेत ठाकुर बात रहा था। कल ये स्पष्ट होगा,मानव जो है, वास्तविक, प्राकृतिक मानव के रूप में रहेगा या नहीं रहेगा।

अभी भी प्राकृतिक रूप में मानव, पशु मानव, राक्षस मानव के पद से बहुत ज्यादा विकसित तो हुआ नहीं है। अभी मानव, देवमानव, दिव्य मानव के रूप में विकसित होना, जागृत होना ही बाकी है, उसी के पहले ये पशु मानव, राक्षस मानव को ही और विकृत करने के लिए यदि कोशिश करते हैं, हम और पीछे जाने वाली बातें हो सकती हैं, आगे जाने वाली बात तो हो नहीं सकती।ये बात हम कहना चाहते है। इसमें हमारे अनुमान ऐसा है, संकर प्रकार से जितने भी बीज के बारे में सोचते हैं, या जीव जानवरों के बारे में सोचते हैं, इससे मानव को हानिप्रद स्थिति ही बनेगी, इससे मानव का कोई सहायता होगा नहीं। मानव मानसकिता के लिए, मानव स्वास्थ के लिए, मानव व्यवहार के लिए, मानव का सोच विचार, कार्य प्रणाली के लिए, ये कोई सहायक होने वाला नहीं, और भी हानि ही होगी। अभी पूरा मानव परंपरा जागृति के पद में पहुँचा ही नहीं है, उसी के पहले और अँगुली करना शुरू कर दिया।ये स्थिति आ गयी।

प्रश्न : वर्तमान परिपेक्ष में टिकाऊ खेती का स्वरूप क्या होगा?

उत्तर : वर्तमान परिपेक्ष में टिकाऊ खेती का आज का फॉर्मेट यही है, चौखट यही है, घर में कास्तकार के पास गौशाला हो, पहला कन्डिशन, दूसरा कोई विधि से कास्तकार टिक नहीं पाएगा। तो सर्वप्रथम गौ पालन, गौ पालन से 2 प्रकार की फायदा, घर में घी, दूध, मट्ठा, दही ये पूरा हो जाता है, दूसरा भाग गोबर, गौमूत्र से गोबर गैस पैदा करना, उससे इंधन व्यवस्था, चूल्हा-चौकी पूरा हो गया, तीसरा उससे कॉम्पोस्ट खाद तैयार करना, कॉम्पोस्ट खाद तैयार करके खेती को उर्वरक बनाना। जिसको छोड़ करके दूसरे विधि से, कोई विधि से किसान बचने वाला नहीं है, उजडेगा ही उजडेगा। दूसरा, सामान्य रूप में हर जगह में जो देशी बीजा है, उसको सुरक्षा करना। ये उन्नत बीजा के प्रति अपना विश्वाश को सर्वथा हटाना। लवलेश भी उस ओर नहीं जाना। तभी किसान अपने घर में अपना दाना-पानी खा करके अपने बच्चों को स्वस्थ देख पाएगा, नहीं तो बारह बाट होने ही वाला है। जो अभी तीन बाट हुआ होगा तो, चौदह बाट होगा ही। ये आने वाल ही दिन है ये, ये कहीं दूर नहीं है, ये पास आ चुकी है। तो इसका साधारण format यही है। इसी चौखट में यदि जी पाता है आदमी, किसान, वो किसानी सही है, वो परंपरा सही है। उनको

देख करके अनेक लोग सुखी हो सकते हैं, अनुकरण कर सकते हैं, अच्छे ढंग से जी सकते हैं। इसको छोड़ करके दूसरा उपाय अपनाया वो तो चले ही जाना है उसको मान लीजिए, उजड़ना ही उजड़ना है।

प्रश्न : उन्नत बीज बनाने के लिए एक संकर विधि अभी हम लोग देख रहे हैं वैज्ञानिक लोगों के द्वारा, तो क्या उन्नत बीज बनाने की और कोई दूसरी विधि है, जो परंपरा को स्थापित कर ले?

उत्तर : ये जो उन्नत बीज का मतलब क्या है- वाला बात है? ज्यादा पैदा होना एक तो भाग ये है, गुणवत्ता उसका बढ़िया होना, दो। तो में समझता हूँ, लोगों का सोचना ऐसा है, वास्तविकता क्या है? दोनों को कुछ सोचने की बात है। हम एक छोटा सा कृषि करते हैं, छोटा सा जगह में। देशी बीजा और गईया का खाद डाल करके हम दाना पैदा करते रहे हैं। यद्यपि हम छोटा सा जगह में करते रहे, हमारा आवश्यकता कम रहा, ये सब बातें हमारे साथ जुड़ी हुई बात सही है। इसके बावजूद हम देशी बीजा, देशी खाद घर का खाद डालकरके हम देशी बीज से एक एकड़ जमीन में 45 बोरा धान से 50 बोरा धान पैदा किए हैं। धान का हम वजन देखे हैं, जिस प्रकार के हम धान पैदा करते हैं। अभी भी हमारे पास वो बीजा है, हम हर वर्ष उसको डालते ही हैं। उस बीजा में, एक बोरा बीजा 80 किलो होता है। मैं समझता हूँ, धान में, उससे अच्छा कोई वजनदार धान कोई होगा नहीं। अभी हमारे सामने जितने भी हम धान देखें है, उससे अच्छा वजनदार नहीं है।

दाना के स्वरूप में छोटा सा छोटा दाना है, बहुत छोटा दाना। लम्बाई भी छोटा है, मोटाई भी छोटा है, उसको हम लोग "प्रेम कोदई" कहते हैं। कोदई जैसा दाना, इस प्रकार की दाना का नाम है। इस दाना को हम खेत में डालते हैं, और उससे पैदा होता है, उसको करते रहे। तो अभी 10-15 वर्ष पहले तक, हम करते रहे, उसके बाद हमारे बच्चे, पढ़े-लिखे आ गये, उसके बाद हम सोचा किं ये पढ़े-लिखे हैं भई, अब ये बुद्धिमान हो गये हैं ये करेंगे, पता चला 10 वर्ष करते तक में एक एकड़ में 5 बोरा धान गाहे (उगाए) गये। हमारा घर की बात हम कह रहे हैं, दुनिया की बात हम नहीं जानते हैं, हमारा घर की बात हम कह रहे हैं। 5 बोरा धान उसी खेत से गाहे गये। मेंने पूछा कि ये सब क्या हो गया, वो कीड़ा काट दिया, बैठ गया, धस गया, सड़ गया, गोल हो गया, ये हो गया, वो हो गया बोले, ठीक है, आगे वर्ष ठीक हो जाएगा।

आगे वर्ष किये, आगे वर्ष पुनः 4 ही बोरा हुआ। अब क्या हो गया, पुनः वो सब हमको वोही सब पुराण पंचांग बताते ही रहे, ये कब तक होगा? ये होते-होते थोड़े सा ज्यादा ही लगा कि ये ठीक होने वाला नहीं है,अभी हम लोग पुनः गत वर्ष से थोड़ी सी उस ओर ध्यान देना शुरू किया, गत वर्ष थोड़ा सा खाद ला करके डाले गये, गत वर्ष थोड़ा सा अच्छा हुआ था, 18-20 बोरा धान हुई थी। इस वर्ष किये हैं, अभी कहाँ पहुँचते हैं, देखेंगे, ये हमारा रोग-राटा कहो या रोना धोना कहो या खुशहाली कहो, कुछ भी कहो, हम स्वयं बैठे हैं आपके सम्मुख, हमारे ही घर गाँव की बात है। तो ये तो हो गई खाद, वो ही रसायन खाद, उन्नत बीज ये सब डाल करके अंततोगत्वा वो खेत अभी कितने दिन में वो ठीक होगा, पाक में आएगा, वो अपने स्वरूप में आएगा, हम तो अभी भी नहीं कह पा रहे हैं। अब इस वर्ष भी हम देशी खाद ही डाले हैं, गत वर्ष भी डाले थे। इस वर्ष फसल को देखते हैं, लगता है कि फसल देखने में तो ठीक लगता है, जब बीजा घर आएगा तभी न पता लगता है किसान को, उसके पहले अपने को क्या पता लगता है।

घर में आ गया वोही किसान का धन है, वो तब तक धन नहीं है, मेरे अनुसार, आप लोग कैसा सोचते हैं पता नहीं है। तो इस वर्ष भी ऐसा कर रहे हैं।

हम सोचते हैं, पढ–लिख करके, विज्ञान बहुत सही काम कर रहा है, ये सोच के चलें, ये माने एक प्रकार से भगवान सबकुछ करता है सोच करके हम सब बातों को भगवान को जोड़ते रहे, भगवान कुछ करता–वरता एक भी नहीं है। भगवान से हमारे बातचीत हो गई है। भगवान को कोई फुरसत नहीं है, किसी को मिटाने के लिए, किसी को बनाने के लिए, आप मानिये, उनके पास ऐसा कोई दफ्तर नहीं है इसको मिटाते रहो इसको बनाते रहो। भगवान ऐसा कोई बुद्धू भगवान कोई बैठा नहीं है अस्तित्व में।

परम उन्नत बीज वही है, जो आइ आर –36,32 जितने भी कहते हैं ना एक एकड़ में कभी भी मूड़ पटक के मर जाएं, 50 बोरा धान, अच्छे से अच्छे जमीन में, और रसायन खाद कुड़िया ले, उसके ऊपर जितना कीटनाशक दवाई है उड़ेल दे, 50 बोरा धान उगाने वाला इस छत्तीसगढ़ में एक भी आदमी नहीं मिलेगा, एक भी आदमी नहीं मिलेगा, उसको उन्नत बीज कहित हैं। हम जो पैदा करत हीं क्या उन्नत बीज नहीं है ये। ज्यादा उपराज की बात कहते हो, वो सऊर से कास्तकारी किया जाए ये जीतने भी हमारे पास धान हैं सभी उन्नत धान हैं, ये आपको याद दिलाना चाहेंगे। सभी प्रजाति की धान, ये उन्नत प्रजाति है। और इसको घटिया बना करके उन्नत के नाम से हम बेचते है। क्योंकि पैसे से लाते हो, इसीलिए उन्नत हो गया। घर में रहत है तो कोई उन्नत न होई, वैसे ही खाद गोबर हो गया।

प्रश्न :जैसे बासमती धान है, एक एकड़ में बहुत कम होता है, ''प्रेमकोदई'' बहुत ज्यादा होता है, ऐसा क्यों होता है?

उत्तर :वो बात थोड़ीसी और सोचने की बात है। देखिए ये सुगंधी वाला धान होता है जितने भी, ये इतना ज्यादा धान होगा नहीं। हम सुगंधित धानों में देशी धान, बासमती भी यहाँ के स्थानीय नहीं है यद्यपी देशी है, सबसे कम धान होने वाला जो प्रजाति देखा, बासमती धान कम से कम होता है, जैसा इस देश मे छत्तीसगढ़ में "काली मुछ" नाम की एक धान पैदा करते हैं, बहुत अच्छी धान कहलाता है, सुगंधित दाना, वहाँ जो विष्णुभोग नाम की पैदा करते हैं, छत्तीसगढ़ में एक और दुबराज, दुबराज धान का गंध तो चला गया, दुबराज नाम रह गया है,ठीक है ना। वो गंध तो मर गया पूरा का पूरा, अब दुबराज में गंध नहीं है। लोहंधी धान भी काफी अच्छा होता है। वो जो''प्रेमकोदई'' होता है उसके बराबर नहीं होता।30,40 बोरा के बराबर पैदा होता है।और एक होता है उसमे ज्यादा झरन देखते हैं ,ओ भी ऐसे ही 50 बोरा होता है। तो कहना ये है, हमारे पास जितना धान का बीजा है, वो सर्वोपरी उन्नत बीजा है। उससे ज्यादा उन्नत बीजा, ये 2000 वर्ष ये लेबोरेट्री में बरबाद करते रहें, तभी भी उससे ज्यादा उन्नत बीजा ये बना नहीं पायेंगे, 2000 वर्ष उन्नत बीजा बनाते जाओ, एक एकड़ में 50 बोरा धान पैदा करने वाला धान को ये दे नहीं पाएंगे। जब कभी कोई देखना चाहते हैं हम उपराज करके दिखा दूँगा, आप आओ हमारा घर नाप तोल के देख लो, हम किये हैं, अभी भी कर सकते हैं।ये बात ऐसी है। इसीलिए विश्वास ये रखना चाहिए, अपने घर गाँव में जो कुछ भी बीज है, यहाँ का वातावरण के लिए सर्वोपरी एक प्रकार से धरोहर हो गया है, यहाँ के लिए अनुकूल हो गया है, हमारे आपके लिए अनुकूल हुआ है, धरती के लिए अनुकूल हुआ है, हवा, पानी के लिए अनुकूल हुआ है, इससे अच्छा हाइब्रिड क्या होगा।

इससे ज्यादा उन्नत बीज क्या होगा? और यहाँ के हवा के लिए अनुकुल ना हो, जल के लिए अनुकूल ना हो, आदमी के लिए अनुकूल ना हो, उपराज के लिए अनुकूल ना हो, खाद के लिए अनुकूल ना हो, और कीट नाशक उपायों के लिए अनुकूल ना हो वो सब हाइब्रिड है।ले जाव पैसे दे आ लावा दरिद्र हो जावा इसके अलावा कछू होएगा नहीं यहाँ। ये कुल मिलाकरके कास्तकारों पर जो विज्ञान और व्यापार दोनों का संयुक्त गाज गिरा है, बात ऐसा है, इससे फायदा नहीं है। इस पर विश्वास रख करके हम कहीं पहुँचेगें नहीं, सिवाय परेशानी मोल लेने के।

प्रश्न : Tissue culture क्या है? प्राकृतिक है या नहीं?

उत्तर : देखो कल ओ बात हो गयी ठी संकेत ठाकुर से उनका जो है वास्तविक अंकुर को ले करके ही, वो अंकुरो को पैदा करते हैं। जैसे केले का, केले का मूल अंकुर से ही शुरू करते हैं वो। उससे यदि परंपरा यदि बनता है। परंपरा नहीं बनता है, तो वो ठीक नहीं हैं। Tissue culture से जो केले का पेड़ बनाया, उसमें से जो पीका आता है, वैसे ही केला वो देता है, तब तो ठीक है।

प्रश्न :इस तरीके से धनिया है उसकी सुगंध कम हो जाती है, उसका स्वाद खतम हो जाता है, इसका क्या कारण है?इसको क्या मानेंगे ?

उत्तर :इसका कारण ये है, धरती का जो एक स्वाभाविक गुण है, धरती में जो कुछ भी हरियाली पैदा होता है, उससे खाद होता है, उसको जीव जानवर खा कर भी खाद ही पैदा करते हैं, और वैसे भी यदि धरती में मिलता है, तो खाद ही होता है। धरती वो सब को पचाता हे, अभी भी अपन गईया का खाद गड्ढे में डालते हैं, वो पूरा का पूरा धरती ही उसको पचाता है, पचने के बाद हम खेत में डालते हैं. पौधे, उसको लेने के लिए बहुत अच्छी सुगम परिस्थिति बनी रहती है। अभी जो खाद आती है, उसमें अम्ल और क्षार दो प्रधान वस्तु होती है। वो शनैः-शनैः धरती में अम्लीयता को या क्षारियता को बढ़ाता चले जाता है। कोई ना कोई एक तो बढ़ेगा ही। आप उसको कुछ नहीं कर सकते। बढ़ने के बाद किसी तादात् तक बढ़ गया, उसके बाद वो ऊसर हो गया, ऊसर होने के बाद वो कहते है, एक फुट मिट्टी काट के बाहर करो, पुनः एक फुट ऊसर बनाओ, ऐसा विज्ञानिक कहते हैं।करो भाई ऐसा कहते देखा है लोगों को मारपीट होते हुए देखा है,गलीगलोच करते हुए देखा है,झगड़ा होते हुए देखा है।सभी प्रकार की प्रजातियो को हमने देखा है।ठीक है तो इसलिए मेरे अनुसार रासायनिक खाद में ये दोष छूटा हुआ कोई खाद होगा, ऐसा हम को पता नहीं है, यदि होगा तो उसको परीक्षण करने की बात है।ठीक है। अम्लीयता या क्षारियता दो में एक को धरती में बढ़ाएगा ही बढ़ाएगा। उसको आप-हम कहीं रोक नहीं पाएंगे।